राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 गौतम गंभीर के सपोर्ट में उतरे सौरव गांगुली.....

ट्रंप के आते ही बदले चीन के सुर ! जिनपिंग ने बाइडेन से की आखिरी मुलाकात.... 12

वर्ष : 12 | अंक : 213 | पटना, सोमवार, 18 नवंबर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31.0°C
न्यूनतम तापमान 21.0°C

बाजार

सोना 75,920

चांदी 91,900

सेंसेक्स 83,584

निफ्टी 25,698

संक्षिप्त खबरें

बद्रीनाथ मंदिर के कपाट आज होंगे शीतकाल के लिए बंद

बद्रीनाथ। पवित्र बद्रीनाथ मंदिर के कपाट रविवार रात 9:07 बजे शीतकाल के लिए बंद हो जाएंगे। इसके लिए विधि विधान मंत्र उच्चारण के साथ कपाट बंद करने की प्रक्रिया हुई शुरू हो गई है। शनिवार को 10,000 से अधिक भक्तों ने भगवान बद्री विशाल के दर्शन किए। इस दौरान कई प्रमुख अनुष्ठान हुए और सत्र के समापन के लिए सैकड़ों किलो प्रसाद तैयार किया गया। शुक्रवार, 15 नवंबर को, मंदिर के कपाट बंद करने की प्रक्रिया के तीसरे दिन, वैदिक मंत्रोच्चारण (वेद ऋचाओं) को विराम दिया गया। यह कदम मंदिर के शीतकालीन चरण में प्रवेश का संकेत था। इसके बाद वेद उपनिषदों को मंदिर के रावल (प्रधान पुजारी) और धर्माधिकारी को औपचारिक रूप से सौंपा गया। मंदिर बंद करने की एक सप्ताह लंबी प्रक्रिया 13 नवंबर से शुरू हुई, जब श्री गणेश मंदिर के कपाट बंद किए गए। इसके बाद आदि केदारेश्वर और आदि गुरु शंकराचार्य मंदिर के कपाट बंद हुए। यह प्रक्रियाएं पंच पूजा का हिस्सा होती हैं, जिसमें पूरे मंदिर परिसर को लंबे शीतकाल के लिए तैयार किया जाता है। शुक्रवार को पंच पूजा के तहत महत्वपूर्ण खताग पूजा पूरी हुई। इसके बाद माता लक्ष्मी के मंदिर में कढ़ाई भोग का प्रसाद चढ़ाकर भगवान बद्रीनाथ के गर्भगृह में सुरक्षित वापसी के लिए प्रार्थना की गई। उत्तराखंड के चारधाम झ गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ झ सभी शीतकाल के लिए बंद हो रहे हैं। यह 2024 की तीर्थयात्रा का समापन है। गंगोत्री मां गंगा को समर्पित है, सबसे पहले 2 नवंबर को बंद हुआ। इसके बाद यमुनोत्री और केदारनाथ के कपाट 3 नवंबर को भाई दूज के दिन बंद किए गए।

हाइपरसोनिक मिसाइल का सफल उड़ान परीक्षण

नई दिल्ली। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन ने लंबी दूरी की पहली हाइपरसोनिक मिसाइल का सफल उड़ान परीक्षण किया है। रक्षा मंत्रालय ने रविवार को बताया कि यह परीक्षण शनिवार को देर रात ओडिशा के तट पर डॉ एपीजे अब्दुल कलाम द्वीप से किया गया। इस हाइपरसोनिक मिसाइल को सशस्त्र बलों के लिए 1,500 किलोमीटर से अधिक की दूरी पर विभिन्न पेलोड ले जाने के लिए डिजाइन किया गया है। मिसाइल को विभिन्न डोमेन में तैनात विभिन्न रेंज प्रणालियों द्वारा ट्रैक किया गया था। उड़ान डेटा ने सफल टर्मिनल युद्धाभ्यास और उच्च सटीकता के साथ प्रभाव की पुष्टि की है। इस मिसाइल को डॉ एपीजे अब्दुल कलाम मिसाइल कॉम्प्लेक्स, हैदराबाद की प्रयोगशालाओं के साथ-साथ विभिन्न अन्य डीआरडीओ प्रयोगशालाओं और उद्योग भागीदारों द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित किया गया है। उड़ान-परीक्षण डीआरडीओ के वरिष्ठ वैज्ञानिकों और सशस्त्र बलों के अधिकारियों की उपस्थिति में किया गया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट में उड़ान-परीक्षण को ऐसी ऐतिहासिक उपलब्धि बताया, जिसने भारत को महत्वपूर्ण और उन्नत सैन्य प्रौद्योगिकियों की क्षमताओं वाले चुनिंदा देशों के समूह में डाल दिया है। उन्होंने सफल उड़ान परीक्षण के लिए डीआरडीओ, सशस्त्र बलों और उद्योग को बधाई दी। रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव और डीआरडीओ के अध्यक्ष डॉ. समीर वी कामत ने इस सफल मिशन में सक्रिय योगदान देने वाली डीआरडीओ की टीम को बधाई दी।

स्पेसएक्स : इसरो के जीसैट-एन2 उपग्रह को करेगा प्रक्षेपित

चेन्नई। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के उन्नत संचार उपग्रह जीसैट-एन2 को स्पेसएक्स सोमवार को अमेरिका के फ्लोरिडा में केप कैनावेरल स्पेस फोर्स स्टेशन के स्पेस लॉन्च कॉम्प्लेक्स 40 (एसएलसी-40) से जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट (जीटीओ) में प्रक्षेपित करेगा। दो घंटे की विंडो दोपहर 1:31 बजे ईटी पर खुलेगी। स्पेसएक्स ने अपनी वेबसाइट पर कहा यदि आवश्यक हो तो मंगलवार, 19 नवंबर को सुबह 4:33 बजे ईटी पर खुलने वाली दो घंटे की विंडो के दौरान बैकअप अवसर उपलब्ध है। चरण पृथक्करण के बाद पहला चरण जस्ट रीड द इंस्ट्रक्शन्स ड्रोनशिप पर उतरेगा जो अटलांटिक महासागर में तैनात होगा। इसरो ने कहा जीसैट-20 इसरो द्वारा विकसित एक संचार उपग्रह है और इसे स्पेसएक्स फाल्कन 9 द्वारा लॉन्च किया जाएगा। यह फाल्कन की 19वीं उड़ान होगी। यह एक वाणिज्यिक मिशन होगा। हालांकि इसरो के एलएमवी-3 में जीटीओ में 4,000 किलोग्राम तक के उपग्रहों को प्रक्षेपित करने की क्षमता है लेकिन भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी ने इसे एलन मस्क के स्वामित्व वाले स्पेसएक्स के अमेरिका से फाल्कन-9 लॉन्च वाहन का उपयोग करके लॉन्च करने का विकल्प चुना। इसका वजन 4,700 किलोग्राम है। न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (एनएसआईएल) द्वारा वित्तपोषित, स्वामित्व और संचालित जीसैट-20, संचार उपग्रहों की जीसैट श्रृंखला की निरंतरता होगी और इसका उद्देश्य भारत के स्मार्ट सिटी मिशन द्वारा आवश्यक संचार अवसंरचना में डेटा संचरण क्षमता को जोड़ना है। सीएमएस-02 उपग्रह की पूरी क्षमता डिश टीवी को पट्टे पर दी जाएगी। यह उपग्रह 32 उपयोगकर्ता बीम से सुसज्जित है जिसमें पूर्वोत्तर क्षेत्र पर आठ संकीर्ण स्पॉट बीम और शेष भारत पर 24 चौड़े स्पॉट बीम शामिल हैं। इन 32 बीम को मुख्य भूमि भारत में स्थित हब स्टेशनों द्वारा समर्थित किया जाएगा।

इंफाल घाटी के विभिन्न जिलों में गुस्साई भीड़ ने मचाया तांडव, कर्फ्यू लगा

मणिपुर में बवाल : चार और विधायकों के जलाए गए घर

- स्थिति शांत लेकिन तनावपूर्ण, इंटरनेट सेवा निलंबित
- सीएम के पैतृक घर पर हमला करने का किया गया प्रयास

प्रातः किरण

इंफाल। मणिपुर के जिरीबाम में छह लोगों के शव बरामद होने के बाद इंफाल घाटी में हुए हिंसक प्रदर्शन के बाद यहां स्थिति शांत, लेकिन तनावपूर्ण बनी हुई है। इसी के साथ घाटी में अनिश्चितकाल के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया है और इंटरनेट सेवाएं भी निलंबित कर दी गई हैं। मणिपुर के जिरीबाम जिले में दो महिलाओं और एक बच्चे के शव बराक नदी से शनिवार को बरामद किए गए जबकि एक महिला एवं दो बच्चों के शव शुक्रवार रात मिले। ऐसा आरोप है कि उग्रवादियों ने ही अपहरण के बाद इनकी हत्या की है। दरअसल, जिरीबाम जिले में सुरक्षाबलों और उग्रवादियों के बीच सोमवार को मुठभेड़ हुई थी जिसके बाद से राहत शिविर में रहने वाली तीन महिलाएं और तीन बच्चे लापता हो गए थे। इस मुठभेड़ में 10 उग्रावादी भी मारे गए थे। इंफाल घाटी में एक दिन पहले लोगों ने इस हत्या के विरोध में हिंसक प्रदर्शन किए और राज्य के तीन मंत्रियों तथा छह विधायकों के आवास पर भी हमला किया। पुलिस ने बताया कि प्रदर्शनकारियों ने मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह के दामाद एवं भारतीय जनता पार्टी के विधायक आर के इमो सहित तीन विधायकों के घरों में तोड़फोड़ की और उनकी संपत्तियों में आग लगा दी। वहीं, सुरक्षाबलों ने इंफाल के विभिन्न हिस्सों में प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस के गोले छोड़े। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

अनिश्चितकाल के लिए कर्फ्यू लागू

अधिकारियों ने बताया कि प्रदर्शनकारियों ने राज्य के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह के पैतृक आवास पर भी धावा बोलने की कोशिश की, हालांकि पुलिस ने उन्हें रोक दिया। जिरीबाम जिले में तीन महिलाओं और तीन बच्चों के शव मिलने के बाद प्रदर्शनकारियों ने इंफाल घाटी के विभिन्न हिस्सों में शनिवार को हिंसक प्रदर्शन किया, जिसके बाद से यहां अनिश्चितकाल के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया। गुस्साई भीड़ ने शनिवार को राज्य के तीन मंत्रियों और छह विधायकों के आवासों पर भी हमला किया था। अधिकारियों ने बताया कि प्रदर्शनकारियों ने निंगथौखोंग में लोक निर्माण मंत्री गोविंददास कोंथौजम, लैंगमीडोंग बाजार में हियांगलाम से भाजपा विधायक वाई राधेश्याम, थौबल जिले में वांगजिंग टेंथा के भाजपा विधायक पाओनम ब्रोजेन और इंफाल पूर्वी जिले में खुंद्राक्पम के कांग्रेस विधायक लोकेश्वर के घरों में आग लगा दी। पुलिस ने बताया कि गुस्साई भीड़ ने विधायकों के आवासीय परिसरों पर धावा बोला, संपत्ति में तोड़फोड़ की और घरों में आग लगा दी। हालांकि, इस दौरान विधायक और उनके परिवार के सदस्य घर पर मौजूद नहीं थे। अधिकारियों के अनुसार, इन घटनाओं में घर आंशिक रूप से जल गए। घरों के पूरी तरह जलने से पहले अग्निशमन सेवाएं मौके पर पहुंचीं और आग पर काबू पा लिया। प्रदर्शनकारियों ने शनिवार रात इंफाल पूर्वी क्षेत्र में लुवांगसांगबाम स्थित बीरेन सिंह के पैतृक निवास पर भी हमला करने की कोशिश की लेकिन सुरक्षाबलों ने उन्हें 100-200 मीटर पहले ही रोक दिया। जिरीबाम में छह लोगों के शव बरामद होने के बाद इंफाल घाटी में हुए हिंसक प्रदर्शन के चलते यहां रविवार सुबह स्थिति शांत, लेकिन तनावपूर्ण बनी रही। इसी के साथ घाटी में अनिश्चितकाल के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया है और इंटरनेट सेवाएं भी निलंबित कर दी गई हैं।

नाइजीरिया पहुंचे पीएम मोदी

गर्मजोशी से हुआ स्वागत

दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंध और प्रगाढ़ होंगे : मोदी

प्रातः किरण

नई दिल्ली/अबुजा (नाइजीरिया)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी पांच दिवसीय विदेश यात्रा के पहले चरण में नाइजीरिया पहुंच गए हैं। श्री मोदी नाइजीरिया के राष्ट्रपति बोला अहमद टिनुबू के निमंत्रण पर पश्चिम अफ्रीकी देश की यात्रा कर रहे हैं। श्री मोदी के अबुजा हवाई अड्डे पर पहुंचने पर उनका गर्म जोशी से स्वागत किया गया। प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति टिनुबू का आभार जताते हुए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स एक पोस्ट में कहा, धन्यवाद राष्ट्रपति टिनुबू। अब से थोड़ी देर पहले नाइजीरिया में उतरा हूं। हार्दिक स्वागत के लिए आभार जताता हूं। कामना करता हूं कि इस यात्रा से हमारे दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंध और प्रगाढ़ होंगे। इससे पहले श्री टिनुबू ने एक्स पर अपने पेज पर भारतीय प्रधानमंत्री के स्वागत में लिखा, मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का उनकी पहली नाइजीरिया यात्रा पर स्वागत करने के लिए उत्सुक हूं। यह 2007 के बाद भारत के किसी प्रधानमंत्री की मेरे प्यारे देश की पहली यात्रा है। हम अपनी द्विपक्षीय बातचीत में दोनों देशों के बीच रणनीतिक संबंध के विस्तार और महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सहयोग के संवर्धन पर चर्चा करेंगे। श्री मोदी के अबुजा पहुंचने पर लोगों ने उनका अभूतपूर्व तरीके से स्वागत किया। श्री मोदी के प्रति नाइजीरिया के लोगों के विश्वास और सम्मान के प्रतीक के रूप में उन्हें अबुजा शहर की कुंजी भेंट की गई। वहां रह रहे मराठी समुदाय के लोगों ने प्रधानमंत्री का विशेष रूप से स्वागत किया और उन्हें मराठी को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिए जाने के लिए उनका आभार व्यक्त किया। श्री मोदी के स्वागत में एक टोली ने उनके समक्ष लावणी लोक नृत्य प्रस्तुत किया। उनके स्वागत में एक युवा पर्वतारोही भी उपस्थित है जिसने श्री मोदी की फोटो के साथ किलिमंजारो पर्वत चोटी की चढ़ाई की थी। इससे पहले श्री मोदी ने पालम वायुसैनिक अड्डे से विशेष विमान से रवाना होने से पहले अपने वक्तव्य में जी-20 शिखर सम्मेलन में ग्लोबल साउथ की प्राथमिकताओं तथा एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य के भारत के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए सार्थक चर्चा की आशा जताई। श्री मोदी ने कहा,मैं नाइजीरिया, ब्राजील और गुयाना की पाँच दिवसीय यात्रा पर जा रहा हूँ। राष्ट्रपति बोला अहमद टिनुबू के निमंत्रण पर यह नाइजीरिया की मेरी पहली यात्रा होगी, जो पश्चिम अफ्रीकी क्षेत्र में हमारा करीबी भागीदार है। मेरी यात्रा हमारी रणनीतिक साझीदारी को आगे बढ़ाने का अवसर होगी जो लोकतंत्र और बहुलवाद में साझा विश्वास पर आधारित है। मैं भारतीय समुदाय और नाइजीरिया के दोस्तों से मिलने का भी उत्सुकता से इंतजार कर रहा हूं जिन्होंने मुझे हिंदी में गर्मजोशी से स्वागत संदेश भेजे हैं। श्री मोदी ने कहा,ब्राजील में मैं ट्रोइका सदस्य के रूप में 19वें जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लूंगा। पिछले साल, भारत की सफल अध्यक्षता ने जी-20 को लोगों के जी-20 के रूप में ऊपर उठाया और ग्लोबल साउथ की प्राथमिकताओं को अपने एजेंडे में मुख्यधारा में शामिल किया। इस वर्ष ब्राजील ने भारत की विरासत को आगे बढ़ाया है।

गुयाना यात्रा 50 से अधिक वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली यात्रा होगः

प्रधानमंत्री ने कहा,राष्ट्रपति मोहम्मद इरफान अली के निमंत्रण पर मेरी गुयाना यात्रा 50 से अधिक वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली यात्रा होगी :

हम अपने अनूठे रिश्ते को रणनीतिक दिशा देने पर विचारों का आदान-प्रदान करेंगे, जो साझा विरासत, संस्कृति और मूल्यों पर आधारित है। मैं सबसे पुराने भारतीय प्रवासियों में से एक के प्रति भी अपना सम्मान व्यक्त करूंगा जो 185 साल से भी अधिक समय पहले प्रवासित हुए थे और उनकी संसद को संबोधित करते हुए एक साथी लोकतंत्र को शामिल करूंगा। श्री मोदी जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के ब्राजील , नाईजीरिया एवं गुयाना की पांच दिवसीय यात्रा पर शनिवार को रवाना हुए।

भाजपा चाहती है कि मणिपुर जलता रहे : खरगे

नई दिल्ली। मणिपुर में ताजा हिंसा भड़कने के बीच कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने रविवार को आरोप लगाया कि सत्तारूढ़ पार्टी चाहती है कि मणिपुर जलता रहे क्योंकि इससे उनकी ह्यह्यघृणास्पद विभाजनकारी राजनीति का मकसद पूरा होता है। मणिपुर में अस्थिर हालात के बीच केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने महाराष्ट्र में अपनी चुनावी रैलियां रद्द कर दी हैं। खरगे ने कहा कि राज्य के लोग कभी माफ नहीं करेंगे और न ही यह भूलेंगे कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया और उनकी परेशानियों को दूर करने के लिए कभी उनके राज्य में कदम नहीं रखा। कांग्रेस अध्यक्ष ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, नरेन्द्र मोदी जी आपकी डबल इंजन सरकारों के शासन में न तो मणिपुर एक है, न ही मणिपुर सुरक्षित है। उन्होंने कहा, मई 2023 से यह अकल्पनीय दर्द, विभाजन और हिंसा से जूझ रहा है, जिसने इसके लोगों के भविष्य को नष्ट कर दिया है। उन्होंने कहा हम पूरी जिम्मेदारी के साथ कह रहे हैं कि ऐसा लगता है कि भाजपा चाहती है कि मणिपुर जलता रहे क्योंकि इससे उसकी घृणित विभाजनकारी राजनीति का मकसद पूरा होता है। खरगे ने कहा कि सात नवंबर से अब तक कम से कम 17 लोगों की जान जा चुकी है, संघर्षग्रस्त क्षेत्रों की सूची में नए जिले जुड़े रहे हैं और आग सीमावर्ती पूर्वोत्तर राज्यों तक फैल रही है। कांग्रेस प्रमुख ने कहा, आपने मणिपुर को निराश किया है जो एक खूबसूरत सीमावर्ती राज्य है। भले ही आप भविष्य में मणिपुर का दौरा करें, राज्य के लोग कभी माफ नहीं करेंगे या भूलेंगे नहीं कि आपने उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया और उनके कष्टों को दूर करने और समाधान खोजने के लिए कभी उनके राज्य में कदम नहीं रखा। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने भी मणिपुर में हाल में हुई हिंसक झड़पों और जारी रक्तपात को बेहद परेशान करने वाला करार दिया। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी से राज्य का दौरा करने और क्षेत्र में शांति बहाल करने की दिशा में काम करने का आग्रह किया। राहुल गांधी ने एक्स पर एक पोस्ट में कि हाल ही में हुई हिंसक झड़पें और जारी रक्तपात बेहद परेशान करने वाला है। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने कहा, एक वर्ष से अधिक समय के विभाजन और पीड़ा के बाद, प्रत्येक भारतीय की यह आशा थी कि केंद्र और राज्य सरकारें सुलह के लिए हर संभव प्रयास करेंगी और कोई समाधान निकालेंगी। उन्होंने कहा, मैं प्रधानमंत्री से मणिपुर जाने और क्षेत्र में शांति एवं सौहार्द बहाल करने की दिशा में काम करने का एक बार फिर आग्रह करता हूं। पार्टी महासचिव (संगठन) के सी वेणुगोपाल ने कहा कि ह्यह्यमणिपुर में हिंसा की बढ़ती घटनाएं दर्शाती हैं कि मामले किस हद तक नियंत्रण से बाहर हो गए हैं।

रिजर्व बैंक को आया धमकी भरा कॉल, शिकायत दर्ज

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक को धमकी भरा कॉल शनिवार सुबह 10 बजे किया गया। कॉलर ने खुद को लश्कर ए तैयबा का सीईओ बताया। कॉल रिजर्व बैंक के कस्टमर केयर नंबर पर आई थी। कथित तौर पर रिजर्व बैंक के सुरक्षा गार्ड को कॉल की गई। शख्स ने खुद को आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा का सीईओ बताते हुए कहा पीछे का रास्ता बंद कर दो इलेक्ट्रिक कार खराब हो गई है। अज्ञात शख्स के खिलाफ मामला दर्ज कराया जा चुका है। वहीं पुलिस के मुताबिक ये किसी की शरारत भी हो सकती है। इससे पहले गुरुवार (15 नवंबर) को मुंबई के जेएसए लॉ फर्म बेलर्ड पेयर और जेएसए ऑफिस कमला मिल लोअर पर्ल को बम से उड़ाने की धमकी भरा एक ईमेल आया था। मेल कंपनी के ऑफिशियल आईडी पर आया था। भेजने वाले शख्स का नाम फरजान अहमद था। उसने लिखा था फर्म के कार्यालय और बेलार्ड एस्टेटऑफिस में बम रखा गया है। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने तुरंत ही जांच शुरू कर दी थी। इससे पहले फ्लाइट को भी बम से उड़ाने की धमकी दी गई थी। बीते गुरुवार (14 नवंबर) को मुंबई एयरपोर्ट को बम से उड़ाने की धमकी मिली थी। अज्ञात शख्स ने मुंबई एयरपोर्ट पर तैनात सीआईएसएफ को फोन कर एयरपोर्ट को बम से उड़ाने की धमकी दी थी। इसके बाद एयरपोर्ट पर तैनात सुरक्षाकर्मियों सहित अन्य लोग खौफजदा हो गए थे। धमकी देने वाले शख्स ने सीआईएसएफ कर्मचारी को फोन कर कहा था कि एयरपोर्ट पर बम रखा हुआ है। जांच में सामने आया था कि मोहम्मद नाम का व्यक्ति विस्फोटक सामग्री लेकर मुंबई से अजरबैजान जाने की योजना बना रहा था। 27 अक्टूबर को भी मुंबई एयरपोर्ट पर एक धमकी दी गई थी। कहा गया था कि अगर विमान उड़ा तो कोई भी यात्री जिंदा नहीं बचेगा। जांच में यह धमकी भी झूठी पाई गई थी। पिछले लगभग एक साल से देश में स्कूल, होटल, एयरपोर्ट, मार्केट, ट्रेन, बस आदि को बम से उड़ाने की धमकियां मिल रही हैं। हालांकि सभी फर्जी निकल रही हैं।

चुनाव आयोग ने आचार संहिता उल्लंघन की 7,784 शिकायतों का किया समाधान

मुंबई। महाराष्ट्र में चुनाव आयोग ने पिछले एक महीने में आचार संहिता उल्लंघन की 7,784 शिकायतों का समाधान किया है और 557 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति जब्त की है। मुख्य चुनाव अधिकारी के कार्यालय द्वारा रविवार को दी गयी जानकारी में बताया गया कि विधानसभा आम चुनाव 2024 के लिए 15 अक्टूबर से 16 नवंबर के बीच पूरे राज्य में सी-विजिल एप्लिकेशन पर कुल 7,820 शिकायतें प्राप्त हुईं। नागरिक चुनाव आयोग द्वारा विकसित सी-विजिल मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन के बारे में शिकायत दर्ज कर सकते हैं। शिकायत दर्ज होने के बाद संबंधित टीमों द्वारा जांच के बाद उचित कार्रवाई की जाती है। बयान में कहा गया है कि राज्य और केंद्र सरकार की विभिन्न प्रवर्तन एजेंसियों ने अवैध धन, शराब, मादक पदार्थ, कीमती धातुओं आदि के खिलाफ अभियान में 15 अक्टूबर से 557 करोड़ 76 लाख रुपये की संपत्ति जब्त की है। बयान में कहा गया है कि पूरे राज्य में आचार संहिता का प्रभावी क्रियान्वयन किया जा रहा है। महाराष्ट्र में चुनाव प्रचार 18 नवंबर की शाम को समाप्त हो जाएगा और 20 नवंबर को मतदान होगा जबकि चुनाव परिणाम 23 नवंबर को घोषित किए जाएंगे।

प्रदर्शन ओडिशा में पुरी के ब्लू फ्लैग तट पर शक्ति प्रदर्शन अभियान चार दिसंबर को ....

भारतीय नौसेना के शक्ति प्रदर्शन में 40 विमान, 25 युद्धपोत लेंगे भाग

प्रातः किरण

भुवनेश्वर। ओडिशा में पुरी के ब्लू फ्लैग तट पर चार दिसंबर को होने वाले भारतीय नौसेना के शक्ति प्रदर्शन अभियान में मिग-29के और हल्के लड़ाकू विमान सहित 40 विमान और 25 युद्धपोत भाग लेंगे। वे नौसेना की समुद्री ताकत और अभियानगत क्षमताओं का प्रदर्शन करेंगे। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। इस कार्यक्रम में परेड भी होगी और इस दौरान राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, राज्यपाल रघुबर दास, मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी और भारतीय नौसेना के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहेंगे। शनिवार को यहां एक उच्च स्तरीय बैठक में ओडिशा के पुलिस महानिदेशक वाई.बी. खुरानिया ने वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि कार्यक्रम का आयोजन सुचारू तरीके से हो तथा राज्य सरकार, स्थानीय प्रशासन और नौसेना के बीच सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। यह पहली बार होगा, जब भारतीय नौसेना ओडिशा में इस तरह का आयोजन करेगी जिससे आम लोगों को अत्याधुनिक युद्धपोतों और विमानों के साथ-साथ कमांडो के प्रदर्शन देखने का एक अनूठा अवसर मिलेगा।

पुंछ में मिनी मैराथन आयोजित

मेंढर/जम्मू। जम्मू कश्मीर में पुंछ जिले के मेंढर सेक्टर में सेना की भिंबर गली ब्रिगेड द्वारा आयोजित मिनी मैराथन में रविवार को सैकड़ों लोगों ने हिस्सा लिया। एक अधिकारी ने बताया कि मेंढर खेल महोत्सव से पूर्व पहली मिनी मैराथन नागरिक-सैन्य संबंधों को मजबूत करने के अलावा एकता और सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देने के लिए ऑपरेशन सद्भावना के तहत आयोजित की गयी। सैन्य अधिकारी ने बताया कि इसमें मेंढर क्षेत्र के विद्यालय और कॉलेज के 400 से अधिक लोगों ने भाग लिया, जो उनके जोश एवं उत्साह को दर्शाता है। उन्होंने बताया कि मैराथन दो प्रतियोगी आयु श्रेणियों 15 से 30 वर्ष और 31 से 45 वर्ष में आयोजित की गयी। सभी प्रतिभागियों ने जबरदस्त उत्साह, लचीलापन और अदम्य इच्छाशक्ति का प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य संस्कृति को बढ़ावा देना, सामुदायिक जुड़ाव को प्रोत्साहित करना और स्थानीय लोगों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा करना, उन्हें नए कौशल सीखने और अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रेरित करना है। ऑपरेशन सद्भावना सेना की एक पहल है। यह पहल शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, बुनियादी ढांचे, सशक्तीकरण पर ध्यान केंद्रित करती है और मेंढर की युवा प्रतिभाओं को कई अवसर प्रदान करती हैं जिससे वे अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ सकें।

संक्षिप्त खबरें

आर्मी भर्ती रैली में कैंसिल होने की बाद भी अभ्यर्थी जाने को तैयार

दानापुर। नगर के अंतर्गत सेना में चल रहे टेटोरियल आर्मी भर्ती रैली में शामिल शनिवार को देर रात भी अभ्यर्थियों के आने का सिलसिला जारी रहा। जिससे सेना और स्थानीय प्रशासन को सारी रात मशक्कत करनी पड़ी। रविवार को होने वाली भर्ती कैंसिल होने की जानकारी देने के बाद भी अभ्यर्थी जाने को लेकर तैयार नहीं थे। जिसको देखते दानापुर,जानीपुर, मनेर,शाहपुर थाना की पुलिस, अग्निशमन गाड़ी समेत अतिरिक्त पुलिस बल को जगह जगह तैनात किया गया था। भर्ती होने आए युवकों का जमात करियप्पा ग्रांउड,सैनिक चौक से लेकर बीआरसी के नवलखा मंदिर के आसपास सारी रात टहलते दिखाई दिया।भर्ती में शामिल होने को लेकर युवकों का उत्साह थम नहीं रहा था। गोपालगंज से आए कुछ युवकों ने बताया कि जब यहां आ गए हैं तो जगह की पुरी जानकारी लेकर जाएंगे।थानाध्यक्ष प्रशांत कुमार भारद्वाज ने बताया कि रविवार की रैली स्थगित होने और अब उक्त तिथि की रैली 28 नवंबर से जिलेवार होने की जानकारी दी जा रही थी। बता दें कि शनिवार को बिहार के अभ्यर्थियों की होने वाली रैली में भाग लेने शुक्रवार को रात में उम्मीद से बहुत ज्यादा अभ्यर्थी आ गए थे। जिससे शुक्रवार रात से शनिवार को दोपहर तक सारी व्यवस्था चरमरा गई। जिसको देखते हुए रविवार को बिहार की होने वाली रैली को तत्काल रोक का आदेश निर्गत किया गया। बावजूद अभ्यर्थियों का आने का सिलसिला शनिवार को रात में भी आने का जारी था।

हथियार दिखा किया लूटपाट

पटना सिटी (प्राकि)। आलमगंज थाना क्षेत्र के आयरन गोदाम के पास दो लोगों से अपराधियों ने लूटपाट की घटना को अंजाम दिया। बस से महात्मा गांधी सेतु पर उतरने के बाद दोनों सेतु से नीचे उतरे। इस दौरान मंझौली के रहने वाले रंजीत कुमार और राजकिशोर के साथ तीन की संख्या में रहे अपराधियों ने लूटपाट की घटना को अंजाम दिया। पीड़ित ने दर्ज शिकायत में पुलिस को बताया है कि वह सेतु पर बस से उतरे। उसी समय तीन अपराधी पीछे लग गए। पुल से नीचे आने पर पिस्टल व चाकू दिखा कर चेन और सात हजार रुपए के साथ मोबाइल व अन्य सामान लूट लिया। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस मामला दर्ज कर छानबीन कर रही है।

बूथों पर दूसरे दिन भी बीएलओ ने लिया आवेदन

पटना सिटी (प्राकि)। पटना साहिब विधानसभा क्षेत्र के मतदान केंद्रों पर नए मतदाताओं के नाम जोड़ने, विलोपित करने और संशोधित करने का आवेदन तैनात बीएलओ ने रविवार को भी लिया। एसडीओ सत्यम सहाय ने बताया कि कुछ मतदान केंद्रों पर अनुपस्थिति पाए गए बीएलओ से कारणपृच्छा किया जाएगा। इस दौरान एसडीओ व अवर निवार्ची पदाधिकारी निखिल ने अनेक मतदान केंद्रों का निरीक्षण कर बीएलओ के कार्य की जानकारी ली। एसडीओ ने बताया कि विशेष अभियान दिवस 23 व 24 नवंबर को भी किया जाएगा। इसमें बीएलओ बूथ पर बैठेंगे। निर्वाचन आयोग के निर्देश पर जिलाधिकारी डॉ चंद्रशेखर सिंह के आदेश पर विशेष अभियान दिवस का आयोजन किया गया है।

पैक्स चुनाव के लिए कुल 101 उम्मीदवार ने किया नामांकन

फतुहा। रविवार को नामांकन के दूसरे दिन प्रखंड कार्यालय में बने काउंटर पर पैक्स चुनाव के लिए कुल 101 उम्मीदवार ने नामांकन किया। कुल 14 लोगों ने प्रखंड के विभिन्न पैक्स के अध्यक्ष पद के लिए नामांकन किया। जबकि 87 लोगों ने पैक्स सदस्य के लिए नामांकन किया। जैतिया पैक्स अध्यक्ष के लिए दो, मोमिन्दपुर पैक्स अध्यक्ष के लिए दो,कोल्हर पैक्स अध्यक्ष के लिए तीन, अलावलपुर पैक्स अध्यक्ष के लिए एक, डुमरी पैक्स अध्यक्ष के लिए एक, मोहिउद्दीनपुर पैक्स अध्यक्ष के लिए दो, मोजीपुर पैक्स अध्यक्ष के लिए एक, जेठुली के लिए एक तथा पीताम्बरपुर पैक्स अध्यक्ष के लिए एक प्रत्याशियों ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। बीडीओ सुनील कुमार ने बताया कि सोमवार को नामांकन की अंतिम तारीख निश्चित की गयी है।

राधे श्याम परिवार के नेत्र शिविर में आंख की जांच

पटना सिटी (प्राकि)। राधेश्याम परिवार सेवा संस्थान एवं बालाजी नेत्रालय द्वारा हर महीने की तीसरे रविवार को डॉक्टर शशि मोहनका के नेतृत्व में आंख जांच शिविर लगा इलाज किया जाता है। पटना सिटी स्थित में मिरचाई गली में रविवार को भी शिविर में 40 से अधिक मरीजों के आंखों की जांच की गई। मोतियाबिंद से पीड़ित मरीज को ऑपरेशन की सलाह दी गई इन सबों का ऑपरेशन नाला रोड स्थित नेत्रालय में किया जाएगा।

पिछले 25 वर्षों से पद्म श्री डॉ. संजय एवं उनकी टीम के द्वारा सड़क सुरक्षा अभियान

पद्म श्री डॉ. संजय एवं उनकी टीम के द्वारा पिछले 25 वर्षों से सड़क सुरक्षा अभियान चलाया

प्रात :किरण संवाददाता

पटना: संजय ऑथोर्पीडिक, स्पाइन एवं मैटरनिटी सेंटर और सेवा सोसायटी के तत्वाधान में दून विहार, जाखन, राजपुर रोड, देहरादून में हर साल की तरह इस साल भी सड़क दुर्घटना पीड़ितों के लिए विश्व स्मरण दिवस 2024 का आयोजन किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य सड़क यातायात दुर्घटनाओं पर मारे गए एवं गंभीर रूप से घायल हुए सभी लोगों को याद करना, पीड़ितों और उनके परिवारों को मंच प्रदान करना है।

पद्म श्री डॉ. संजय तथा उनकी टीम पिछले लगभग 25 सालों से सड़क सुरक्षा के प्रति एक अभियान चला रखा है। वह समय-समय पर प्रदेश एवं देश के शिक्षण एवं सामजिक संस्थाओं के माध्यम से लोगों को सड़क दुर्घटनाओं से होने वाले वाले दुष्परिणामों के प्रति जागरूकता फैलाते रहते हैं। इसी के अंतर्गत माचूर्ला में हुई बस दुर्घटना और देहरादून में हुई कार दुर्घटना के मृतकों के लिए श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

वरिष्ठ ऑथोर्पीडिक सर्जन पद्म श्री डॉ. संजय ने बताया कि हर साल अपने देश में लगभग पाँच लाख दुर्घटनाऐं होती हैं, जिसमें लगभग डेढ़ लाख लोगों की मौत होती है और लगभग इतने ही लोग अच्छे इलाज के बावजूद स्थाई या अस्थाई रूप से विकलांग हो जाते हैं और सड़क दुर्घटनाओं का दंश जीवन भर झेलते रहते हैं। यदि दुर्घटनाओं के कारण का आंकलन करें तो ओवरलोडिंग, ओवरस्पीडिंग, ओवरटेकिंग सड़क दुर्घटनाओं के मुख्य कारण हैं। इसके अतिरिक्त नींद का अभाव, नशे का प्रभाव, थकान का दबाव एवं वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग करना आग में घी का काम करते हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व जस्टिस हाई कोर्ट श्री राजेश टंडन ने कहा कि स्वयं को कानून के समर्थन के रूप में नियमों का पालन करें और रैश ड्राइविंग करने से बचें। उन्होंने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए मेडिटेसन एक कारगर उपाय होगा जिसके लिए डॉ. संजय को मेडिटेसन के कार्यक्रम को चलाने का सुझाव दिया।

प्रो. विशाल सागर ने कहा कि सोशल मीडिया एक ध्यान भटकाने का काम कर रहा है जिसने समाज की परिभाषा ही बदल दी है। सभी लोग समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझें और अपनी ऊर्जा को एक सार्थक दिशा में लगाऐं। आईएएस श्री प्रमोद कुमार, एसपी सिटी, देहरादून ने कहा कि यह केवल पुलिस की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि हम सब की जिम्मेदारी है कि हम सब मिलकर दुर्घटनाओं को कम करें। उन्होंने सभी से आग्रह है कि आप सभी नशे से दूर रहें और सड़क यातायात नियमों का पालन करें। डॉ. अश्विनी कांबोज ने कहा कि आज के युवाओं में ओवर स्पीडिंग करने की प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है जिसको समय रहते रोक लगाने की आवश्यकता है। ऑथोर्पीडिक सर्जन डॉ. प्रवीण मित्तल ने कहा कि क्योंकि हमारा देहरादून शैक्षणिक संस्थानों से भरपूर है और यहां पर काफी मात्रा में युवा लोग रहते हैं। आप शराब पीकर वाहन न चलाऐं और इस तरह की आदतों को बचपन में ही सिखाया जाना चाहिए। स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ. सुजाता संजय ने कहा कि अभिभावकों के लिए यह बहुत ही दुःखद बात है। हमें ऐसी दुर्घटनाऐं समय-समय पर देखने को मिलती है परंतु हम इनसे कुछ सीखते नहीं है जो कि बड़े दुर्भाग्य की बात है।

ऑथोर्पीडिक सर्जन डॉ. एस. एन. सिंह ने कहा कि वाहनों में चाहे कितना भी सुधार हो जब तक हम स्वयं में सुधार नहीं ला सकते तब तक हम इस तरह की दुर्घटनाओं में कमी नहीं ला सकते हैं। सभी को पुलिस का, अभिभावकों का और समाज का भय होना चाहिए। देन विहार कॉलोनी की अध्यक्षा श्रीमती जैन ने कहा कि यह एक ऐसी भयानक पीड़ा है जिसे कोई भी व्यक्ति जीवन भर नहीं भूल सकता। आज के युवा जोश में एक क्षण की प्रतिस्पर्धा में पूरी जिंदगी खत्म कर देते हैं। पत्रकार श्री प्रकाश सिंह ने कहा कि अभिभावकों को बच्चों को मार्गदर्शन करें। श्री ललित शर्मा ने कहा कि नींद सड़क दुर्घटनाओं के सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। सभी को 7 से 8 घंटे की पर्याप्त नींद अवश्य लेना चाहिए। ऑथोर्पीडिक सर्जन डॉ. गौरव संजय ने कहा की दुर्घटनाएं क्षण भर में होती है इसीलिए हम सबको इस तरह की घातक दुर्घटनाओं से बचने के लिए या तैयार नियमों का पालन करना चाहिए। डॉ गौरव संजय ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथि गणों, पत्रकारों, छात्र-छात्राओं एवं कार्यक्रम में उपस्थित सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का आयोजन श्री योगेश अग्रवाल के द्वारा किया गया। उत्तरांचल आयुर्वेदिक मेडिकल छात्रों के अतिरिक्त पार्षद् संजय नौटियाल, श्री पारितोष किमोथी, श्री डी. बी. सिंह, सपना इत्यादि कार्यक्रम में मौजूद रहे।

डीएम ने पल्स पोलियो अभियान का शुभारंभ किया

प्रात :किरण संवाददाता

पटना: जिलाधिकारी, पटना डॉ. चन्द्रशेखर सिंह द्वारा आज पूर्वाह्न 10.30 बजे न्यू गार्डिनर रोड अस्पताल, पटना में पल्स पोलियो टीकाकरण अभियान का शुभारंभ किया गया। उन्होंने इस अवसर पर बैलून उड़ाकर लोगों को दो बूंद जिंदगी का संदेश देते हुए पोलियो से मुक्ति के लिए 0 से 5 वर्ष के बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने की अपील की। विदित हो कि पल्स पोलियो टीकाकरण अभियान दिनांक दिनांक 17 नवंबर, 2024 से दिनांक 21 नवंबर, 2024 तक चलेगा। इस अवसर पर जिलाधिकारी, सिविल सर्जन एवं अन्य अधिकारियों द्वारा उपस्थित बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई गई। डीएम डॉ सिंह ने अपील की कि जिले में एक भी बच्चा पोलियो की खुराक से वंचित नहीं रहे। इस अभियान में 0-5 वर्ष तक के लगभग 8,22,502 बच्चों को पोलियो ड्रॉप पिलाने का लक्ष्य रखा गया है। घरों की अनुमानित संख्या 13,86,637 है। इस अभियान के लिए 4,554 टीम का गठन किया गया है जिसमें 3,049 हाउस-टू-हाउस टीम, 1,234 ट्रांजिट टीम, 200 मोबाइल टीम; 4 मेला टीम एवं 67 एकल व्यक्ति टीम शामिल है। कुल मानव शक्ति की संख्या 7,510 है जिसमें 6,098 वैक्सीनेटर, 1,230 सुपरवाइजर एवं 182 टीका/ कोल्ड चेन हैंडलर हैं। डीपो/सबडीपो की कुल संख्या 196 है। डीएम डॉ. सिंह ने कहा, ह्यपल्स पोलियो अभियान 17 से 21 नवंबर तक चलने वाली एक विशेष पहल है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि देश को पोलियो मुक्त घोषित किए जाने के बाद कोई नया मामला सामने न आए। एहतियात के तौर पर हम कदम उठा रहे हैं। हमने अफगानिस्तान और पाकिस्तान में मामले देखे हैं, पाकिस्तान में करीब 44-45 मामले सामने आए हैं। अपने पड़ोसी देश को ध्यान में रखते हुए विशेष सावधानी बरतना जरूरी है, यही वजह है कि हम यह विशेष अभियान चला रहे हैं। इस अभियान की सफलता हेतु प्रत्येक दिन संध्या में समीक्षात्मक बैठक की जाएगी। इस अभियान के सफल संचालन हेतु प्रखंड एवं जिला स्तर पर टास्क फोर्स का गठन किया गया है जो कि प्रत्येक दिन अपना फीडबैक शेयर करेगा। डीएम डॉ सिंह ने कहा कि पल्स पोलियो कार्यक्रम में कोई भी क्षेत्र एवं नवजात छूटे नहीं (मिस्ड एरिया, मिस्ड न्यू बॉर्न नहीं रहे) एवं कार्यक्रम के प्रथम दिन से एक्स से पी कन्वर्जन कराना सुनिश्चित करें। डीएम डॉ सिंह ने पल्स पोलियो पोलियो टीकाकरण अभियान की शत-प्रतिशत सफलता सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है। इस अवसर पर जिला पदाधिकारी के साथ सिविल सर्जन डॉ. मिथिलेश्वर कुमार, जिला प्रतिरक्षण पदाधिकारी डॉ. एस पी विनायक, राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी श्री रामयतन, यूनिसेफ के प्रतिनिधि डा0 निर्भय नाथ मिश्रा, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी आईसीडीएस ए. नैय्यर, एसएमओ डब्ल्यूएचओ डा० एस. एम. त्रिपाठी, रफळछ डा0 राजेश रटउ श्रीमति अजिज फातमा, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी श्रीमति उर्वशी चिकित्सा पदाधिकारी डा० विभा सिन्हा, डा० सुभाष चन्द्र झा, डा० पुष्पा प्रकाश एवं कई गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए।

तीन दिवसीय स्व रामदेव महतो मेमोरियल ओपन स्टेट ताइक्वांडो 27 दिसंबर से

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना जिला ताइक्वांडो संघ के पदाधिकारियों की बैठक संघ के अध्यक्ष सतीश राजू की अध्यक्षता में हुई। इसमें 27 से 29 दिसंबर तक आयोजित होने वाले तीन दिवसीय पांचवीं स्व रामदेव महतो मेमोरियल ओपन स्टेट ताइक्वांडो चैंपियनशिप के आयोजन की तैयारी पर विमर्श किया गया। इसमें बिहार के सभी जिला से लगभग 500 खिलाड़ी भाग लेंगे। यह चैंपियनशिप पटना सिटी के रामदेव महतो कम्युनिटी हॉल में होगी। चैंपियनशिप का सारा मैच इलेक्ट्रॉनिक स्कोरिंग सिस्टम पर होगा। यह जानकारी पटना जिला ताइक्वांडो संघ के सचिव जेपी मेहता ने दी। बैठक में रत्नेश कुशवाहा को पटना जिला ताइक्वांडो संघ का उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया और ई. मनीष कुमार को सह सचिव एवं मीडिया प्रभारी मनोनीत किया गया। इस अवसर पर संघ के कोषाध्यक्ष रविश रमण, सह सचिव कुमार कर्मवीर, मनीष कुमार, कार्यकारी सदस्य अनामिका सोनू, बबली मिश्रा, रॉकी कुमार, शुभम कुमार, आकाश पंकज, शाहिल कुमार, विकास सिंह आदि उपस्थित थे।

सर्जरी के सहा प्राध्यापक के आवेदन पर आलमगंज थाना में मामला दर्ज

मामला आईसीयू में अमृत मरीज के बाई आंख के गायब होने का

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

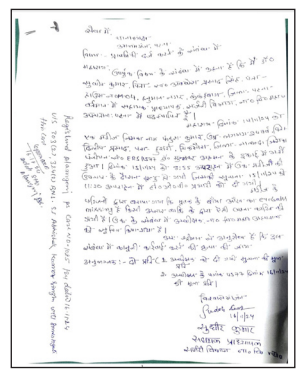

नालंदा मेडिकल कॉलेज अस्पताल के सर्जरी आईसीयू में इलाज के दौरान मरीज की मौत के बाद उसका बाया आंख गायब हो गया था। अंततः इस संबंध में सर्जरी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ सुधीर कुमार के आवेदन पर आलमगंज थाना में मामला दर्ज कराया गया है। थाना अध्यक्ष राजीव कुमार का कहना है कि आवेदन मिलने के बाद 16 नवंबर, 24 को कांड संख्या 1025 दर्ज करते हुए अनुसंधान की जिम्मेवारी एसआई अभिषेक कुमार सिंह को सौंपी गई है। आवेदन में कहा गया है कि 14 नवंबर को एक मरीज, जिसका नाम फंटूश कुमार (उम्र करीब 24 वर्ष) पिता दिलीप प्रसाद, पता हुरारी, चिकसौरा जिला नालंदा है। इसका पंजीयन संख्या ईआरएस 1577 है। वह डॉ मुनव्वर अहसन के यूनिट में भर्ती हुआ। 15 नवंबर की रात 8:55 में उक्त मरीज की इलाज के दौरान मौत हो गई। इसकी सूचना उसी रात 11:20 में एनएमसीएच परिसर में स्थित टीओपी प्रभारी को दी गई। मरीज के परिजनों के द्वारा बताया गया कि मृतक के बायां आंख का आईबॉल गायब है। किसी अज्ञात व्यक्ति के द्वारा ऐसी घटना कारित की गई है। इस संबंध में अस्पताल के अधीक्षक को सूचित किया गया है। वहीं अधीक्षक डॉ बिनोद कुमार सिंह ने भी 16 नवंबर को टीओपी के प्रभारी पदाधिकारी को पत्र भेजा है। इसमें कहा गया है कि सर्जरी विभाग के डॉ मुनव्वर अहसन के यूनिट-2 में मृतक फंटूश कुमार 14 नवंबर, 24 के संबंध में सूचक डॉ सुधीर कुमार, सहायक प्राध्यापक, सर्जरी विभाग के द्वारा उठाए गए बिंदुओं पर मामले को संज्ञान में लेते हुए मुकदमा दर्ज करने की कृपा की जाए। साथ ही सर्जरी विभाग के सहायक प्राध्यापक के द्वारा दिए गए पत्र, जो विभागाध्यक्ष सर्जरी विभाग के द्वारा अग्रसारित है, मूल में संलग्न कर दी जा रही है। डॉ मुनव्वर अहसन ने अधीक्षक को भी पत्र भेजा है। इसमें कहा गया है कि मरीज उनके यूनिट-2 में गोली लगने से घायल होकर 14 नवंबर को आया था। उसका ऑपरेशन किया गया। इस दौरान आईसीयू में 15 नवंबर को रात 8.55 में मृत घोषित कर दिया गया। इसके बाद पुलिस को इस संबंध में कागजात उसी रात 11.20 में उपलब्ध करा दिया गया। मगर पुलिस के द्वारा डेडबॉडी रिसीव नहीं किया गया। इसके बाद मरीज के परिजन के द्वारा सूचित किया गया कि मृतक के बाईं आंख का आईबॉल गायब है। इस आवेदन को सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉप्रो पीडी वर्मा ने भी अग्रसारित कर भेजा है।

संशोधित जरासंध चालीसा का लोकार्पण व भजन की प्रस्तुति

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

भारतीय चंद्रवंशी कल्याण परिषद और चंद्रवंशी एकता मंच की ओर दीवान मुहल्ला के पातो की बाग शिव मंदिर में मगध सम्राट जरासंध की जयंती मनाई गई। उप महापौर रेश्मी चंद्रवंशी, पार्षद नीलम देवी व विनय बाला और हरिनंदन चंद्रवंशी ने संयुक्त रूप से इसका उद्घाटन किया। पूजा-अर्चना के बाद संशोधित जरासंध चालीसा का लोकार्पण व रंजीत रंजन ने भजन की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता राम स्वरूप चंद्रवंशी व संचालन विनय कुमार बिट्टू व हरिश नारायण ने किया।कार्यक्रम में डॉ प्रमोद चंद्रवंशी, उमेश प्रसाद सिंह, तनय कुमार, विजय सिंह, बैजनाथ चंद्रवंशी, दीपक चंद्रवंशी, रंजीत चंद्रवंशी आदि ने विचार रखे। अतिथियों का स्वागत महासचिव काशीनाथ चंद्रवंशी ने किया। आयोजन में राजू चंद्रवंशी, सुनील चंद्रवंशी, संजीव कुमार उर्फ लड्डू चंद्रवंशी, राजेश चंद्रवंशी, राजू कर्ण और अभिषेक चंद्रवंशी शामिल थे।

छुट्टी वाले दिन भी जांच समिति के साथ अधीक्षक ने की बैठक

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

गोली लगने से घायल और ऑपरेशन के बाद आईसीयू में इलाज के दौरान मरीज फंटूश कुमार की मौत हो गई। पुलिस को सूचना दी गई, मगर पुलिस ने शव को अपने जिम्मे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए रात में नहीं भेजा। ड्यूटी में रही नर्सों के द्वारा भी इस संबंध में रात में ऑन ड्यूटी रहे अस्पताल प्रबंधक को सूचित नहीं किया गया।

नतीजतन पूरी रात मरीज का शव आईसीयू के बेड पर ही पड़ा रहा। इस दौरान उक्त वार्ड में दो मरीज भी भर्ती थे, जिसमें एक करौटा के सैदपुर की महिला सीमा देवी और दूसरा गया जिला के बाराचट्टी थाना क्षेत्र के बाराडीह के रहने वाले अरविंद कुमार थे। मृत मरीज का शव भी आईसीयू के रूम नंबर-2 में पड़ा रहा, जबकि दोनों जीवित मरीज भी वहीं रहे। हालांकि सुबह में सीमा देवी को दूसरे कमरे में शिफ्ट कर दिया गया। मामला तब तूल पकड़ा जब सुबह पांच बजे मृत मरीज के परिजन ने देखा कि उसका बायां आंख गायब है। इसके बाद हंगामा का सिलसिला शुरू हो गया। इसे लेकर रविवार को भी अधीक्षक डॉ बिनोद कुमार सिंह अपने कार्यालय कक्ष में पहुंचे और बैठक की। इस दौरान बनाई गई जांच समिति में शामिल निश्चेतना विभाग के विभागाध्यक्ष डॉप्रो बिजॉय कुमार, सर्जरी के विभागाध्यक्ष डॉप्रो पीडी वर्मा, आंख विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ प्रदीप कारक, डॉ अभिषेक रंजन और उपाधीक्षक डॉ सरोज कुमार आदि शामिल हुए। प्राचार्य डॉ उषा कुमारी के निर्देश पर अधीक्षक के द्वारा गठित चार सदस्यीय टीम के सदस्यों ने प्रथमदृष्टया यह तो माना कि मरीज के परिजन के अनुसार और सर्जरी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ मुनव्वर अहसन और सहायक प्राध्यापक डॉ सुधीर कुमार की रिपोर्ट के अनुसार मरीज के ऑपरेशन के बाद दोनों आंख सही था।

परिजनों का भी कहना है कि 15 नवंबर की रात एक बजे तक उसका मरीज का शव ठीक स्थिति में था। सुबह में उसका बायां आंख का आईबॉल यानी पुतली गायब था। यही नहीं, उसके गायब आंख में बेटाडिन लगा पट्टी लगाया गया था। हालांकि प्रथम दृष्टया चर्चा यह थी कि चूहे ने आंख को खा लिया है। कारण कि आंख में एक विशेष प्रकार का तरल पदार्थ होता है, जो चूहे को खासा भाता है। मगर सवाल यह है कि अगर चूहा आंख खा गया, तो उस आंख में बेटाडिन लगा पट्टी किसने लगाया। प्रथम दृष्टया रिपोर्ट में यह तय हो गया कि मरीज का बायां आंख गायब पाया गया। अब समिति को यह जांच कर रिपोर्ट देना है कि आखिर रात एक बजे से लेकर सुबह पांच के बीच किस परिस्थिति में इसका एक आंख गायब हुआ। इसे लेकर जांच समिति को अपनी रिपोर्ट सौंपनी है। इस संबंध में अधीक्षक ने एक पत्र भी जारी किया है, जिसमें कहा गया है कि वरीय चिकित्सकों की चार सदस्यीय समिति के द्वारा इसकी जांच कराई जा रही है और उन सबों के द्वारा प्राप्त प्रतिवेदन के आधार पर अन्य आवश्यक कार्रवाई, जो अपेक्षित होगी नियमानुसार की जाएगी। जारी पत्र में कहा गया है कि जांच पदाधिकारी को यह निर्देशित किया जाता है

कि मृतक फंटूश कुमार के पूरे मामले एवं स्थिति की पर्याप्त जानकारी पत्र प्राप्ति के 12 घंटे के अंदर उन्हें सूचित करेंगे एवं जांच समिति को या अधिकार होगा कि संबंधित इकाई प्रभारी एवं चिकित्सा तथा परिचारिकाएं एवं अन्य कर्मी, जो उक्त तिथि को उपस्थित थे, से अथवा कमेटी स्वतंत्र रूप से जो भी आवश्यक समझे, उक्त चिकित्सक या कर्मी से जांच-पड़ताल या पूछताछ कर सकेंगे। इसमें सभी को उक्त जांच समिति को सहयोग करने की बात कही गई है। जांच समिति में निश्चेतना विभाग के विभागाध्यक्ष डॉप्रो विजॉय कुमार, सर्जरी के विभागाध्यक्ष डॉप्रो पीडी वर्मा, नेत्र रोग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ प्रदीप कारक और सहायक प्राध्यापक डॉ अभिषेक रंजन सदस्य हैं।

राज्य में एनक्यूएएस सर्टिफाइड संस्थानों की संख्या हुई 46, सात नए सर्टिफाइड संस्थान हुए शामिल

नए सात में छह अर्बन पीएचसी को मिला सर्टिफिकेट

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना। राज्य में नेशनल क्वालिटी एश्योरेंस सर्टिफिकेट प्राप्त संस्थानों की संख्या में फिर बड़ी बढ़ोतरी हुई है। अब राज्य में कुल 20 नेशनल और 26 राज्य स्तरीय स्वास्थ्य संस्थान को एनक्यूएएस का सर्टिफिकेशन मिल चुका है। वहीं 147 स्वास्थ्य संस्थान असेसमेंट के प्रोसेस में है। मालूम हो कि जिला अस्पताल बेगूसराय 2020 में पहला एनक्यूएएस प्रमाणित अस्पताल बना और इसके बाद जिला अस्पतालों पर ध्यान केंद्रित करते हुए 8 जिला अस्पतालों को एनक्यूएएस प्रमाणित किया गया। अब सभी स्वास्थ्य सुविधाओं का प्रमाणन करने पर जोर दिया जा रहा है। इसके लिए जिला स्तरीय क्वालिटी एश्योरेंस को मजबूत किया जा रहा है। यूपीएचसी मासूमगंज को सबसे ज्यादा अंक नवंबर के दूसरे हफ्ते में राज्य के सात स्वास्थ्य संस्थान एनक्यूएएस सर्टिफिकेशन में शामिल हुए। इसमें छह यूपीएचसी और एक पीएचसी शामिल है। सारण के यूपीएचसी मासूमगंज को असेसमेंट के दौरान सबसे ज्यादा 92.80 अंक मिले हैं। एनक्यूएएस प्रमाणीकरण में शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की संख्या से एनयूएचएम के स्टेट प्रोग्राम मैनेजर मो. मसउद आलम कहते हैं कि शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के लिए एनक्यूएएस के पैमाने थोड़े अलग हैं बावजूद एनक्यूएएस प्रमाणीकरण के लिए इन स्वास्थ्य संस्थानों का खरा उतरना शहरी स्वास्थ्य की आधाभूत सेवाओं के लिए काफी अच्छा है। हमारा प्रयास रहेगा कि इस शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में मिलने वाली सुविधाएं गुणवत्तापूर्ण और सर्वसुलभ हो। अगले साल तक 50 प्रतिशत संस्थानों के एनक्यूएएस का लक्ष्य ाज्य में अगले साल तक करीब 50 प्रतिशत स्वास्थ्य संस्थानों को एनक्यूएएस से प्रमाणित करने का लक्ष्य है। एनक्यूएएस के राष्ट्रीय असेसर डॉ माहताब सिंह ने बताया कि ज्यादा से ज्यादा स्वास्थ्य केंद्रों के एनक्यूएएस प्रमाणीकरण से प्राथमिक स्तर पर मिलने वाली स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार होगा। गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएं भी बढ़ेंगी। स्वास्थ्य केंद्रों पर मरीजों के लिए मिलने वाली सुविधाओं से स्थानीय लोगों का विश्वास बढ़ेगा तो दूरगामी परिणामों में हेल्थ इंडिकेटरों में भी वृद्धि होगी।

कर्तव्य में लापरवाही का आरोप लगाते आईसीयू की दो नर्स निलंबित

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

एनएमसीएच के सर्जिकल आईसीयू में गोली लगने से घायल व इलाजरत फंटूश कुमार की मौत के बाद उसकी बाईं आंख निकाले जाने को लेकर मामला तूल पकड़ा हुआ है। फंटूश की मौत 15 नवंबर की रात करीब 8.55 में हो गई थी। इसके बाद ड्यूटी पर रही परिचारिका के द्वारा लापरवाही बरते जाने का आरोप लगाते हुए अधीक्षक डॉ बिनोद कुमार सिंह ने दो परिचारिका श्रीमती सुनीता कुमारी एवं श्रीमती प्रीति मंडल को घोर अनुशासनहीनता एवं कर्तव्य के प्रति लापरवाही बरते जाने का आरोप लगाते हुए निलंबित कर दिया है। 16 नवंबर को जारी पत्रांक 4591 के द्वारा अधीक्षक ने कहा है कि नालंदा जिला के चिकसौरा थाना क्षेत्र के हुरारी का रहने वाला फंटूश कुमार पिता दिलीप कुमार, जिसका पंजीयन संख्या आईआरएस/1577, 14 नवंबर, 24 है, का इलाज के दौरान मौत के बाद मरीज के शव को ससमय पुलिस रिपोर्ट नहीं पहुंचवाने एवं संबंधित स्वास्थ्य प्रबंधक ऑन ड्यूटी आपातकालीन विभाग को मृतक के शव को मार्चयरी में रखवाने के लिए आवश्यक सूचना नहीं उपलब्ध कराने से यह परिलक्षित होता है कि रात्रि पाली में कार्यरत परिचारिका अपने कर्तव्यों के प्रति लापरवाही बरती हैं। इस कारण से इन दोनों श्रीमती सुनीता कुमारी एवं श्रीमती प्रीति मंडल को अपने दायित्वों का निर्वहन नहीं करने के आलोक में तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जाता है। निलंबन की अवधि में इनका जीवन निर्वाह भत्ता का भुगतान नियमानुसार किया जाएगा। निलंबन अवधि में इनका मुख्यालय प्राचार्य, जीएनएम स्कूल, नालंदा मेडिकल कॉलेज अस्पताल होगा। इनका संचालन एवं उपस्थापन पदाधिकारी जीएनएम स्कूल की प्राचार्य ही होंगे।

चार वारंटी गिरफ्तार, भेजे गए जेल

मसौढ़ी !थाना पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर नदौल गांव में छापेमारी करते हुए विभिन्न मामलों में फरार चल रहे,चार एनबीडब्ल्यू वारंटी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।थानाध्यक्ष ने बताया कि गिरफ्तार वारंटियों में दिलीप चौधरी जगतानंद चौधरी जितेन्द्र चौधरी व राजबलम चौधरी शामिल हैं। इन सभी पर कोर्ट से वारंट निर्गत था। जिसे छापेमारी अभियान के तहत गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

राजगीर गुरुद्वारा पर्यटकों के लिए बना आकर्षण का केन्द्र : श्रवण

बाबा अजायब सिंह की आठवीं बरसी पर शामिल हुए मंत्री

- 1506 में गुरुनानक देव के चरण पड़ा था इस गुरुद्वारा में

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राजगीर। ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार ने रविवार को शीतल कुंड राजगीर गुरुद्वारा में बाबा अजायब सिंह की आठवीं बरसी पर शामिल होकर मत्था टेका। बाबा अजायब सिंह ने राजगीर गुरुद्वारा की सालों तक सेवा की थी। बरसी के मौके पर तख्त पटना साहेब श्री हरमंदिर जी के मैनेजर सरदार हरजीत सिंह की देखरेख में भजन-कीर्त्तन व लंगर का भी आयोजन हुआ। मंत्री श्रवण कुमार ने कहा कि बाबा अजायब सिंह ने इस गुरद्वारा की काफी सेवा की थी। वे काफी सज्जन व्यक्ति थे। उनकी सादगी आज भी याद आती है। वे यहां आने वाले पर्यटकों से हमेशा ही मीठा बोल बोलते थे और गर्मी के समय में सबों को ठंडा जल भी पीलाते थे। मंत्री श्रवण कुमार ने कहा कि इस गुरुद्वारा को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एक बेहतर रूप दिया और अब यह देश के पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया है। यहां पर लोगों के ठहरने के लिए भी बेहतर व्यवस्था की गयी है। यहां पर वर्ष 2022 में 554वां प्रकाश पर्व भी धूमधाम से मनाया गया था। इसमें कई देशों के लोगों ने हिस्सा लिया था। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के द्वारा पर्यटन स्थलों का काफी विकास किया है। अब यहां पर काफी पर्यटक आते हैं। मंत्री ने कहा कि इस गुरुद्वारा सह शीतल कुंड के बारे में ऐसी मान्यता रही है कि 1506 ई. में जब गुरुनानक देव जी यहां पर भ्रमण के दौरान आये थे। उनके पावन चरण से ही इस शीतल कुंड की उत्पत्ति हुई है। गुरुनानक देव जी की महत्ता के कारण ही यहां का पानी शीतल हो गया था। जब गुरुनानक देव यहां आये थे तो यहां पर काफी गर्मी थी। लोगों के अनुरोध पर उन्होंने गर्म जल को शीतल में बदल दिया था। उसके बाद से ही यह गुरुद्वारा लोगों के लिए एक बेहतर धार्मिक स्थल के रूप में बदल गया। यहां पर लोग आने लगे और इस शीतल कुंड में स्नानकर लाभ लेने लगे। वहीं जब राजगीर में तीन सालों पर मलमास मेला लगता है तो इस पावन कुंड में ही शाही स्नान के दौरान साधु संतों का पहला स्नान होता रहा है। इस गुरुद्वारा की बाबा अजायब सिंह ने सालों तक सेवा की थी। वे एक रिटायर आर्मी मैन थे। बाबा अजायब सिंह ने वर्ष 2016 में मुक्ति पायी थी। मंत्री श्रवण कुमार ने कहा कि हमारी सभ्यता व संस्कृति में अतिथियों का स्वागत करने का प्रचलन पुराने समय से ही है। बिहार के गौरव को फिर से विश्व में फैलाना है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार तेजी से विकास कर रहा है। तख्त पटना साहेब श्री हरमंदिर जी के मैनेजर सरदार हरजीत सिंह ने बताया कि बाबा अजायब सिंह के आठवीं बरसी पर लंगर का भी आयोजन हुआ। इसमें सैंकड़ों लोगों ने प्रसाद पाया। भजन-कीर्त्तन करने वालों ने भी मत्था टेका। इस मौके पर जदयू नेता मुन्ना कुमार, त्रिलोक सिंह, मंजीत सिंह, गुरविंदर सिंह, सुखविंदर सिंह, रविन्द्र सिंह, राजन सिंह, अनिल सिंह, रामानुज सिंह, रामवतार सिंह सहित अन्य शामिल हुए।

पल्स पोलियो अभियान शुरू, 21 नवंबर तक चलेगा : मंगल

- जीरो से पांच वर्ष तक के बच्चों को पिलाई जाएगी पोलियो की खुराक
- नवजातों के पोलियो खुराक पर दिया जा रहा विशेष ध्यान

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने कहा कि हमारा देश पोलियो मुक्त राष्ट्र घोषित हो चुका है। वर्तमान में हमारे दो पड़ोसी देश अफगानिस्तान और पाकिस्तान में पोलियो वायरस का संक्रमण जारी है। इसके मद्देनजर राज्य में 17 नवंबर से 21 नवंबर तक पल्स पोलियो अभियान संचालित किया जा रहा है। इस दौरान जीरो से पांच वर्ष तक के बच्चों को पोलियो की खुराक दी जाएगी। यदि विश्व में कहीं भी पोलियो के संक्रमण का खतरा बना रहेगा, उस प्रभाव से राज्य में भी पोलियो के वायरस आने का खतरा बना रहेगा। इस खतरे से बचाव के लिए उच्च गुणवत्ता वाले पोलियो अभियान का संचालन तथा नियमित टीकाकरण के आच्छादन को शत- प्रतिशत लाभार्थियों तक पहुंचाना आवश्यक है।

श्री पांडेय ने कहा कि पल्स पोलियो अभियान के सफल संचालन के लिए जिला टास्क फोर्स की बैठक कर संबंधित तैयारियों का जायजा लिया गया था। अभियान के पूर्व सभी स्तर पर कार्यरत टीकाकर्मियों एवं पर्यवेक्षकों का शत- प्रतिशत प्रशिक्षण भी पूर्ण किया जा चुका है। सभी दल कर्मियों के पास पर्याप्त मात्रा में वैक्सीन की उपलब्धता भी सुनिश्चित हो इसके लिए संबंधित आवश्यक निर्देश दिए गए हैं। श्री पांडेय ने कहा कि मुख्य ट्रांजिट स्थलों जैसे बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन एवं चौक चौराहों से गुजरने वाले बच्चों पर विशेष ध्यान देते हुए उन्हें पोलियो की खुराक दी जाएगी। इसके साथ ही दूर -दराज के इलाकों के बच्चों के लिए विशेष निगरानी दल गठित कर पोलियो की दवा सेवन सुनिश्चित की गयी है। अभियान के प्रचार प्रसार के लिए भी आवश्यक आईईसी सामग्री तथा पोस्टर बैनर भी जिलों को उपलब्ध कराए गए हैं। बच्चों के स्वस्थ एवं सेहतमंद जिंदगी के लिए पोलियो का दवा का सेवन जरूरी है। पोलियो किसी बच्चे के स्थाई अपंगता का कारण बन सकता है। दो बूंद पोलियो की दवा से बच्चों के जीवन को सुरक्षित किया जा सकता है।

सूबे की स्वास्थ्य व्यवस्था पूरी तरह सुदृढ़ : उमेश

- राजद को अपना दौर जरूर याद करना चाहिए

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने रविवार को बयान जारी कर कहा कि स्वास्थ्य व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने की दिशा में नीतीश सरकार ने कई अहम कदम उठायें हैं जिसका सकारात्मक असर आज प्रदेश के सुदूर ग्रामीण इलाकों में नजर आता है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2005 तक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर प्रतिमाह औसतन महज 39 मरीज आते थे, वहीं वर्तमान में यह आंकड़ा बढ़कर 11 हजार से अधिक हो चुका है। श्री कुशवाहा ने कहा कि वर्ष लालू-राबड़ी के शासनकाल में बिहार का स्वास्थ्य व्यवस्था भगवान भरोसे था और प्राथमिक इलाज हेतु भी गरीबों को दर-दर भटकना पड़ता था। स्वास्थ्य व्यवस्था से संबंधित विषयों पर अनर्गल और अनावश्यक प्रलाप करने से पहले राजद को अपना दौर जरूर याद करना चाहिए। लालू परिवार ने सरकारी अस्पतालों को लूट का अड्डा बना दिया था। उन्होंने बिहार की स्वास्थ्य व्यवस्था को बीमार और बदहाल बनाने में कोई भी कोर कसर नहीं छोड़ा। प्रदेश अध्यक्ष ने आगे कहा कि वर्ष 2005 के मुकाबले शिशु मृत्यु दर, मातृ मृत्यु दर और नवजात मृत्यु दर में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई है। वर्तमान में बिहार का शिशु मृत्यु दर राष्ट्रीय औसत से भी कम है और यह व्यापक सुधार नीतीश सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति को दशार्ता है। साथ ही श्री उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि 5540.07 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल का 5462 बिस्तरों वाला दुनिया के सबसे बड़े अस्पताल के रूप में विस्तारित किया जा रहा है। साथ ही प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री के द्वारा दरभंगा एम्स का भी शिलान्यास किया गया है। आने वाले वर्षों में ये दोनों अस्पताल बिहार की स्वास्थ्य व्यवस्था में मील का पत्थर साबित होगा।

कांग्रेस संवैधानिक व्यवस्थाओं को भी भूली: अंजुम

पटना। जद यू प्रदेश प्रवक्ता अंजुम आरा ने मीडिया में जारी एक बयान में कांग्रेस पर तंज कसते हुए कहा कि कई सालों से आरजेडी की पिछलग्गू बनी कांग्रेस पार्टी और उसके नेता सांविधानिक व्यवस्थाओं को भी भूल गए। उन्होंने कहा कि आरजेडी के इशारों पर चलने वाली कांग्रेस और लालू प्रसाद यादव की कृपा पर कांग्रेस के अध्यक्ष बने अखिलेश प्रसाद सिंह महज राजनीतिक फायदे के लिए ओछी बयानबाजी कर लोगों को भ्रम में डालने की कोशिश कर रहे हैं। कांग्रेस पर तंज कसते हुए पार्टी प्रदेश प्रवक्ता ने कहा कि, दरअसल सालों से कांग्रेस, आरजेडी के निदेर्शों पर काम करती आयी है। उन्होंने कहा कि संविधान की व्यवस्थाओं को मजाक बनाने वाले लालू प्रसाद यादव के साथ काम करते-करते कांग्रेस के नेता शायद सरकार कैसे चलायी जाती है और उनके फैसले कैसे लागू किए जाते हैं, इन तथ्यों को भूल गयी। उन्होंने कहा कि बिहार की जनता ये कैसे भूल सकती है कि लालू प्रसाद यादव के शासनकाल के दौरान मुखे कानून चलता था जहां लालू प्रसाद के मौखिक आदेश ही चला करते थे और उन आदेशों का पालन करना अधिकारियों की मजबूरी होती थी लेकिन आज मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की सरकार संविधान की व्यवस्थाओं के तहत काम करती है जहां सरकारी फैसलों को अधिकारी नियमों और कानूनों के तहत लागू करते हैं। पार्टी प्रदेश प्रवक्ता ने आरोप लगाते हुए कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की सुशासन सरकार में महत्वपूर्ण फैसले सरकार की तरफ से कैबिनेट की बैठकों में लिए जाते हैं और अधिकारी उन फैसलों को लागू कराने में मदद करते हैं लेकिन कांग्रेस पार्टी के नेता शायद इन परंपराओं और व्यवस्थाओं को भूल गए और जान बूझकर सरकार के खिलाफ अनर्गल बयानबाजी में लगे हैं। उन्होंने कहा कि बिहार के विकास में दिन-रात काम करने वाली मुख्यमंत्री नीतीश कुमार सरकार के खिलाफ जब विपक्षी पार्टियों के पास कोई मुद्दा नहीं मिला तो कांग्रेस सहित तमाम पार्टियां ओछी राजनीति करने पर उतर आयी हैं।

सूबे में चिकित्सा और शिक्षा व्यवस्था चौपट : एजाज

पटना। बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के प्रवक्ता एजाज अहमद ने कहा कि बिहार में चिकित्सा और शिक्षा व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा चुका है । तभी तो 18 वर्षों तक शिक्षा के क्षेत्र में सेवा देने वाले शिक्षकों को सक्षमता परीक्षा पास करने के बाद उन्हीं को पुनः नियुक्ति पत्र दिया जा रहा है जो अपनी सेवा 18 वर्षों तक बच्चों को पढ़ाने में दिए। वहीं दूसरी ओर एनएमसीएच में इलाज कराने आए मरीज की मौत के बाद आंखें गायब हो जाती है और चिकित्सा के द्वारा परिवार के पूछने पर कहा जाता है कि चूहा आंख ले गया। एजाज ने आगे कहा कि बिहार में किस तरह से शिक्षा और चिकित्सा व्यवस्था चल रही है यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है की सरकार के स्तर से शिक्षा और चिकित्सा व्यवस्था को सुधारने की दिशा में कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है ,जिससे छात्रों का भविष्य खराब हो रहा है मरीज का इलाज की जगह उनकी आंखें गायब हो जा रही। इस तरह की शिक्षा और चिकित्सा व्यवस्था के बाद भी डबल इंजन सरकार पूरी तरह से मौज में है क्योंकि उन्हें अपने जवाबदेही का बोध नहीं है।

बिहार की स्वास्थ्य व्यवस्था को हुई शर्मसार : आप

पटना। पटना के नालंदा मेडिकल कॉलेज में फंटूश कुमार नामक मरीज की मौत के बाद उनकी बाईं आंख गायब होने की घटना पर आम आदमी पार्टी ने सूबे की स्वास्थ्य व्यवस्था पर सवाल उठाया है। आम आदमी पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता बबलू प्रकाश ने कहा कि इस घटना ने बिहार की स्वास्थ्य व्यवस्था को शर्मसार कर दिया है। अस्पताल प्रबंधन का यह कहना कि संभव है, चूहा आंख कुतर गया हो, लापरवाही और असंवेदनशीलता का परिचायक है। क्या बिहार के अस्पताल अब अंग तस्करों के लिए सुरक्षित अड्डे बन गए हैं? चूहे का बहाना बनाकर क्या सरकार मानव अंग तस्करी पर पर्दा डालना चाहती है? आम आदमी पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी राजेश सिन्हा ने कहा, यह घटना सिर्फ एक लापरवाही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य तंत्र में गहराई तक फैले भ्रष्टाचार और संभावित अपराध का सबूत है। यदि यह मानव अंग तस्करी का मामला निकला, तो यह पूरे राज्य के लिए राष्ट्रीय शर्म की बात होगी। आम आदमी पार्टी सरकार से मांग करती हैः घटना की उच्चस्तरीय और निष्पक्ष जांच कराई जाए। मानव अंग तस्करी की संभावना की गहन जांच हो। दोषियों पर सख्त कार्रवाई और पीड़ित परिवार को न्याय दिया जाए। यह घटना स्वास्थ्य तंत्र की अंधी व्यवस्थाओं और भ्रष्टाचार का शर्मनाक उदाहरण है। आम आदमी पार्टी बिहार की जनता के साथ खड़ी है और दोषियों को सजा दिलाने के लिए हर कदम उठाएगी।

जदयू के प्रदेश प्रकोष्ठ अध्यक्षों की हुई समीक्षात्मक बैठक

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना। जदयू प्रदेश कार्यालय में रविवार को पार्टी के प्रकोष्ठ अध्यक्षों की समीक्षात्मक बैठक आहूत की गई। जिसमें 24 नवम्बर से 15 दिसंबर तक चलने वाले जदयू जिला स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन को सफल बनाने हेतु महत्वपूर्ण बिंदुओं पर गहन चर्चा हुई। बैठक में मुख्य रूप से मौजूद विधानपार्षद सह कोषाध्यक्ष ललन कुमार सर्राफ, विधानपार्षद संजय कुमार सिंह उर्फ गांधी जी एवं प्रदेश महासचिव सह मुख्यालय प्रभारी (स्थापना) चंदन कुमार सिंह ने सभी प्रकोष्ठ अध्यक्षों को जरूरी दिशा-निर्देश दिए। साथ ही इस मौके पर प्रो नवीन आर्य चंद्रवंशी भी मौजूद रहे। इस बैठक में अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष सह पूर्व सांसद चंदेश्वर प्रसाद चंद्रवंशी, श्रम एवं तकनीकी प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष ई रामचरित्र प्रसाद, महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश अध्यक्ष डॉ भारती मेहता, युवा प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष नीतीश पटेल, अनुसूचित प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष राजेश त्यागी, अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष जनाब अशरफ अंसारी, किसान एवं सहकारिता प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष मनोज कुमार, चिकित्सा प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष डॉ एलबी सिंह, मीडिया सेल के प्रदेश अध्यक्ष मनीष कुमार, व्यवसायिक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष धनजी प्रसाद, छात्र प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष राधेश्याम, अनुसूचित जनजाति प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष सुरेन्द्र उरांव शामिल हुए।

शिशिर कौण्डिल्य को प्रदेश प्रवक्ता बनाए जाने पर कांग्रेस जनों ने दी बधाई

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

कांग्रेस पार्टी की ओर से लगातार टीवी डिबेट में भाग लेने वाले शिशिर कौण्डिल्य को पार्टी ने बिहार प्रदेश का प्रवक्ता नियुक्त किया है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने इस बाबत शनिवार को इसकी अधिसूचना जारी कर दी। इधर,प्रदेश प्रवक्ता की घोषणा होते ही उन्हें बधाई देने वालों का तांता लग गया। शिशिर कौण्डिल्य को बधाई देते हुए जाने माने शिक्षाविद् एवं बिहार प्रदेश कांग्रेस के पॉलिटिकल अफेयर कमिटी के सदस्य डॉक्टर चंद्रिका प्रसाद यादव ने कहा कि श्री कौण्डिल्य बड़ी ही बेबाकी से टीवी चैनलों पर पार्टी का पक्ष रखने के लिए जाने जाते हैं। उन्हें पार्टी के प्रवक्ता पद पर नियुक्ति से मीडिया में पार्टी का पक्ष रखने में पार्टी को मजबूती मिलेगी। सही वक्त पर सही व्यक्ति के चुनाव के लिए उन्होंने पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह का भी आभार जताया। इधर, पटना जिला के पूर्व जिला अध्यक्ष डॉ आशुतोष शर्मा एवं कांग्रेस वार रूम के को-चेयरमैन राज छविराज ने भी एक बयान जारी कर शिशिर कौण्डिल्य को बधाई देते हुए कहा कि इनकी नियुक्ति से राहुल जी और खड़गे जी की विचारधारा को मीडिया के माध्यम से फैलाव में मजबूती मिलेगी। बधाई देने वालों में कांग्रेस सेवा दल के प्रदेश अध्यक्ष डॉ संजय यादव, पूर्व विधान पार्षद लाल बाबू लाल,जहानाबाद जिला अध्यक्ष गोपाल शर्मा, पटना जिला अध्यक्ष शशिरंजन, सुमित कुमार सनी, पूर्व जिला अध्यक्ष खलील अंसारी, उपेंद्र कुशवाहा,नगर परिषद जहानाबाद के पूर्व अध्यक्ष नजमुल होदा अंसारी, जहानाबाद नगर अध्यक्ष सरवर सलीम, रजक समाज की नेत्री सुधा रजक, जाने माने दलित चिंतक एवं कांग्रेस सेवा दल के सोशल मीडिया के प्रमुख अशोक प्रियदर्शी, बबलू शर्मा, राकेश शर्मा आदि प्रमुख थे।

पीएम मोदी के संकल्पों को पूरा करने का आधार हैं कार्यकर्ता: रणबीर

सासाराम, प्रातः किरण। भाजपा रोहतास जिला संगठन पर्व की कार्यशाला को संबोधित करते हुए पूर्व विधान पार्षद और भाजपा के वरिष्ठ नेता,रोहतास जिला भाजपा के चुनाव प्रभारी प्रो. रणबीर नंदन ने कहा कि भाजपा अगर लगातार तीन लोकसभा चुनावों में सफलता प्राप्त करती है तो इसके पीछे सबसे बड़ा सहयोग भाजपा के कार्यकताओं के हैं। भाजपा कार्यकताओं ने ही पीएम मोदी के कार्यकाल में हुए कार्यों को जन जन तक पहुंचाया, जिसके कारण भाजपा को लगातार जनता पसंद कर रही है। आज देश का हर आदमी अपने बैंक अकाउंट से पेमेंट कर रहे हैं और रिसीव भी कर रहे हैं।

यह सबकुछ जो हो सका है यह भाजपा की सरकार में माननीय प्रधानमंत्री की दूरदर्शी सोच के कारण संभव हो सका है। भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने का यह बड़ा तरीका है। प्रो. नंदन ने कहा कि रोहतास जिला में 35 मंडल है। 263 शक्ति केंद्र हैं। 2354 बूथ हैं और 7 विधानसभा सीट है।

उन्होंने जिला के कार्यकताओं को बधाई देते हुए कहा कि आपके अथक प्रयास से लगभग 1.5 लाख से उपर सदस्य इस जिले में बने हैं। इसलिए हमारा दायित्व बनता है कि तीन से चार दिनों के अंदर सभी मंडलों की बैठक संपन्न कर लें और शक्ति केंद्र एवं बूथ समिति का गठन कर तय समय पर मंडल के गठन की प्रक्रिया प्रारंभ कर लें। जिससे हमारी मजबूती सातों विधानसभा में हो एवं भविष्य में किसी भी समय चुनाव होने पर हम सभी सीटों को जीतें।

नि:शुल्क चिकित्सा शिविर में सैंकड़ों की हुई जांच

पटना। अग्रवाल चैरिटेबल ट्रस्ट एवं भगवती प्रसाद केशरी देवी चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आज शक्तिधाम, बैंक रोड, पटना में निःशुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। मौके पर ट्रस्ट के सचिव अमर कुमार अग्रवाल ने बताया कि अग्रवाल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रत्येक माह के तीसरे रविवार को यह चिकित्सा शिविर आयोजित होता है। मौके पर भगवती प्रसाद केशरी देवी चैरिटेबल ट्रस्ट के पी के अग्रवाल ने बताया कि ट्रस्ट द्वारा प्रत्येक माह विभिन्न स्थानों पर स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किये जाते हैं। अग्रवाल ने बताया कि आज के इस चिकित्सा शिविर में कुल 112 मरीजों ने अपनी जांच करवाई। अग्रवाल ने बताया कि सभी मरीजों को निःशुल्क चाय बिस्कुट दिया गया। शिविर में डॉ बी के अग्रवाल द्वारा हेपेटाइटिस की जांच की गई। शिविर में इसके अतिरिक्त हेपेटाइटिस इ की जांच के लिए 20 मरीजों का खून लिया गया. मौके पर शिविर में 57 मरीजों के आँखों की जांच प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक डा शशि मोहनका द्वारा किया गया। इनमे 11 मरीजों का मोतियाबिंद काफी बढ़ा हुआ था। डा मोहनका ने बताया की इनका निःशुल्क फेको विधि द्वारा आपरेशन श्याम मंदिर, न्यूबहादुरपुर के पास स्थित श्री बालाजी नेत्रालय में किया जाएगा। आज 23 मरीजों को निःशुल्क चश्मा भी उपलब्ध कराया गया। मौके पर डॉ सुनील अग्रवाल ने चेस्ट एवं सामान्य बीमारी के करीब 21 मरीजों की जांच की वहीं डॉ अर्चना जैन ने महिला मरीजों की जांच की। आँखों के अतिरिक्त मधुमेह की जांच डॉ सुभाष कुमार के द्वारा की गयी जिसमे 19 लोगों में मधुमेह पाया गया। सभी मरीजों को मधुमेह की दवा निःशुल्क दी गयी। डा कुमार ने बताया कि मधुमेह रोगियों की संख्या काफी तेजी से बढ़ रही है। मौके पर शिविर में 12 लोगों के दांतों की जांच डॉ नितिन मैतिन द्वारा की गयी जिसमे 9 लोगों के दांत में बीमारी पाई गयी। मौके पर होमियोपैथिक विशेषज्ञ डॉ कन्हैया अग्रवाल द्वारा भी 19 मरीजों को विभिन्न बीमारियों की दवा दी गयी। एम पी जैन ने बताया कि शिविर को सफल बनाने में मुख्य भूमिका अमर कुमार अग्रवाल, अक्षय अग्रवाल, सूर्य नारायण, श्रवण अग्रवाल, रितेश तुलस्यान, तरुण हिसारिया, शशांक अग्रवाल, रमेश अग्रवाल एवं अन्य पदाधिकारियों की रही।

सर्वधर्म समभाव और जनहित पर यकीन रखती है कांग्रेस : अखिलेश

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

झारखंड विधानसभा के अंतिम दौर के चुनाव को लेकर दो दिवसीय झारखंड दौरे पर गए बिहार कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा किया कि कांग्रेस सर्वधर्म समभाव में यकीन रखती है। हम सनातनी परम्परा में राम के पुजारी हैं और भाजपा राम के व्यापारी हैं। हमने लगातार देश में एकता और अखंडता को मजबूत किया है और भाजपा ने देश को सांप्रदायिक आधार पर बांटने का काम किया है। देवघर में संवाददाताओं को संबोधित करते हुए बिहार कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि हमारी झारखंड की सरकार ने 200 यूनिट बिजली मुफ्त देने पर काम किया और आने वाले दिनों में हम और भी जनहित के योजनाओं को लागू करेंगे। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष व राज्यसभा सांसद डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने दो तिहाई सीटों पर महागठबंधन के जीत का दावा किया और कहा कि मतदान में हम सब को चट्टानी एकजुटता के साथ सांप्रदायिक ताकतों को उखाड़ फेंकना है। अंतिम चरण में प्रत्याशियों के पक्ष में लगातार चुनावी कैंपेन का बिहार कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने नेतृत्व किया और सघन जनसंपर्क भी चलाया। उन्होंने कहा कि देश में अराजकता के माहौल को बना लोगों को डराकर चुनाव में मतदान कराने की कोशिश करने वाली भाजपा को रोकना जरूरी है। झारखंड का चुनाव अहम देश के लिए अहम साबित होगा और इससे आने वाले साल में बिहार के चुनाव की भी आधारशिला रखी जाएगी। इंडिया गठबंधन भाजपा के नीतियों के खिलाफ लड़कर जनादेश प्राप्त करेगा और झारखंड में सुख, समृद्धि वाली सरकार स्थापित करेगा। झारखंड के संसाधनों पर पहला हक यहां के आदिवासियों और मूलनिवासियों का है और मेहनतकश जनता के लिए ही हम काम करते आएं हैं और करते रहेंगे। प्रदेश कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़ ने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह झारखंड के अंतिम चरण के चुनाव को लेकर दो दिवसीय चुनावी दौरे पर कई विधानसभा क्षेत्रों में पार्टी और गठबंधन के सहयोगी दलों के लिए चुनाव प्रचार करेंगे।

आंख निकालने की घटना की उच्च स्तरीय जांच हो : भाकपा

पटना। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय ने नालंदा मेडिकल कॉलेज सह अस्पताल पटना में मृत युवक की आंख निकालने की घटना पर चिंता व्यक्त करते हुए उच्च स्तरीय जांच कराने की मांग की है। यह घटना मानव अंग तस्करी का मामला प्रतित हो रहा है। तस्कर और सरकार की मिलीभगत से इस तरह की घटना घटना होती है। भाकपा राज्य सचिव ने रविवार को बयान जारी कर कहा कि नालंदा के चिकसौरा थाना क्षेत्र के हुड़ारी गांव के 22 वर्षीय फंटूस कुमार को गोली से जख्मी होने के बाद 14 नवंबर को एनएमसीएच की आईसीयू में भर्ती कराया गया। इलाज के दौरान 15 नवंबर की रात करीब नौ बजे उसकी मौत हो गयी। उसके बाद आंख निकाल ली गई। जिस पर डॉक्टर बोले कि आंख चूहा खा गया। बिहार में पहले बांध चूहा तोड़ देता था, अब लाश की आंख चूहा खा जा रहा है। इससे शर्मनाक घटना क्या हो सकती है। एनएमसीएच की घटना सरकार की घोर लापरवाही है। इस घटना से लग रहा है कि पहले भी इस तरह की घटना हुई है और मानव अंग की तस्करी होती है है। इसलिए मामले की उच्च स्तरीय जांच कराई जाए और दोषी पदाधिकारी पर सख्त कार्रवाई की जाये।

बेबी कॉर्न की खेती से फायदा ही फायदा : संजय

बोलें-ड्रोन से कीटनाशी का छिड़काव आसान

- सेंटर ऑफ एक्सीलेंस चंडी में किसानों के लिए क्रॉप कैलेंडर तैयार किया जाय
- कोको पीट का राज्य के अंदर तैयार करने की व्यवस्था को प्रोत्साहित किया जाय

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने मुख्यालय के पदाधिकारियों के साथ सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, चंडी का भ्रमण किया। सेंटर पर प्रिसिजन फार्मिंग के तहत पॉलीहाउस, शेडनेट और पॉली टनल में लगे हुए सीडलेस खीरा, चेरी टमाटर, शिमला मिर्च तथा खेत प्रक्षेत्र में लगे हुए सब्जियों की जानकारी ली। साथ ही,सेंटर पर उद्यान निदेशालय द्वारा अनुदानित दर पर किसानों को उपलब्ध कराए जाने वाले सब्जियों के पौध रोपण सामग्री तथा हार्डनिंग की स्थिति का जायजा लिया। सचिव कृषि ने उद्यान निदेशालय के पदाधिकारियों को पौध रोपण तैयार करने के लिए आवश्यक कोको पीट राज्य के अंदर बनाना का निर्देश दिया। किसानों के लिए सेंटर ऑफ में क्रॉप कैलेंडर तथा सेंटर पर स्वीट कॉर्न, बेबी कॉर्न, खरीफ में प्याज, स्ट्रॉबेरी का पौध रोपण सामग्री तैयार करने का निर्देश दिया। किसानों के लिए खुले प्रक्षेत्र में विभिन्न प्रकार के बीज तैयार करने के लिए आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

बेबी कॉर्न की खेती से फायदा ही फायदा :

सचिव कृषि विभाग द्वारा दीपनगर, बिहारशरीफ में बेबी कॉर्न उत्पादक महिला किसानों से बेबी कॉर्न के उत्पादन में मुनाफा के बारे मे जानकारी ली।

महिला किसानों से सचिव कृषि को बताया कि बेबी कॉर्न का फसल दो महीने तैयार हो जाता हैं, पहले से ही वे होटल संचालकों से मार्केटिंग के लिये बात हो चुका है, इसलिए बाजार में बिक्री की कोई दिक्कत नहीं है। सचिव कृषि द्वारा महिला किसानों के साथ बेबी कॉर्न की क्रॉप कटिंग किया गया।

जैविक खेती का प्रचार प्रसार :

महिला किसानों ने बताया कि नाडेप विधि से जैविक खाद तैयार कर खेतों में उपयोग किया जाता है ।सचिव कृषि ने पदाधिकारियों को निर्देश दिया कि जैविक खेती का ज्यादा से ज्यादा प्रचार प्रसार किया जाय। बेबी कॉर्न के प्रक्षेत्र दिवस पर आयोजित किसान पाठशाला का उद्घाटन किया । सचिव कृषि द्वारा अखिलेश कुमार तथा बेबी कॉर्न के किसान समूह द्वारा प्रक्षेत्र दिवस पर आयोजित किसान पाठशाला में किसानों को संबोधित किया। महिला किसानों द्वारा हाथ उठाकर बेबी कॉर्न की खेती करने के लिये अपनी सहमति दिया।

ड्रोन से कीटनाशी का छिड़काव आसान :

सचिव कृषि द्वारा गोभी के खेत में ड्रोन से कीटनाशी के छिड़काव का निरीक्षण किया गया।

पूंजीवादी व्यवस्था पर आम जनो के समस्यों का सामाधान नहीं :आनन्द

भारत के वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में समाजवाद की भूमिका विषय पर विचार गोष्ठि

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश कार्यालय में भारत के वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में समाजवाद की भूमिका विषय पर राजद द्वारा आयोजित विचार गोष्ठि को मुख्य वक्ता के रूम में संबोधित करते हुए बीएसयू एवं जेएनयू के छात्र संघ के अध्यक्ष रहे, जेएनयू के पूर्व प्रध्यापक, प्रख्यात समाजशास्त्री, समाजवादी चिंतक प्रो आनन्द कुमार ने कहा कि पूंजीवादी व्यवस्था में आम जनों के समस्याओं का सामाधान संभव नहीं है। बल्कि इस व्यवस्था में आम लोगों से संबंधित समस्ये और भी बढती ही जाती है। प्रदेश अध्यक्ष जगदानन्द सिंह की अध्यक्षता में आयोजित को संबोधित करते हुए डॉ आनन्द कुमार ने कहा कि लोकतांत्रिक समाजवाद ही एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें लोगो के समस्यों का समाधान हो पायेगा। आज लोगों के सामने महंगाई, कमाई, दवाई और पढाई ही मुख्य समस्या हैं। पिछले कुछ वर्षो में देश के अन्दर पूंजीवादी व्यवस्था को संरक्षण एवं प्रोत्साहन मिल रहा है। उसका दूष परिणाम आम लोगों को भुगतना पढ रहा है। इससे आर्थिक विषमता बढती जा रही है। शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में नीजी करण को बढावा मिल रहा है। सार्वजनीक उपकरमों को नीजी हाथों में सौंपा जा रहा है जिससे महंगाई और बेरोजगारी बढती जा रही है। शिक्षा और स्वास्थ्य आम लोगों के पहुच से बाहर होते जा रहा है। उन्होंने कहा कि आज विकास, सुशासन, वैधानीकता, जनतंत्र, राष्ट्रनिर्माण, नागरिकता का निर्माण एवं पर्यावरण संकट के दौर से गुजर रहा है। चुनावी व्यवस्था में मनी पावर मिडिया पावर एवं मशल पावर का प्रभाव बढता जा रहा है। जनतंत्र में संवाद महत्वपूर्ण होता है और संवाद में आलोचना भी हो सकती है। पर आज संवाद से आलोचना गायब हो गया है। राष्ट्र निर्माण के नाम पर धार्मिक भावनाऐं भडकाई जा रही है। धर्म को राष्ट्रीयता का आधार बनाने की कोशिष हो रही है। युवा राजद के प्रदेश अध्यक्ष राजेश यादव ने डॉ मनोज को अंग वस्त्र देकर समान्नित किया। विचार गोष्ठि के समापन पर मुख्याल प्रभारी श्रीमति मुकुन्द सिंह ने संगोष्ठी में भाग लेने वाले सभी साथियों को धनवाद किया। विचार गोष्ठि में डॉ मनोज, प्रदेश प्रवक्ता चिरंजन गगन, मुख्यालय प्रभारी मुकुन्द सिंह, प्रदेश महासचिव, भाई अरूण, डॉ प्रेम कुमार गुप्ता, प्रमोद राम, निर्भय अम्बेदकर, युवा राजद प्रदेश अध्यक्ष राजेश यादव, छात्र राजद के प्रदेश अध्यक्ष, गगन कुमार यादव, महिला राजद के प्रदेश उपाध्यक्ष अनीता भारती, युवा राजद के शिवेन्द्र कुमार तांती आदि साथी उपस्थित हुए।

संक्षिप्त खबरें

निर्दलीय प्रत्याशी की हार्टअटैक से मौत

मुजफ्फरपुर। तिरहुत स्नातक उपचुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी राजेश कुमार रौशन की रविवार की सुबह हार्टअटैक से मौत हो गई। उन्होंने शुक्रवार को निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में नामांकन दाखिल किया था। राजेश कुमार रौशन की हुई अचानक मौत के बाद परिजनों के बीच कोहराम मचा हुआ है, परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो रहा है।सनद रहे कि इन दिनों तिरहुत स्नातक उप चुनाव को लेकर नामांकन दाखिल करने की प्रक्रिया चल रही है जिसमें बीते दिनों माधोपुर सुस्ता निवासी राजेश कुमार रौशन द्वारा निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में अपना नामांकन दाखिल किया था।

शराब मामले में दो व्यक्ति गिरफ्तार,स्कूटी व बाइक जब्त

मधुबनी जिला मुख्यालय से सटे रहिका थाना पुलिस ने कांड मे फरार शराब कारोबारी को गुप्त सुचना के आधार पर गिरफ्तार कर लिया है.बताते चले की रहिका थाना मे शराब बरामदगी मामले मे चार माह पूर्व मे देशी नेपाली शराब के साथ एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत मे भेज दिया गया था जबकि उक्त कांड मे एक जस स्कूटी के मालिक अभी तक फरार चल रहा था. रहिका थानाध्यक्ष ने बताया की यह गिरफ्तारी गुप्त सुचना के आधार पर छापेमारी कर कांड मे फरार स्कूटी मालिक चन्दन कुमार यादव को गिरफ्तार कर लिया गया वही अन्य एक और शराब कारोबारी को गुप्त सुचना के आधार पर 17.5लीटर देशी चुलाई शराब के साथ मोटर साईकिल व स्कूटी बरामद कर एक कारोबारी रामाशीष मुखिया ग्राम बेलाही ढंगा थाना कलुआही जिला मधुबनी को गिरफ्तार कर लिया गया जबकि अन्य कारोबारी भागने मे सफल रहा. गिरफ्तार दोनों शराब कारोबारी को न्यायिक हिरासत मे लेने हेतु व्यवहार न्यायालय मधुबनी भेज दिया गया. मौके पर एसआई श्याम चंद्र झा के साथ अन्य पुलिस बल मैजूद थे.

डीएम ने किया पल्स पोलियो अभियान की शुरूआत

समस्तीपुर, डीएम रोशन कुशवाहा ने द्वारा रविवार को एचडब्ल्यूसी पोखरैरा में नवजात शिशु को दो बूंद पोलियो ड्रॉप पिला कर पांच दिवसीय पल्स पोलियो कार्यक्रम आगाज किया गया। इस दौरान सिविल सर्जन डॉ एस चौधरी, डीआईओ डॉ विशाल कुमार, सदर अस्पताल के डीएस डॉ गिरीश कुमार उपस्थित थे। बताया गया कि बीते 13 सालों से भारत में पोलियो का एक भी मामला नहीं आया है। लेकिन पड़ोसी देश में अभी भी मामले सामने आ रहे हैं, जिसके कारण खतरा रहता है। इससे बचाव के लिए अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के माध्यम से सभी से बच्चों को पोलियो ड्रॉप पिलाने की अपील की गई है। बता दें कि पल्स पोलियो कार्यक्रम 17 नवंबर से 21 नवंबर तक चलेगा। चार लाख से अधिक बच्चों को पोलियो ड्राप पिलाने का लक्ष्य रखा गया है।

नवनिर्मित झंडोतोलन मंच का एसपी सुशील कुमार के द्वारा किया गया उद्घाटन

शहर को जाम से निजात को लेकर बहुत जल्द ट्रैफिक पुलिस बल की तैनाती की जाएगी

प्रात:किरणसंवाददाता

मधुबनी जयनगर रविवार को मधुबनी पुलिस अधीक्षक सुशील कुमार जयनगर थाना परिसर में नव निर्मित झंडोतोलन मंच के उद्घाटन व थाना का निरीक्षण को लेकर थाना परिसर पहुँचे। पुलिस कप्तान सुशील कुमार को पुलिस बल के द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। इसके पश्चात थाना परिसर में नव निर्मित झंडोतोलन मंच का एसपी सुशील कुमार के द्वारा फीता काटकर उद्घाटन किया गया। उद्घाटन समारोह कार्यक्रम के पश्चात एसपी सुशील कुमार के द्वारा थाना परिसर का निरीक्षण कर जायजा लिया। निरीक्षण के क्रम महिला हेल्प डेस्क सिरिस्ता हाजत कम्प्यूटर कक्ष थाना अध्यक्ष कक्ष सिरिस्ता कक्ष भवन महिला हेल्प डेस्क पर तैनात महिला पुलिस पदाधिकारी से विस्तृत जानकारी लेते हुए अभिलेख का अवलोकन जांच करते हुए कई आवश्यक दिशा निर्देश दिए। परिसर में रखे जब्त वाहनों का भी निरीक्षण कर जाएज़ा लिया और जब्त वाहनो के को लेकर भी दिशा निर्देश दिए। वही पुलिस पदाधिकारियो को अभिलिखो का जिन बिंदुओं के संधारण नहीं हैं जल्द संधारित करने साथ ही लंबित कांडो का जल्द निष्पादित करने कांडो के उद्भेदन फरार वारंटियो की गिरफ्तारी कुर्की अभिलेखो सम्बन्धित कागजातो को दुरूस्त रखने और बढ़ रहे ठंड कुहासे को देखते हुए दिवा संध्या और रात्रि सघन गस्ती बढ़ाने और स्थान बदल बदल कर अभियान के तहत सघन वाहन चेकिंग करने, बॉर्डर क्षेत्र होने को लेकर आने जाने वालों लोगों की गतिविधियों पर नजर बनाये रखने, एसएसबी के साथ समन्वय स्थापित कर जॉइंट पेट्रोलिंग करने, क्षेत्र में असमाजिक तत्वों और अफवाह फैलाने वालों सोशल मीडिया पर पैनी नजर रखने मध निषेध के तहत अभियान के तहत कार्रवाई करने। विधि व्यवस्था बनाये रखने पराध नियंत्रण को लेकर कई आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जेल से छूटे अपराधियों के गतिविधियो पर पैनी नजर रखने को कहा गया। निरीक्षण के क्रम में साफ सफाई थाना परिसर में लगाये गये पौधो एकता वन मिथिला पेंटिंग का भी निरीक्षण जायजा लिया। साफ सफाई सौंदर्यीकरण से संतुष्ट दिखे। एसपी सुशील कुमार ने कहा कि शहर को जाम की समस्या से निजात दिलाने को लेकर ट्रैफिक पुलिस पदाधिकारी को निर्देश दिए गये है बहुत जल्द ट्रैफिक पुलिस पदाधिकारी के द्वारा क्षेत्र के विभिन्न जगहो को चिन्हित कर ट्रैफिक पुलिस की तैनाती की जाएगी। पर्यावरण प्रकृति के संरक्षण व बीमारियों से दूरी को लेकर स्वच्छता अपनाने पौधों का रौपन्न कर सींचने संरक्षण करने व सौदर्यीकरण कि अपील एसपी सुशील कुमार के द्वारा किया गया। मौके पर जयनगर डीएसपी विप्लव कुमार, एसडीएम वीरेंद्र कुमार, सदर डीएसपी राजीव कुमार, बेनीपट्टी डीएसपी निशि कांत भारती, प्रशिक्षु डीएसपी सह जयनगर थाना अध्यक्ष अंकुर कुमार, सर्किल इंस्पेक्टर संजय कुमार सिंह, इंस्पेक्टर मो. सरवर आलम, इंस्पेक्टर बीडी राम, इंस्पेक्टर राज नंदन कुमार, अपर थानाध्यक्ष गोपाल कृष्ण, महिला हेल्प डेक्स पुलिस पदाधिकारी हिरा मणि, एसआई फहीम खान, मुकेश कुमार, शेष नाथ प्रसाद, संतोष कुमार, अनुपम कुमारी समेत कई पुलिस पदाधिकारी कर्मिगण उपस्थित थे।

नवंबर क्रांति की 107वीं वर्षगांठ पर जुलूस एवं सभा आयोजित

प्रात: किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर ।महान नवंबर क्रांति की 107वीं वर्षगांठ पर एस यू सी आई (कम्युनिस्ट) की ओर से मुजफ्फरपुर शहर में एक सुसज्जित जुलूस निकाला गया ।जुलूस जिला कार्यालय से निकलकर छोटी कल्याणी, जवाहरलाल रोड, तिलक मैदान रोड होते हुए पुणः पार्टी कार्यालय में पहुंचा। जुलूस में लोग वैज्ञानिक समाजवाद जिंदाबाद ,पूंजीवाद विरोधी समाजवादी क्रांति जिंदाबाद, वैज्ञानिक समाजवाद के प्रणेता सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड लेनिन- स्टालिन लाल सलाम ,दुनिया के मेहनतकशों एक हो आदि रोषपूर्ण नारा लगा रहे थे। जुलूस के बाद जिला कार्यालय के समक्ष लाल झंडा फहराकर झंडा को सलामी दी गई ।इसके उपरांत एक सभा का आयोजन किया गया। सभा को संबोधित करते हुए एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के केंद्रीय कमिटी सदस्य सह राज्य सचिव अरुण कुमार सिंह ने कहा कि दुनिया में सबसे पहले सोवियत रूस के अंदर लेनिन के नेतृत्व में 1917 में 7 से 17 नवंबर की अवधि में पूंजीवाद विरोधी समाजवादी क्रांति सफलीभूत हुई और सर्वप्रथम रूस के अंदर राजसत्ता पर मजदूरों का राज कायम हुआ। क्रांति के कुछ ही दिन बाद यूरोप का मरीज कहे जाने वाला देश सोवियत रूस से बेरोजगारी, भ्रष्टाचार ,अश्लीलता, भुखमरी, बिजली की कमी जैसी तमाम मूलभूत समस्याओं का खात्मा कर दिया और आत्मनिर्भर देश बन गया। इसके पहले सर्वप्रथम 1871 में फ्रांस में क्रांति हुई लेकिन 3 माह बाद ही सैकड़ों मजदूर नेताओं को फांसी दे दिया और क्रांति विफल हो गई ।लेकिन सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड लेनिन और स्टालिन के नेतृत्व में मार्क्सवाद से सीख लेते हुए रूस में क्रांति हुई। उन्होंने कहा कि आज दुनिया में पूंजीवाद मरणासन्न अवस्था में है ।जिससे आम जनता का जीवन तंगहाली में गुजर रहा है ।महंगाई, बेरोजगारी, छंटनी ,तालाबंदी सहित तमाम समस्याएं भारत सहित पूरी दुनिया में मौजूद है ।इसके खिलाफ जनता छिटपुट आंदोलन भी कर रही है लेकिन कोई आमूल चूल परिवर्तन नहीं हो रहा है ।आज पूरी दुनिया में मार्क्सवाद लेनिनवाद के आधार पर मजदूरों को संगठित होकर पूंजीवाद विरोधी समाजवादी क्रांति करने की जरूरत है तभी जीवन की तमाम मूलभूत समस्याओं का समाधान हो पाएगा ।इन समस्याओं का समाधान पार्लियामेंट्री डेमोक्रेसी के माध्यम से कतई संभव नहीं है । यह दुनिया के सामने सर्वहारा के महान नेता का कामरेड लेनिन ने क्रांति करके दिखाया था। नंबर क्रांति से सीख लेकर हम लोगों को भी पूंजीवाद विरोधी समाजवादी क्रांति के परिपूरक जनवादी आंदोलन खड़ा करने की जरूरत है। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला सचिव अर्जुन कुमार ने किया। सभा को जिला कमिटी सदस्य योगेंद्र राम, मोहम्मद इदरीश, काशीनाथ सहनी, नरेश राम ,लालबाबू सहनी, लाल बाबू राय,कुमोद राम सहित दर्जनों लोगों ने संबोधित किया।

बिहार के नव निर्माण कर्ता नीतीश कुमार के पार्टी से जुड़ना गर्व कि बात : माधव झा

प्रात: किरण संवाददाता

दरभंगा। रहमगंज सेक्टर कि वार्ड 38 में महराजगंज पोखर निकट सेक्टर वार्ड अध्यक्ष जमीदुल अंसारी के आवसीय परिसर सेक्टर अध्यक्ष घनश्याम श्रीवास्तव के अध्यक्षता में हुआ ।बैठक में मुख्य अथिति के रूप में दरभंगा नगर जिलाध्यक्ष माधव झा और विधानसभा प्रभारी धर्मेन्द्र साह उपस्थित थे ।बैठक को सम्बोधित करते हुए धर्मेन्द्र साह ने कहा कि हमारी पार्टी कि हर सेक्टर और वार्ड में पार्टी के नेता द्वारा जनता को माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के द्वारा चलाये जा रहे जनकल्याणकारी योजना को जनता को बताना हैं और उसका लाभ पंहुचाना हैं ।माधव झा ने कहा कि बिहार के नव निर्माण करता मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली पार्टी से जुड़ कर काम करना गर्व कि बात हैं हमारे नेता द्वारा सात निश्चय योजना 1,और 2 मे पुरे समाज के उत्थान के लिए कार्य किया जा रहा इसलिए हम सबको पार्टी में लोगो को जोड़ कर पार्टी को हर वार्ड में और मजबूत बनाना हैं।

बैठकको सम्बोधित करने वालों में ई दिपक कुमार सिन्हा,ठाकुर ईश्वर प्रसाद सिंह, डॉ मंजूर आलम रायन, अशरफ,जमींदुल अंसारी, गोपाल प्रसाद, राजेश कुमार राजा,अरविंद झा,अभिषेक कुमार झा,मोहम्मद फिरोज सहित दर्जनों साथी उपस्थित थे।

लक्ष्मीपुर प्रखंड में पैक्स चुनाव हेतु नामांकन प्रारंभ

प्रात :किरणसंवाददाता

जमुई जिले के लक्ष्मीपुर प्रखंड अंतर्गत 13 पंचायतों में से 10 पंचायत में पैक्स चुनाव होना है। जिसके लिए रविवार 17 नवम्बर से नामांकन प्रारंभ हो गया है। वहीं प्रेम प्रकाश प्रखंड विकास पदाधिकारी सह निवार्ची पदाधिकारी ने बताया कि पैक्स चुनाव 2024 के लिए 04 काउंटर बनाया गया है।01 नम्बर काउंटर पर 10 पंचायतों के पैक्स अध्यक्ष पद पर अपना अपना नामांकन पत्र दाखिल करेंगे। वहीं प्रबंध समिति सदस्य पद पर 02 नम्बर ,03 नम्बर और 04 नम्बर काउंटर पर अंकित पैक्स हेतु नामांकन पत्र दाखिल करेंगे। इस कार्य के लिए प्रत्येक टेबल पर एआरओ प्रतिनियुक्त है। अध्यक्ष पद के टेबल पर लेवर इंस्पेक्टर विकास कुमार हैं और प्रबंध समिति सदस्य पद पर नामांकन पत्र लेने हेतु प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी धर्मेन्द्र कुमार, प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी तारकेश्वर मिश्र, प्रखंड कृषि पदाधिकारी कपिल देव पासवान प्रतिनियुक्त है। प्रखंड विकास पदाधिकारी सह निवार्ची पदाधिकारी प्रेम प्रकाश ने बताया कि 17 नवम्बर से नामांकन शुरू हुआ है। रविवार को पहले दिन नजारी पैक्स चुनाव हेतु अध्यक्ष पद पर वर्तमान अध्यक्ष श्याम सुंदर दास ने नामांकन कराया। वहीं 2019के पैक्स चुनाव में दुसरे स्थान पर रहे सुरेन्द्र कुमार सत्यार्थी ने अपने समर्थकों के साथ काउंटर नम्बर 01 पर एआरओ सह लेवर इंस्पेक्टर विकास कुमार के समक्ष अपना अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। वहीं खिलार पंचायत के नावाबांध पैक्स से अध्यक्ष पद पर मदन यादव ने अपने समर्थकों के साथ नामांकन पत्र दाखिल किया। प्राथमिक कृषि साख सहयोग समिति पैक्स चुनाव हेतु प्रबंध समिति सदस्य पद पर नावाबांध पैक्स से गौतम दास, देवनन्दन यादव और संतोष कुमार उर्फ संतोष यादव ने नामांकन पत्र दाखिल किया। वहीं नजारी पैक्स से जय प्रकाश यादव ने नामांकन पत्र दाखिल किया। ज्ञात हो कि लक्ष्मीपुर प्रखंड के 10 पैक्सों में नामांकन 17 से 19 नवम्बर को नामांकन करेंगे और 20 नवम्बर को अध्यक्ष पद और 21 नवम्बर को प्रबंध समिति सदस्य पद की संवीक्षा होगी।22 नवम्बर को अभ्यर्थी अपना नामांकन पत्र वापस ले सकते हैं,23 नवम्बर को प्रतिक चिन्ह आवंटित किया जाएगा और 01 दिसम्बर को मतदान होगा और उसी दिन मतगणना भी प्रखंड मुख्यालय में होगी।

बिहार सरकार के ग्रामीण कार्य विकास मंत्री ने किया क्षेत्र का दौरा

कल्याणपुर, प्रात: किरण संवाददाता

बिहार सरकार के ग्रामीण कार्य विकास मंत्री अशोक चौधरी ने रविवार को प्रखंड क्षेत्र के कई गांव का दौरा कर जगह-जगह उपस्थित लोगों से उनकी समस्याओं से अवगत हुए। मंत्री ने सोमनाहा, मदनपुर,झहुरी, कोयलाकुंड व रामपुरा पूर्व जदयू अध्यक्ष केसरी कुमार मेहता के यहां गए। मदनपुर गांव में पूर्व मुखिया प्रोफेसर मदन मोहन ठाकुर, पूर्व आत्मा अध्यक्ष मदनेश माधवन, झहुरी गांव में पूर्व भाजपा मंडल अध्यक्ष देव शंकर ठाकुर के यहां लोगों की समस्या सुनी। मौके पर संगम कुमार गौतम कुमार, हेमंत कुमार ठाकुर, भाजपा मंडल अध्यक्ष विजय शंकर ठाकुर, पूर्व मुखिया विजय शर्मा, खरसंड पूर्वी मुखिया राजू सिंह, रामविलास राम, जीविका जिला अध्यक्ष कुमार अनुपम, पूर्व सांसद अश्वमेघ देवी, अनिल कुमार सिंह, मनरेगा कार्यक्रम पदाधिकारी महेश कुमार भगत, शिव शंकर ठाकुर, कृष्ण गोपाल शर्मा सहित काफी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

मानवता व अध्यात्म के विरल संगम थे पत्रकार विनय अग्रवाल : प्रो.जयशंकर

प्रात: किरण संवाददाता

दरभंगा ।जन-सरोकार के लिए प्रतिबद्ध रहे आजीवन ।निर्भीक पत्रकारिता के आदर्श बने रहे विनय बाबू ।उक्त बातें बंगलागढ़ स्थित डेंटल सेवा सदन परिसर में प्राकृतिक चिकित्सा योग संस्थान तथा आई-पैथ लैब के संयुक्त तत्वावधान में प्रख्यात पत्रकार विनय कुमार अग्रवाल की 13वीं पुण्यतिथि पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा सह निःशुल्क चिकित्सा शिविर की अध्यक्षता करते हुए माँ श्यामा न्यास समिति के उपाध्यक्ष प्रो.जयशंकर झा झा ने कहीं। आगे प्रो.झा ने कामेश्वरी प्रिया पूअर होम,गौशाला,श्यामा मन्दिर आदि से विनय बाबू के गहरे जुड़ाव की विस्तार से चर्चा की। मुख्य अतिथि दंत चिकित्सक डॉ बी बी वर्मा ने विनय बाबू को पत्रकार के साथ-साथ मानवतावादी बताते हुए पत्रकारों की समकालीन पीढी.को उनसे सीख लेने की बात कही । साथ ही उन्होंने उनके परिवार से किसी सदस्य के पत्रकारिता के क्षेत्र में आने को वास्तविक श्रद्धांजलि की संज्ञा दी। विशिष्ट अतिथि अभय कुमार कश्यप ने उनके सामाजिक कार्यों को शिद्दत से याद किया ।वार्ड पार्षद सोनी पूर्वे ने उन्हें अपना अभिवावक बताते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किया। लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरी के सचिव प्रो.तरुण मिश्र,स्व अग्रवाल की सुपुत्री डॉ.अंजू अग्रवाल, पत्रकार दीपक कुमार झा, सुशांत भास्कर, डॉ.शशिभूषण गुप्ता,पत्रकार प्रमोद कुमार गुप्ता,संतोष दत्त झा,मनोज कुमार झा आदि ने भी संबोधित किया ।अतिथियों द्वारा समेकित रूप से दीप प्रज्वलन से प्रारंभ हुए इस कार्यक्रम का संचालन डॉ.मित्रनाथ झा ने किया ।धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कला संस्कृति युवा विभाग के राज्य परामर्शदात्री सदस्य उज्ज्वल कुमार ने किया। मौके पर प्रो.मधुरंजन प्रसाद,प्रो.ममता अग्रवाल, डॉ.अभिषेक,डॉ. शैलेश कुमार झा,त्रिलोक अग्रवाल,उमाशंकर अग्रवाल,गुंजन अग्रवाल,उषा अग्रवाल,उमा अग्रवाल,सुपर्न शर्मा,संदीप अग्रवाल,सिंटू अग्रवाल,मिंटू अग्रवाल,प्रशांत अग्रवाल आदि मौजूद थे ।निःशुल्क चिकित्सा शिविर में लगभग 200 मरीजों की दंत चिकित्सा,मधुमेह, रक्तचाप एवं अन्य जांच के उपरांत निःशुल्क दवा मुहैया करायी गयी। चिकित्सा शिविर के सफल आयोजन में संजीव कुमार,पंकज कुमार,नितेश कुमार के साथ- साथ रूपेश कुमार,राम धनी, महेश कुमार,वैद्यनाथ कुमार मंडल तथा शिवम की महती भूमिका रही।

सदर अस्पताल में पल्स पोलियो अभियान का डीडीसी ने किया शुभारंभ

प्रात: किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर ।उप विकास आयुक्त श्रेष्ठ अनुपम ने सदर अस्पताल में एक दिन के नवजात बच्चे को पोलियो की खुराक पिलाकर पल्स पोलियो अभियान का शुभारंभ किया। विदित हो कि यह कार्यक्रम 17 नवंबर से 21 नवंबर तक चलाया जाएगा। इसके बाद एक दिन छूटे हुए बच्चों को पोलियो की खुराक दी जाएगी। जिलाधिकारी श्री सुब्रत कुमार सेन ने कहा है कि पोलियो की खुराक से एक भी लक्षित बच्चा वंचित न रहे , इसकी सख्त हिदायत दी है। उन्होंने जिलावासियों से जन्म से लेकर पांच वर्ष आयुवर्ग के सभी बच्चों को पोलियो की खुराक अवश्य पिलाने की अपील की है । उन्होंने सभी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी को हाट बाजार, खानाबदोश साइट, ईंट भट्ठा पर चक्र के दौरान टीम द्वारा दो बार विजिट करने का निर्देश दिया है ताकि कोई भी लक्षित बच्चे छूटे नहीं। उन्होंने सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी को अपने अपने प्रखंडों में आशा , एएनएम, सेविका सहायिका, जीविका दीदी आदि के माध्यम से प्रचार- प्रसार कर लोगों को जागरूक एवं प्रेरित करने तथा पोलियो खुराक की दो बूंद अवश्य पिलाने को कहा है। जिलाधिकारी द्वारा सिविल सर्जन, सदर अस्पताल की पूरी टीम सहित सभी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी के साथ बैठक कर पल्स पोलियों अभियान का सफल एवं सुचारू संचालन करने एवं सभी आवश्यक तैयारी एवं सुदृढ़ व्यवस्था रखने का निर्देश दिया गया है। इसके लिए सभी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी को अपने-अपने प्रखंड में इस अभियान से संबद्ध टीम के प्रतिदिन के कार्यों की प्रभावी मॉनिटरिंग करने तथा संध्या में समीक्षा कर शत प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करने का सख्त निर्देश दिया गया है। इस कार्यक्रम में लगभग आठ लाख बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने का लक्ष्य है । इसके लिए 1798 घर-घर टीम, 283 ट्रांजिट टीम, 62 मोबाइल टीम,768 सुपरवाईजर को प्रशिक्षित कर लगाया गया है। साथ ही 166 सब डीपो बनाये गये हैं जहां से टीका कर्मी वैक्सीन एवं आइस पैक का उठाव तथा वापसी करेंगे। इस कार्यक्रम में सिविल सर्जन डॉ अजय कुमार,एसीएमओ डा सी एस प्रसाद, चिकित्सा पदाधिकारी एमसीएच, एसएमसी यूनिसेफ शशि कान्त सिंह सहित कई अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

आरक्षण हक अधिकार राजनीतिक भागीदारी ले कर रहेंगे अखिल भारतीय पान महासंघ

जयनगर की विशाल रैली में उमड़ी भीड़ पटना चलने का किया गया आह्वाहन

प्रात: किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर अखिल भारतीय पान महासंघ के द्वारा रविवार को जयनगर प्लस टू उच्च विद्यालय के खेल मैदान में संघ के तत्वावधान में पान समाज के आरक्षण समेत अन्य मांगो को लेकर पान समाज के लोगों की विशाल रैली का आयोजन किया गया। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ई आई पी गुप्ता का भव्य स्वागत कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दिप प्रज्वलित कर राष्ट्र गान के साथ हुआ। सरकार के खिलाफ यह आंदोलन किया जा रहा हैं ।बिहार विधानसभा चुनाव से पहले नीतीश सरकार को घेरने के लिए ये आंदोलन किया जा रहा है। यह आंदोलन बापू की धरती चंपारण से शुरू होकर रविवार को जयनगर कि धरती पर यह रथ पहुंची। यह आंदोलन 6 अक्तूबर 2024 को बापू की धरती चंपारण से शुरू होकर आज मिथिलांचल के पावन भूमि जगत जननी माता सीता के नगरी के समीप भारत नेपाल अवस्थित जयनगर उच्च विद्यालय में हाकों रथ के बस पहुंची है। 23 मार्च 2025 को गांधी मैदान में खत्म होगा। इस दौरान बिहार के 9 प्रमंडल के बड़े-बड़े जिलों में 10 रैलियां होंगी ।आखिरी रैली पटना के गांधी मैदान में 23 मार्च 2025 को होगी। उस दिन पूरे पटना को पान समाज के लोग पाट देंगे ।अगर सरकार नही मानेगी तो समाज के लोग थाली से नमक छीन लेंगे। तब पता चलेगा कि पान समाज के लोगों के पास कितनी शक्ति है। बता दें कि बिहार सरकार ने 2 जुलाई 2015 को तांती ततवा जाति को अनुसूचित जाति का दर्जा दिया था। इसके बाद से इस जाति के लोगों को सरकारी नौकरियो में आरक्षण का लाभ मिल रहा था। लेकिन भीम आंबेडकर विचार मंच ने सरकार के इस फैसले को हाईकोर्ट में चुनौती दी थी। हाईकोर्ट ने राज्य सरकार के फैसले को बरकरार रखा था। इसके बाद मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा। सुप्रीम कोर्ट ने 15 जुलाई 2024 को अपने फैसले में तांती-ततवा जाति को अनुसूचित जाति की सूची से बाहर कर दिया। उन्होने कहा कि हमारे समाज की प्रदेश में आबादी 80 लाख है और जातिगत गणना में उसे अलग-अलग बांटकर कम दिखाया गया है। अगर सरकार इस समाज को हितेशी होती तो वह केन्द्र सरकार पर आरक्षण वापसी के लिए अध्यादेश लाने का दवाब देती या सुप्रीम कोर्ट में रिभ्यू आवेदन देती मगर सरकार ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने कहा कि हमारी आवाज उठाने के लिए चारो सदन में से कहीं भी हमारा प्रतिनिधि नही है। जबकि हमारी आवादी 150 विधान सभा क्षेत्रों में 5 से 75 हजार तक है। इसलिए हमारे समाज को एकजुट रहने का संकल्प लेकर अपनी आबाज को बुलंद करना होगा। साथ ही उन्होंने कहा कि आजादी के 75 वर्ष बीते जाने के बाद से पान - जाति के लोगों को सरकार ने हाशिये पर रखा है, जब तक हम टुकड़े-टुकड़े में बंटे रहेंगे तब तक हमें अधिकार से वंचित रखा जायेगा। इसलिए हमें संगठित होना होगा। अंत में उन्होंने पान समाज के लोगों को अनुसूचित जाति का दर्जा देने की मांग की है। इससे पूर्व महारैली में पान समुदाय के वरिष्ठ नेता रवीन्द्र तांती व अन्य विभूतियो को श्रद्धांजलि अर्पित कि गई और 13 मार्च 2025 को पटना के ऐतिहासिक गांधी मैदान में बड़ी रैली होगी जिसमें समाज के सभी वर्ग के लोग बड़ी संख्या में शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि सरकार के द्वारा आरक्षण की वापसी के कारण समाज के राष्ट्रगीत के साथ प्रेरक गीत भी गाई गई। इस अवसर पर शशि भूषण तांती प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष, राम अधीन दास राष्ट्रीय महासचिव,राम बाबू दास जिला कोषाध्यक्ष,राम प्रसाद दास जिला उपाध्यक्ष ,इंदु देवी लोक गायिका,पलट दास,दिनेश दास खुटौना, फेकन दास पान सीतामढ़ी उपाध्यक्ष समेत हजारों के जन सैलाव में पान समुदाय के लोग उपस्थित होकर रैली को सफल बनाने में योगदान दिया। विशाल रैली में बड़ी संख्या में पान समाज के लोगो ने भाग लिया।

महाराष्ट्र में बनेगी भाजपा की बहुत की सरकार : डा गोपाल जी ठाकुर

प्रात: किरण संवाददाता

दरभंगा ।देश के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी जी तथा केंद्र की इंडिया सरकार की दूरगामी सोच के कारण आज आर्थिक सामरिक आंतरिक तथा हर मोर्चे पर भारत की प्रतिष्ठा देश ही नही बल्कि विश्व स्तर पर स्थापित हुई है। मोदी जी की नितियों का ही परिणाम है कि पूरे महाराष्ट्र में भाजपा यहां की जनता की पहली पसंद है। यहां के लोगों ने फिर से महाराष्ट्र में भाजपा की सरकार बनना तय है। दरभंगा के सांसद सह लोकसभा में भाजपा के सचेतक डा गोपाल जी ठाकुर ने महाराष्ट्र के कांदिवली विधानसभा में एनडीए २ें१३ँ३ भाजपा उम्मीदवार अमित भातखलकर के समर्थन में विभिन्न मोहल्लों और वार्डो में जनसंपर्क चलाने के बाद उपरोक्त बातें कही हैं ।आज रविवार को वार्ड 36 की नगर सेविका रक्षा पाटिल के नेतृत्व में एक बैठक कर भाजपा उम्मीदवार के लिए चुनावी प्रबंधन के विभिन्न मुद्दो पर चर्चा की गई तथा विशाल मतों से जीत सुनिश्चित करने के लिए अनेक निर्णय लिए गए।

सांसद डा ठाकुर ने विभिन्न मोहल्लों में लोगों को अपने संबोधन में कहा कि कांदिवली विधानसभा में बिहार के मिथिला क्षेत्र सहित उत्तर पूर्व के मतदाताओं की बहुसंख्यक आबादी है और इस क्षेत्र के लोगों से बातचीत के क्रम में यह स्पष्ट हुआ कि इन मतदाताओं की पहली पसंद भाजपा है।

पैक्स अध्यक्ष पद के लिए सात उम्मीदवार ने किया नामांकन

कल्याणपुर, प्रात: किरण संवाददाता

प्रखंड मुख्यालय पर रविवार को प्रथम दिन प्रखंड मुख्यालय में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच प्रखंड विकास पदाधिकारी सह प्रखंड निर्वाचन पदाधिकारी देवेंद्र कुमार की देखरेख में सात पंचायतों के पैक्स अध्यक्ष पद के लिए नामांकन किया। नामांकन करने वालों में बेलसंडी पंचायत के अध्यक्ष पद के लिए राम किशन साह, वासुदेवपुर पैक्स अध्यक्ष पद पर संजय कुमार,मालीनगर के लिए प्रियंका कुमारी,गोविंदपुर खजूरी के लिए हीरा खान, बरहेता नवीन कुमार देव,कुढवा पैक्स के लिए सुनदेश्वर राय, खरसंड पश्चिमी से सुनील राय,ने अपने-अपने समर्थक के साथ नामांकन किया। इस अवसर पर बासुदेवपुर के सरपंच सुधीर सहनी, पूर्व मुखिया चंद्रगुप्त शर्मा, गुड्डू कुशवाहा, किशोरी राय, रामदेव महतो, बिहार राय, नितिन विनिशे राय सहित दर्जनों समर्थक मौजूद थे। नामांकन के संबंध में प्रखंड विकास पदाधिकारी ने बताया कि दो दिन तक ओर नामांकन की प्रक्रिया चलेगी। नामांकन को लेकर प्रखंड में रविवार को तीन काउंटर लगी हुई थी। नामांकन में सुरक्षा की व्यवस्था को लेकर देखी गई।

संक्षिप्त खबरें

पैक्स चुनाव को ले नामांकन 19 से,बनाए गए 2 काउंटर

गिद्धौर। आगामी 3 दिसंबर को होने वाले पैक्स चुनाव को लेकर बीडीओ सह निवार्ची पदाधिकारी सुनील कुमार ने प्रखंड स्तरीय पदाधिकारियों व कर्मियों के साथ बैठक की। उन्होंने बताया कि प्रखंड के 4 पैक्स अध्यक्ष तथा प्रबंध समिति के सदस्यों के नाम निर्देशन की तिथि 19 से 21 नवंबर तक निर्धारित है। नामांकन के लिए प्रखंड कार्यालय में चार काउंटर बनाये गए है।प्रत्येक काउंटर पर दो-दो पंचायत के अभ्यर्थियों का नामांकन लिया जाएगा।काउंटर संख्या 1 में सहायक निवार्ची पदाधिकारी सह प्रखंड कृषि पदाधिकारी रामाधार चौधरी के अलावा 4 कर्मियों को प्रतिनियुक्त किया गया है।इस काउंटर पर रतनपुर,पतसंडा का नामांकन होगा।काउंटर नंबर 2 पर सहायक निवार्ची पदाधिकारी सह प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी शिवपूजन कुमार की देखरेख मौरा व गंगरा का नामांकन कराया जाएगा।प्रखंड निवार्ची पदाधिकारी ने बताया कि 22 एवं 23 नवंबर को नामांकन पत्रों की संमीक्षा की जायेगी।अभ्यर्थी 26 नवंबर तक अपना नाम वापस ले सकते है।

प्रखंड स्तरीय रबी कार्यशाला सह प्रशिक्षणकार्यक्रमका हुआआयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/लक्ष्मीपुर:-जमुई कृषि प्रोद्योगिकी प्रबन्ध अभिकरण आत्मा के सौजन्य से प्रखंड मुख्यालय में अवस्थित ई किसान भवन में रविवार 17 नवम्बर को प्रखंड कृषि पदाधिकारी कपिल देव पासवान की अध्यक्षता में प्रखंड स्तरीय रबी कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रमोद कुमार सिंह के०भी०के० के वरिष्ठ वैज्ञानिक साथ ही साथ विशिष्ट अतिथि मनोज कुमार सिंह बी०टी०एम एवं नीधि कुमारी और धर्मेन्द्र कुमार ए०टी०एम उपस्थित हुए और संयुक्त रूप दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रखंड कृषि पदाधिकारी कपिल देव पासवान ने बताया कि कृषि विभाग के द्वारा सरकारी अनुदान राशि पर रबी सीजन का बीज उपलब्ध है। संबंधित किसान सलाहकार से मिलकर अनुदानित दर पर बीज प्राप्त कर सकते हैं। जिसका अनुदानित दर चना 41-80, मसूर 27-00 , सरसों और मटर 25-00 रुपए प्रति किलोग्राम है। वहीं केभीके के वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रमोद कुमार सिंह उपस्थित किसानों को रबी फसल की बुआई से संबंधित विस्तृत जानकारी दी। जैसे गेहूं के कई प्रभेद की जानकारी दी।10 नवम्बर से 30 नवम्बर तक डीबीडब्ल्यू 187 जिसे कर्ण बंधन भी कहते हैं और एचडी 2967 प्रभेद की गेंहू लगाते हैं तो उपज अच्छी होती है। दिसम्बर माह में पीबीडब्ल्यू 502,343 और 443 प्रभेद के गेंहू का बीज लगाते हैं तो उत्पादन अच्छी होती हैं। इसलिए सही समय पर बीज की बुआई कर 100,% उत्पादन करें। उन्होंने ने कहा कि आज कृषि क्षेत्र में नई तकनीक, उन्नत बीज, उर्वरक का इस्तेमाल एवं फसलों को अच्छी देखभाल कर उत्पादकता को बढ़ाया जा रहा है। क्यों कि हमारे देश के किसान भारत की आत्मा है। जैसा कि आप जानते हैं कि कृषि के विकास से ही देश का समग्र विकास संभव है। इस कार्यक्रम में प्रखंड कृषि समन्वयक रौशन देव मिश्रा,करम राज, रविन्द्र कुमार,सीम्मी सिन्हा, किसान सलाहकार समिति के अध्यक्षा उषा कुमारी, किसान सलाहकार कौशल किशोर, सुभाष कुमार सिंह,विभाष चन्द्रा, प्रदीप कुमार सिंह, सुबोध पंडित, संतोष पासवान,रवि कुमार दास, सत्यनारायण रविदास एवं चन्द्र शेखर आजाद के साथ ही साथ मटिया, आनन्दपुर,गौरा,चिनवेरिया, मड़ैया, हरला,नजारी,काला जिनहरा, दिग्धी,खिलार, ककनचौर एवं मोहनपुर पंचायत के किसानों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। जिसमें संजय यादव,संटू यादव, अजय सिंह,बमबम सिंह,लक्ष्मण कुमार, नन्दलाल यादव, शंभू मंडल, उमेश कुमार, सदानंद सिंह, अनिल पांडेय एवं अन्य किसान उपस्थित रहे।

किसानों ने किसान भवन में चना का बीज नही मिलने से किया प्रदर्शन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] रबी फसल के बीज वितरण को लेकर रविवार को प्रखंड कार्यालय परिसर स्थित किसान भवन में दर्जनों किसानों को चना का बीज नही मिलने के कारण जमकर बबाल काटते हुए प्रदर्शन किया। सुबह 8 बजे से किसान बीज को लेने के लिए कतार में लग गया परन्तु बीज दोहपर 1 बजे तक नही मिलने के कारण किसान आक्रोशित हो उठा और प्रदर्शन करना शुरू कर दिया। प्रदर्शन कर रहे किसान गोपाल यादव, कपिल यादव, सुरजी देवी, रंजन यादव, देवकी देवी आदि ने बताया कि बीते दो दिन से हमलोगों को चना का बीज नही दिया जा रहा है और किसान सलाहकार श्रवण कुमार हमलोगों को रविवार को बीज लेने की बात करते हुए बुलाया। जब रविवार की सुबह हमलोग बीज लेने के लिए लाइन में लग गए तो किसान सलाहकार का कुछ अता पता नही। उनसे सम्पर्क किया तो वह हमेशा आ रहे हैं कि बात करते रहे। वही कुछ लोगों के द्वारा पता चला कि वह ताला लगाकर किसान भवन से निकल चुका है। किसानों ने कहा कि हमलोग घर का कामकाज छोड़कर यहां चना का बीज लेने के लिए आ रहे हैं लेकिन हमलोगों को बीज नही मिल रहा है। किसानों ने कहा कि बीज सही समय पर नही मिला तो सही समय खेती नही हो पायेगा। किसानों ने कहा कि अगर कृषि विभाग का रवैया इसी तरह किसानों के प्रति रहेगा तो हमलोग चरणबद्ध तरीके से आंदोलन।

जातीय अल्पसंख्यक मोर्चा का हुआ गठन संजय केशरी बने संस्थापक अध्यक्ष

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर। धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों की तर्ज पर चार प्रतिशत से कम आबादी वाले सभी जातियों को जातीय अल्पसंख्यक का दर्जा दिलाने के संकल्प के साथ दो नंबर गुमटी पुअर हाउस के सामने प्रख्यात पत्रकार चन्द्रशेखरम की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में जातीय अल्पसंख्यक मोर्चा का गठन किया गया जिसके संस्थापक अध्यक्ष संजय केशरी बनाए गए। इस अवसर पर संजय केशरी ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि जब देश में धार्मिक आधार पर धार्मिक अल्पसंख्यक है और जब देश में भाषाई आधार पर भाषाई अल्पसंख्यक है तो फिर हमारे देश में जातीय आधार पर जातीय अल्पसंख्यक क्यों नही है। वार्ड आयुक्त राकेश तिवारी एवं दिलीप तांती ने कहा कि बिना अपवाद के सभी राजनीतिक दलों की राजनीति का आधार ही जातीय राजनीति है लेकिन उसके बाद भी किसी राजनीतिक दल ने आज तक चार प्रतिशत से कम आबादी वाले जातियों को जातीय अल्पसंख्यक का दर्जा देने की पहल नहीं की। श्री राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना के प्रदेश उपाध्यक्ष राम कुमार सिंह ने जातीय अल्पसंख्यक मोर्चा को पूर्ण समर्थन देते हुए कहा कि यह समय की मांग है। भारतीय किसान यूनियन के प्रदेश उपाध्यक्ष संजय कुमार सिंह ने कहा कि जातीय अल्पसंख्यक मोर्चा में सवर्ण, पिछड़ा, अतिपिछड़ा एवं दलित सभी कम आबादी वाले जातियों को राजनीति तथा आर्थिक संरक्षण मिलेगा।। इस अवसर पर अनेकों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मच्छरों के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए नगर पंचायत में लगातार की जा रही फॉगिंग

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। संग्रामपुर नगर पंचायत में नगर वासियों को मच्छरों के आतंक से निजात दिलाने की दिशा में नगर पंचायत प्रशासन ने कार्रवाई शुरू कर दी है। मच्छर भगाने के लिए नगर पंचायत संग्रामपुर के विभिन्न वार्डों में मच्छर रोधी दवा का छिड़काव शुरू कर दिया गया है। कार्यपालक पदाधिकारी मनीला राज के नेतृत्व में नगर पंचायत के प्रत्येक वार्ड में संध्या के समय प्रतिदिन डबल साइलेंसर वाली फागिंग मशीन से मच्छर रोधी दवा का छिड़काव कराया जा रहा है। बताते चलें कि मच्छर जनित रोगों सहित डेंगू जैसे घातक बीमारी का प्रभाव अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी देखने को मिल रहा है। जिसको ध्यान में रखते हुए बढ़ते मच्छरों के प्रभाव से नगर वासियों को निजात दिलाने के लिए यह कदम उठाई गई है। कार्यपालक पदाधिकारी मनीला राज ने कहा कि बदलते मौसम में मच्छरों का आतंक बढ़ गया है। ऐसे में लोग मच्छर जनित रोगों का शिकार हो रहे हैं। इसे देखते हुए नगर पंचायत के विभिन्न वार्डों में प्रतिदिन फागिंग मशीन से मच्छर रोधी दवा का छिड़काव किया जा रहा है। आगे भी समय-समय पर नगर पंचायत में फॉगिंग का कार्य जारी रहेगा। मुख्य पार्षद नीलम देवी ने कहा कि नगर पंचायत में क्रमवार तरीके से मच्छर रोधी दवा का छिड़काव फागिंग मशीन के जरिए किया जा रहा है। वही साफ सफाई सहित दवा के छिड़काव शुरू होने से मच्छरों के आतंक से नगर वासियों को राहत मिलेगी। मौके पर स्वच्छता पर्यवेक्षक जयप्रकाश, उपमुख पार्षद मनोज शाह, समाजसेवी नंदकिशोर यादव, वार्ड पार्षद राजेश केसरी, मुकेश कुमार, कुमारी दीपिका, वंदना कुमारी, राधा देवी, सरोजनी देवी सहित अन्य मौजूद थे।

दो दिवसीय मल्टी डिसिप्लिनरी नेशनल सेमिनार हुआ संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर(कोर्ट)। आरएस कॉलेज तारापुर में दो दिवसीय मल्टी डिसिप्लिनरी नेशनल सेमिनार का दूसरे दिन कार्यक्रम होने के बाद समापन हुआ। इसकी अध्यक्षता आर एस कॉलेज के प्राचार्य डॉक्टर यू एस दास के नेतृत्व में हुआ मंच संचालन डॉ अश्वनी कुमार ओझा ने किया मल्टी डिसिप्लिनरी सेमिनार के डायरेक्टर एन कुमार आईसी एसआरडी बेंगलुरू कर्नाटका उन्होंने कहा कि इस सेमिनार को सफल बनाने में कॉलेज प्रशासन एवं छात्र छात्रों का मुझे बहुत ही सहयोग एवं प्यार मिला है । कॉलेज के प्राचार्य डॉक्टर यू एस दास ने कहा कि छात्रों को पढ़ाई के साथ-साथ तकनीकी के क्षेत्र में अपना योगदान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्राध्यापक एवं छात्र-छात्राओं ने अपना काफी योगदान रहा है इसके लिए उन्हें धन्यवाद देता हूं ऑर्गनिजर सेक्रेटरी प्रोफेसर पूर्णिमा गुप्ता उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि मल्टी डिसिप्लिनरी नेशनल सेमिनार इस आरएस कॉलेज तारापुर में हुआ इसके लिए मैं आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूं । इसके अलावा प्राध्यापक एवं छात्र-छात्राओं को मेडल एवं सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर उपस्थित प्रोफेसर अर्चना कुमारी प्रोफेसर सविता कुमारी प्रोफेसर संतोष कुमार प्रोफेसर जसीम राजा प्रोफेसर बसंत कुमार सिंह इसके अलावा छात्र एवं छात्राएं अंकित कुमार सूरज कुमार अनिकेत कुमार अभिषेक कुमार मंतशा खातून माफिया खातून नाजिया खातून कॉलेज के पूर्व एन एस एस आईकॉन मोहम्मद अखलाक उद्दीन ने कहा कि देश में पॉल्यूशन की समस्या से निपटने के लिए आज हम सभी को सोचने की जरूरत है। समापन समारोह में कॉलेजके अध्यापक कर्मचारी गण छात्र और छात्रा सहित अभिभावक मौजूद थे।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकताओं ने बिहार बाल संरक्षण आयोग के सदस्य को अंग वस्त्र देकर किया स्वागत

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर।बिहार बाल संरक्षण आयोग के सदस्य बनने के उपरांत विभागीय दौरे पर मुंगेर से बांका जाने के क्रम में रविवार को हवेली खड़गपुर आए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद बिहार के पूर्व प्रदेश संगठन मंत्री, बिहार भाजपा के प्रदेश सह कार्यालय मंत्री डॉ सुग्रीव दास का नगर के हवेली खड़गपुर अंबेडकर चौक पर विद्यार्थी परिषद के वर्तमान एवं पूर्व कार्यकताओं के द्वारा अंग वस्त्र एवं फूल माला से उत्साह पूर्वक स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। इस दौरान डा सुग्रीव दास ने डॉ भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया किया ,तत्पश्चात उन्होंने नगर परिषद स्थित आश्रय स्थल का भी जायजा लिया साथ ही उन्होंने कई आवश्यक निर्देश दिए। इस दौरान बिहार बाल संरक्षण आयोग के सदस्य डॉ सुग्रीव ने सभी कार्यकताओं का आभार व्यक्त किया। साथ ही उन्होंने सभी कार्यकार्ताओं से कहा कि मोबाइल की वजह से बच्चे एवं छात्र युवा बर्बाद हो रहे हैं उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि बच्चे एवं छात्र युवा 7 से 8 घंटे मोबाइल में बेवजह व्यस्त हैं जिस वजह से अपने परिवार से दूर हो रहे हैं। लोगो को इसके लत से बच्चों को बचाने की जरूरत है एवं समाज के लोगों को भी इसके लिए जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है। इस मौके पर विद्यार्थी परिषद के पूर्व कार्यकर्ता उप मुख्य पार्षद दीपक यादव, सौरभ सिंघानिया, सत्यम कुमार निराला, विक्की रॉय,राजीव नयन,रवि सिंह, सोनू केसरी,सौरभ झा,अविनाश केसरी, सैलब झा सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

डीआरएम आसनसोल ने झाझा पहुंचकर यातायात परिचालन से सम्बंधित ली जानकारी

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] आसनसोल रेलवे डिवीजन के डीआरएम अपने डिवीजन क्षेत्र के पड़ने वाले स्टेशनों का निरीक्षण करते हुए रविवार को अपने विशेष सैलून से झाझा स्टेशन पहुंचा। डीआरएम चेतनानंद सिंह झाझा पहुंचने के बाद स्टेशन प्रबंधक रविकांत माथुरी, यातायात निरीक्षक रवि गुप्ता से रेलवे परिचालन से सम्बंधित कई तरह की जानकारी लिया। डीआरएम ने स्टेशन प्रबंधक से आसनसोल डिवीजन से आने वाले रेलवे गाड़ियों के परिचालन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी लेते हुए उन्होंने मालगाड़ी के अलावा अन्य सवारी गाड़ी के बारे में भी विस्तार पूर्वक जानकारी लिया। डीआरएम ने अपने साथ चल रहे अधीनस्थ अधिकारियों से भी इस पर गहन-विचार विमर्श करते हुए इसका जानकारी लिया । डीआरएम ने अपने विशेष सैलून से दानापुर ओर आसनसोल डिवीजन के शुरूआती छोर दुधीजोर से झाझा तक रेलवे ट्रैक का निरीक्षण किया। डीआरएम ने स्टेशन प्रबंधक से आसनसोल से आने और जाने वाली गाड़ियों के डिले होने वाली समस्याओं की जानकारी लिया। उन्होंने यह भी पूछा कि जो भी गाड़ी हमारे डिवीजन से झाझा इन करती है तो उसे दानापुर डिवीजन के पहले ही रोक दी जाती है। डीआरएम द्वारा परिचालन से जुड़े पूछे गए सवालों पर स्टेशन प्रबंधक ने विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि रेलवे ट्रैक का अभाव व विनियमन की कमी के कारण इस तरह का कारण होता है। मौके पर जसीडीह यातायात निरीक्षक यूपी गुप्ता, वरीय डीईएन2 वंदना राज, आसनसोल मंडल आरपीएफ कमांडेंट राहुल राज समेत कई उच्च अधिकारी मौजूद थे।

पुत्र ने मां की हत्या किये जाने का दर्ज करवाया प्राथमिकी

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] थानाक्षेत्र के चरघरा में शनिवार की शाम को एक महिला की हुई मौत पर उसके पुत्र के द्वारा थाना में गांव के कुछ लोगों पर हत्या का आरोप लगाकर प्राथमिकी दर्ज कराया है। दर्ज आवेदन में मृतिका के पुत्र जितेंद्र कुमार यादव ने बताया कि मेरी माँ सुकुमारी देवी को लाठी, डंडा, रॉड से मारपीट कर हत्या कर दिया गया। मारपीट करने में सिकंदर यादव,किशोरी यादव, सुभाष यादव, मुकेश यादव, विनेश यादव, किशोरी यादव की पत्नी, फूलवंती देवी के अलावे अन्य 4-5 अज्ञात लोग शामिल हैं। प्राथमिकी दर्ज होने के बाद थानाध्यक्ष संजय कुमार ने बताया कि प्राथमिकी दर्ज करने के बाद छानबीन की कार्रवाई की जा रही है।

हॉकी के वूमेन्स एशिया चैम्पियन ट्रॉफी के मुख्य अतिथि शामिल होकर चांदनी ने क्षेत्र का नाम रोशन किया

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। कॉमनवेल्थ गेम्स सहित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा में पदक जीतकर प्रखंड क्षेत्र के बलिया पंचायत के सुपौल जमुआ निवासी चंदन कुमार सिंह नहीं कई बार क्षेत्र के लोगों को गौरवान्वित होने का अवसर प्रदान किया है। रविवार को बिहार के राजगीर में आयोजित हॉकी के वुमेन्स ऐशियन चैम्पियन ट्रॉफी के पहले मैच में बतौर मुख्य अतिथि शामिल होकर चंदन ने क्षेत्र के लोगों को गदगद होने का एक और मौका प्रदान किया है। रविवार को खेले गए वुमेन्स ऐशियन चेम्पियन ट्रॉफी के मलेशिया और थाईलैंड के पहले मैच चंदन ने मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित होकर दोनों टीम के महिला कप्तान को बुके देकर बेहतर प्रदर्शन की शुभकामनाएं भी दी।चंदन के साथ इस मैच में मुख्य अतिथि के पैनल में बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के रविंद्र नाथ चौधरी एवं लव सिंह भी मौजूद थे।राजगीर में आयोजित महिला हॉकी का यह अंतरराष्ट्रीय टूनार्मेंट की शुरूआत 11 नवंबर से हुई है एवं 20 नवंबर को फाइनल के साथ इस टूनार्मेंट का समापन होगा। विदित हो कि चंदन का चयन खेल कोटे से प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी के तौर पर हुआ है तथा इस समय वह पटना में अपनी सेवा दे रहे हैं। चंदन की उपलब्धि पर बलिया पंचायत की मुखिया सारिका सिंह,मुखिया वीर कुंवर,खेल प्रेमी निर्मल सिंह कुशवाहा, अमित चंद्रा इत्यादि ने खुशी जाहिर की है।

हाट के प्रति लोगों में थी उदासीनता परन्तु हुई जमकर खरीद-बिक्री

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] प्रखंड अंतर्गत बैजला पंचायत के हाई स्कूल मैदान में शनिवार देर शाम मुखिया संघ प्रखंड अध्यक्ष पप्पू यादव, आदर्श युवा प्रकोष्ठ प्रभारी आशीष कुमार, उपमुखिया सुरेश यादव, कामदेव यादव ने सम्मिलित रूप से रिवन फीता काटकर हाट बाजार का शुभारंभ किया। हाट में बैजला के अलावा सरैया, भांझीकुसुम, तिलवरिया सहित कई गांव के लोग शामिल हुए। मुखिया संघ प्रखंड अध्यक्ष सह छापा पंचायत मुखिया पप्पू यादव ने कहा कि हाट के माध्यम से बैजला व आस-पास के क्षेत्र का विकास तय है। छोटे -छोटे किसानों को भी सब्जी इत्यादि उगाने का प्रोत्साहन मिलेगा। आदर्श युवा प्रकोष्ठ प्रभारी आशीष कुमार ने कहा कि हाट के प्रति लोगों में उदासीनता देखने को मिलती थी परंतु हाट में जमकर खरीद बिक्री होते देखकर मन हर्षित है। बैजला का भौगोलिक परिदृश्य ऐसा है जिसके कारण यह छोटा बाजार के रूप में अब तक नहीं उभर पाया है परन्तु हाट के माध्यम से लघु बाजार का रूप ले सकता है। यह लोकल फॉर वोकल के तहत भी बहुत बढ़िया पहल है, किसानों सहित छोटे-छोटे व्यापारियों को स्वरोजगार के अवसर मिलेंगे, ग्रामीणों की भी सब्जी सहित कई दैनिक आवश्यकता पूरी होगी । उपमुखिया सुरेश यादव ने कहा कि हाट के लिए सरकार भी काम कर रही हैं हमलोग जनप्रतिनिधि होने के नाते सरकारी योजना का लाभ दिलाकर इस हाट का उतरोतर विकास के लिए प्रयासरत रहेंगे। मौके पर मनीष कुमार, पिंटू कुमार, प्रदीप यादव,नीतीश कुमार प्रिंस, विशाल कुमार,शंभूशरण दास,मनोज यादव,सदानंद यादव, रामचरण यादव, सुरेश विश्वकर्मा, चक्रधर यादव, सुरेश कुमार यादव, नरेश यादव,विकास कुमार सहित सैकड़ों लोग मौजूद थे।

आरपीएफ के वरीय कमांडेंट ने बैरक का किया निरीक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] आसनसोल रेल मंडल के आरपीएफ के वरीय कमांडेंट राहुल राज शअधीनस्थ अधिकारियों के साथ रेलवे तालाब के पास अवस्थित बैरक का निरीक्षण किया। बैरक में आसनसोल, जसीडीह के रह रहे आरपीएफ के पदाधिकारी, जवानों से सुविधाओं से सम्बंधित सभी तरह की जानकारी लिया। वरीय कमांडेंट ने बैरक में रह रहे अपने डिवीजन के आरपीएफ पदाधिकारी, जवानों को रेलवे परिचालन के दौरान सुरक्षा को लेकर नियमित स्कॉर्ट करने व रेलयात्रियों की सुरक्षा, सहयोग करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय रेल की जिम्मेवारी आरपीएफ के कंधों पर होती है उसकी सुरक्षा का जिम्मा हमलोगों के ऊपर होने के कारण अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को समय समय पर कई तरह के दिशा निर्देश दिया जाता है। उन्होंने कहा कि बैरक में किसी भी प्रकार की कोई समस्या तो उनलोगों को नही हो रहा है इसकी भी जानकारी ली गई साथ ही ट्रेनों में नियमित स्कॉर्ट को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश भी दिया गया।

सीपीआई के मजबूत स्तंभ थे पूर्व मुखिया बिमलेश चन्द्र सिंह : चन्द्रभूषण

प्रात : किरण संवाददाता

सिंहवाड़ा।कटका पंचायत के पूर्व मुखिया दिवंगत विमलेश चंद्र सिंह की स्मृति में पुण्यतिथि आयोजित कर श्रद्धांजलि सभा का रविवार को आयोजित किया गया। इस अवसर पर मध्य विद्यालय मोहनपुर के प्रांगण में स्वामी विवेकानंद अस्पताल मब्बी की ओर से निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन गया ।कार्यक्रम की अध्यक्षता मुखिया कुमार किसलय व सरपंच उदय नारायण मिश्र ने संचालन किया।अहिल्या गौतम विद्यापीठ के निदेशक चंद्र भूषण मिश्र ने कहा सामाजिक सरोकार से जुड़े विमलेश चन्द्र सिंह ने चाइल्डलाइन के समन्वयक पद को सुशोभित कर बच्चों के अधिकार को लेकर जगह-जगह जागरूकता अभियान चलाया। मुखिया संघ के संरक्षक अहमद अली तमन्ने ने कहा कि सीपीआई के अंचल सचिव रहे बिमलेश चन्द्र सिंह ने पार्टी की नींव को मजबूत करने के साथ सभी वर्ग को सम्मान देने का निरंतर कार्य किया।दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।शिविर में डॉ. शिशेंद्रु कैंसर विशेषज्ञ डाक्टर अपराजिता , जेनरल फिजिशियन एवं हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ अभिषेक माधवन ने शिविर में अनेकों लाभान्वित रोगियों को रोगों से बचने के उपाय बताकर परीक्षण कर निःशुल्क दवा उपलब्ध कराया।कहा कि परमार्थ कार्यों के लिये दृढ़ संकल्प से ही आगे बढ़ा जा सकता है और ये असहाय लावारिस जनों के बीच सेवा अत्यंत प्रशंसनीय कार्य है। मौके पर मौजूद मानवाधिकार के मनोहर झा ने कहा कि अपने पूर्वजों की पुण्यतिथि पर स्वास्थ्य शिविर लगाकर इसे सेवा पर्व के रूप में मनाएं। मौके पर पंचायत समिति सदस्य राजा पासवान, टोनी सिंह,विकास कुमार, शिव कुमार, धीरेंद्र मिश्र, नागेंद्र मिश्र, रामचंद्र सहनी सहित कई मौजूद रहे ।

रक्तदान करके बचायी जा सकती है कई जानें : डॉ मिलन

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय अंतर्गत संचालित बीएड (नियमित) के द्वारा डीएमसीएच अवस्थित क्षेत्रीय रक्त केंद्र में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें कुल उन्नीस लोगों ने रक्तदान किया। रक्तदान करने में विभाग के छात्र छात्राओं , नवनियुक्त बीपीएसी शिक्षकों के अलावा विभाग के शिक्षकों ने भी अपना अहम योगदान दिया। बीएड नियमित के विभागाध्यक्ष डॉ अरविंद कुमार मिलन ने कहा कि रक्तदान के जरिये हम कई लोगों की जिंदगी बचा सकते है। एक स्वस्थ्य व्यक्ति नब्बे दिन के अंतराल पर रक्तदान कर सकते है। विभाग के छात्र हर साल रक्तदान शिविर लगाते आये है। वहीं कार्यक्रम की अतिथि नन्हीं दुनिया की निदेशिका नम्रता झा ने कहा कि एक यूनिट ब्लड के माध्यम से तीन लोगों की जान बचाई जा सकती है। रक्तदान करने से शरीर में किसी भी प्रकार की कोई कमजोरी नहीं होती है। सभी लोगों को सामाजिक दायित्व निभाते हुए वर्ष में एक या दो बार रक्तदान अवश्य करना चाहिए। जिससे किसी जरूरतमंद की जान बचायी जा सके। उन्होंने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय का यह एक मात्र डीडीई , बीएड (नियमित) विभाग है जो हर वर्ष रक्तदान शिविर का आयोजन करते आया है । वहीं विभाग के एनएसएस समन्वयक डॉ उदय कुमार ने कहा कि विभाग शिक्षा के साथ साथ सामाजिक कार्यों को लेकर भी प्रतिबद्ध है।रक्तदान शिविर में संदीप कुमार चौधरी, मिथिला इंटरनेशनल स्कूल की निदेशिका गीतांजलि मिश्रा, अखिलेश कुमार, घनश्याम ठाकुर,अंकित कुमार झा, डॉ उदय कुमार, दीपेश कुमार, शिव कुमार, विभूति कुमार झा, प्रभात कुमार, संजीता मिश्रा, मोहित कुमार, मो.अमीन,आदित्य राज,अभिषेक कुमार ,शिव कुमार, राजा कुमार, प्रभाकर कुमार, अरुण कुमार, राहुल राज आदि ने रक्तदान किया । कार्यक्रम के सफल संचालन में राहुल राज, साक्षी झा, प्रभात कुमार, संजीव कुमार, साहिल भारद्वाज, ध्रुव कुमार आदि का अहम योगदान रहा।

झोपड़ीनुमा घर को किया गया क्षतिग्रस्त

जमुई [झाझा] पुस्तैनी जमीन पर झोपड़ीनुमा बने घर को अज्ञात लोगों के द्वारा क्षतिग्रस्त कर दिए जाने पर जमीन मालिक ने थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है। डॉक्टर बसंत कुमार डालमियां ने दर्ज आवेदन में बताया की धपरी मोड़ के पास मेरा जमीन है जहां एक झोपड़ीनुमा घर है और उसी जगह पुलिस की जब्त किया हुआ वाहन भी रखा जाता है। रात्रि में कुछ अज्ञात लोगों ने घर को क्षतिग्रस्त कर दिया। दर्ज आवेदन के आधार पर पुलिस मामले की जांच में जुट चुकी है।

ट्रम्प की विजय और भारत

अमेरिका में रिपब्लिकल पार्टी की ऐतिहासिक विजय के बाद अब यह तय हो गया है कि पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प दूसरी बार अमेरिका के राष्ट्रपति बनेंगे। अमेरिका का इतिहास बताता है कि ट्रम्प की यह जीत उनकी ऐतिहासिक वापसी है। अमेरिका में यह विजय किसी चमत्कार से कम नहीं है। 130 वर्ष के अमेरिकी इतिहास में यह पहली बार है, जब किसी ने यह कारनामा किया है। डोनाल्ड ट्रम्प ने लगातार तीसरी बार अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव लड़ा, जिसमें पहली और तीसरी बार वे सफल रहे, दूसरी बार के चुनाव में जो बाइडेन से पराजित हो गए। इस चुनाव में पराजित होने के बाद ट्रम्प अमेरिका में राजनीतिक तौर पर लगातार सक्रिय रहे। उनका मिशन फिर से राष्ट्रपति बनना ही था, जिसे उन्होंने बखूबी अंजाम देकर एक नया कीर्तिमान बना दिया। चुनाव में उनकी प्रतिद्वंदी कमला हैरिस यकीनन राजनीतिक समझ रखती थी, लेकिन यह समझ किसी भी प्रकार से सफलता की परिचायक नहीं बन सकी। हालांकि अमेरिकी मीडिया के एक वर्ग ने तो उनको भावी राष्ट्रपति के रूप में प्रचारित कर दिया। लेकिन यह नैरेटिव भी उनके लिए जीत का मार्ग नहीं बना सका। यहां एक खास तथ्य यह भी माना जा सकता है कि कमला हैरिस को भारतीय मूल का बताने का सुनियोजित प्रयास किया गया। ऐसा इसलिए किया गया कि भारतीय मूल के मतदाताओं को उनके पक्ष में लाया जा सके, लेकिन वे जिन हाथों में खेल रही थी, वह लाइन भारत के लिए राजनीतिक तौर सही नहीं थी। वैश्विक राजनीति के जानकार डोनाल्ड ट्रम्प की जीत कई निहितार्थ निकाल रहे हैं। कई विश्लेषक ट्रम्प की जीत को भारत की कूटनीतिक सफलता के तौर पर भी स्वीकार कर रहे हैं। इसका एक कारण यह माना जा रहा है कि वैश्विक स्तर पर भारत सरकार जिस नीति और विचार को लेकर कार्य कर रही है, उसकी झलक ट्रम्प के विचारों में भी दिखाई देती है। इसके अलावा ट्रम्प का कहना है कि अमेरिका की खोई ताकत को फिर से प्राप्त करना चाहते हैं। आज अमेरिका कहने मात्र को ही महाशक्ति है, लेकिन उसका वैसा दबदबा आज नहीं है, जो पहले हुआ करता था। इस बीच भारत ने महाशक्ति बनने की दिशा में तीव्र गति से अपने कदम बढ़ाए हैं, इसलिए आज विश्व के अनेक देश भारत को महाशक्ति के रूप में देखने लगे हैं। हमें स्मरण होगा कि रूस और यूक्रेन के मध्य युद्ध के दौरान भारत के नागरिक पूरे सम्मान के साथ भारत लौटे थे। उस समय भारत के नागरिकों के समक्ष यूक्रेन की सेना ने अपने हथियार नीचे कर लिए थे। यह केवल एक दृश्य नहीं, बल्कि भारत की शक्ति का ही परिचायक था। भारत की इस बढ़ती शक्ति से अमेरिका भी भली भांति परिचित है। रूस और यूक्रेन युद्ध के बारे में कई बार यह कहा जा चुका है कि भारत चाहे तो युद्ध रुकवा सकता है। इसका तात्पर्य यही है कि आज का भारत विश्व के लिए एक ताकत बन चुका है। अमेरिका के इस चुनाव में भारत के लोकसभा चुनाव की तरह ही प्रचार किया गया। कई प्रकार के नैरेटिव स्थापित करने का प्रयास किए गए। वामपंथी विचार के मीडिया ने ट्रम्प की राह में अवरोध पैदा करने के भरसक प्रयास किए। यहां तक कि उनको सनकी और विलेन कहने में भी गुरेज नहीं किया गया। यही तो भारत में किया गया। वामपंथी समूह ने भारत के लोकसभा चुनावों में सरकार के विरोध में जहरीली भाषा का प्रयोग किया। फिर भी आखिरकार नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री पद पर आसीन हो गए। अब ऐसा लगने लगा है कि मतदाता बहुत समझदार हो गया है। उसको किसी भी प्रकार से भ्रमित नहीं किया जा सकता। उसे अब देश दुनिया की समझ हो गई है, इसलिए वह वर्तमान के साथ कदम मिलाकर चलने की ओर अग्रसर हुआ है। विश्व के कई देश आज कई प्रकार की समस्याओं से जूझ रहे हैं। कोरोना के बाद कई देशों की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई है, उसे पटरी पर लाने के लिए उस देश की सरकार की ओर से भरपूर प्रयास किए जा रहे हैं। इन समस्याओं में कई समस्याएं ऐसी हैं, जो सबके सामने हैं। आतंकवाद एक विकराल समस्या बनता जा रहा है। अमेरिका भी इससे ग्रसित है। रूस और यूक्रेन की बीच तनातनी कम नहीं हो रही। इजराइल और हमास के बीच युद्ध जैसे हालात हैं। अमेरिका में ट्रम्प के पुनः राष्ट्रपति बनने के बाद यह लग रहा है कि अब आतंक के सहारे भय का वातावरण बनाने वाले किसी भी कदम को पूरे जोश के साथ रोकने का प्रयास किया जाएगा। अमेरिका में ट्रम्प की जीत से भारत के पड़ोसी देश यानि पाकिस्तान, चीन और बांग्लादेश में सुगबुगाहट प्रारम्भ हो गई है, क्योंकि यह देश भारत को हमेशा अस्थिर करने की फिराक में रहते हैं। हम वह वाकिया अभी तक भूले नहीं हैं, जब अमेरिका ने आतंक के विरोध में बड़ी कार्यवाही को अंजाम देते हुए ओसामा बिन लादेन को मौत के घाट उतार दिया था, हालांकि उस समय अमेरिका के राष्ट्रपति ओबामा थे।

खुदगर्जी की धरती पर बटवारे का दावानल

मजहब के नाम पर देश-दुनिया में बटवारा करने वालों की जमातों में निरंतर इजाफा होता जा रहा है। बटोगे-तो-कटोगे जैसे नारे बुलंद होने लगे हैं। वास्तविक बटवारा तो उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के मध्य, सरकारी नुमाइन्दों और आम आवाम के मध्य, बलशाली और निर्बल के मध्य, शासक और शासित के मध्य, सक्षम और निरीह के मध्य हो कब का चुका है। सच्चाई की ओर से मुंह फेरने वाले लोग निहित स्वार्थों के लिये सम्प्रदाय, क्षेत्र और भाषा जैसे कारकों को रेखांकित करने लगते हैं। राजनैतिक दलों ने बटवारे वाले नारे से मत विभाजन को ध्रुवीकरण के आधार पर साधने की कोशिश की, तो मजहब के ठेकेदारों ने अपनी दुकानें चलाने के लिए इसका उपयोग शुरू कर दिया। कोई इसके समर्थन में अपने पौ-बारह होते देख रहा है तो किसी को विरोध करने पर लाभ की आशा है। मगर सच्चाई को उजागर करने के लिये पहल अभी तक नहीं हुई है। राजनैतिक दलों ने सत्ता के लिए किसी भी हद तक जाने की ठान ली है। चुनावी मंचों से होने वाले उद्घोषों से लोगों की मंशा निरंतर सामने आ रही है। वहीं दूसरी ओर मजहबी इन्तजाम सम्हालने वाले केवल और केवल अपनी निजी सत्ता को कायम रखने की फिराक में ही लगे रहते हैं। वे न तो पैगामों का ईमानदाराना तजुर्मा करते हैं और न ही वेदों की व्याख्या। कमाई करने की ख्वाइश ने उन्हें अन्धा कर दिया है। आस्था के केन्द्रों में धनबली, बाहुबली, जनबली, सत्ताबली, पहुंचबली, संबंधबली जैसे लोगों के लिए नये-नये नियम बनाये जा रहे हैं ताकि बली श्रंखला के सामने आम आवाम को उनकी औकात दिखायी जा सके। कोई पैसों से भगवान के दर्शन खरीद रहा है तो कोई अपने रुतवे से बेधकड गर्भ-गृह तक घुसता चला जाता है। कहीं चादर चढाने के लिये लाइन से हटकर सीधा मजार तक पहुंचने हेतु सामाजिक प्रतिष्ठा का पैमाना है तो कहीं फंड बढाने वालों को खुली सहूलियतें मुहैया कराई जातीं हैं। नौकरशाही तो आस्था के सभी मापदण्डों को अपने ओहदे की ताकत के नीचे कुचलकर शान-ओ-शौकत के साथ किसी भी श्रध्दा के केन्द्र में प्रवेश करने का विशेषाधिकार रखते हैं। जनप्रतिनिधि का दमगा तो चयनित ओहदेदार के पूरे खानदान पर चमकता है। ऐसे में बल श्रंखला के आधुनिक लोगों की भीड को इबादतगाहों में पर्यटन, पिकनिक, मौज, मस्ती जैसे दिखावे ही हासिल होते हैं। वे मालिक के दरवार में न तो हाजिरी ही लगा पाते हैं और न ही उनकी दिखावा भरी दुआओं का असर ही सामने आता है। वहीं श्रध्दा की पूंजी लेकर माथ टेकने वाले आम आवाम की सादगी ही उनके मालिक तक पहुंचकर उनकी मुराद पूरी करती है। मजहबी मजलिशों में खून-खराबे की बातों का बोलबाला, धार्मिक सम्मेलनों में उन्माद फैलाने की कोशिशें, सामाजिक एकरसता की बैठकों में संकीर्ण मानसिकता के पोषण जैसी स्थितियां खुल्मखुल्ला देखने को मिल रहीं हैं। संविधान के रखवालों के लिए ऐसी घटनाएं, नक्कारखाने में तूती की आवाज बनकर रह गई है। सिर से ऊपर पानी पहुंचने की स्थिति में निचले स्तर के उत्तरदायित्व की अन्तिम पायदान वालों को बली का बकरा बनाकर कर्तव्यों की इतिश्री कर ली जाती है। सनातन का ढिंढोरा पीटने वालों को उसकी शाश्वत परिभाषा निरंतर विरोध दर्ज करा रही है तो खुदा के पैगाम का मनमाना तजुर्मा करने वालों को हकीकत का आइना देखने से भी डर लगता है। विभिन्न आस्था के आयामों की सामाजिक व्यवस्था आज धूलधूषित हो चुकी है। ऊंच-नीच की दीवारें अब जातिगत खाइयों में तब्दील होने लगीं हैं। ईमानदाराना बात तो यह है कि बांटने और काटने वाले दो नहीं है बल्कि एक ही हैं। नियम बनाने वाले ही नियमों को तोडते हैं। पहले नियम बनाओ, फिर नियमों को डर दिखाओ और फिर नियम बनाने के वास्तविक लक्ष्य को हासिल करने के लिए उसे पर्दे के पीछे से तोड दो। अब तो आस्था के आसमान में चमकती सच्चाई को ढकने की कोशिश करने वाले अनगिनत चील-कौवे पंख फडफडाते दिखाई देने लगे हैं। वास्तविक आस्था तो गरीब की झोपडी में पैदा होते ही मार दी जाती है। कहीं धन की चाकू से तो कहीं बल की तलवार से, कहीं सत्ता के भाले से तो कहीं मजबूरी की बरछी से किस्तों में कत्ल होती इंसानियत अपनी बदहाली पर जार-जार आंसू बहाती देखी जा सकती है।

बुलडोजर कार्रवाई न्याय नहीं नफरत व कुंठा की पराकाष्ठा

अब जबकि अदालत स्वयं यह कह चुकी है कि-किसी भी सभ्य समाज में बुलडोजर के जरिए इंसाफ नहीं होना चाहिए, ऐसे में सत्ताधीशों को भी सोचना पड़ेगा कि वे भी स्वयं को एक सभ्य समाज के सभ्य नेता के रूप में पेश करें। धर्म जाति के अनुसार या इसके मद्देनजर पक्षपात पूर्ण या विद्वेषपूर्ण फैसले लेना निष्चित रूप से किसी सभ्य समाज के सभ्य नेता की पहचान हरगिज नहीं। सर्वोच्च न्यायायलय के फैसले से एक बार फिर स्पष्ट हो गया है कि बुलडोजर कार्रवाई न्याय के लिये नहीं बल्कि यह नफरत व कुंठा की पराकाष्ठा है।

तनवीर जाफरी
लेखक

भारतीय राजनीति का स्वरूप अब बदल चुका है। अब हाथ जोड़कर विनम्रता प्रदर्शित करते नेताओं का युग शायद चला गया। कम से कम आज के दौर के नेताओं के तेवर उनके मुंह से निकलने वाले जहरीले शब्द बाणों, उनकी नीयत व कार्यशैली आदि को देखकर तो यही लगता है। खासतौर पर गत एक दशक से जब से दक्षिणपंथी शक्तियों के हाथों में देश की सत्ता आई है तब से केंद्र व अनेक राज्य सरकारों द्वारा कई ऐसे फैसले लिये गये जिनके कारण देश ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में भारतीय तर्ज-ए-सियासत की खूब आलोचना हुई। भारतीय जनता पार्टी शासित विभिन्न राज्य सरकारों का ऐसा ही एक मनमाना व अमानवीय निर्णय था ह्यबुलडोजर न्यायह्न। हालांकि देश की विभिन्न अदालतों द्वारा पहले भी इस विषय पर संज्ञान लिया जा चुका है। परन्तु पिछले दिनों देश के सर्वोच्च न्यायलय ने इस सम्बन्ध में नये व सख़्त दिशा-निर्देश के जारी किये और कहा कि उसका यह आदेश हर राज्य में भेजा जाए और सारे अधिकारियों को इसके बारे में बताया जाए। सर्वोच्च न्यायालय की जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस केवी विश्वनाथन की दो जजों की पीठ ने कहा है कि किसी व्यक्ति के घर या संपत्ति को केवल इसलिए तोड़ना कि वह अपराधी है या उन पर अपराध के आरोप हैं, कानून के खिलाफ है। न्यायालय ने कहा कि घर या कोई जायदाद तोड़ने से पहले कम से कम 15 दिन का नोटिस देना होगा। अगर किसी राज्य के कानून में इससे लंबे नोटिस का प्रावधान हो तो उसका पालन करना होगा। यह नोटिस रजिस्टर्ड पोस्ट से देना होगा। इसके साथ ही कथित गैर कानूनी ढांचे पर भी इस नोटिस को चिपकाना होगा। नोटिस पर पहले की तारीख न दी जाए। इसके लिए नोटिस की एक कॉपी कलेक्टर/ज़िला मजिस्ट्रेट को भी ईमेल पर भेजनी होगी। सर्वोच्च न्यायालय के दिशा-निर्देश में कहा गया है कि नोटिस में ये भी लिखना होगा कि कौन से कानून का उल्लंघन हुआ है, इस मामले में सुनवाई कब होगी। और जब सुनवाई हो तो उसका पूरा विवरण भी रिकॉर्ड करना होगा। न्यायालय के दिशा-निर्देश में यह भी कहा गया है कि सुनवाई करने के बाद अधिकारियों को अपने आदेश में वजह भी बतानी होगी। इसमें ये भी देखना होगा कि किसी संपत्ति का एक हिस्सा गैर कानूनी है या पूरी संपत्ति ही गैर कानूनी है। न्यायालय के अनुसार यदि तोड़-फोड़ की जगह, जुमार्ना या और कोई दंड दिया जा सकता है तो वह दिया जाएगा। और यदि कानून में संपत्ति तोड़ने या गिराने के आदेश के खिलाफ कोर्ट में अपील करने का प्रावधान है तो उसका पालन किया जाना चाहिए। दिशा-निर्देश के मुताबिक अगर ऐसा प्रावधान नहीं भी है, तो आदेश आने के बाद संपत्ति के मालिक/मालकिन को 15 दिन का समय मिलेगा ताकि वे स्वयं ही गैर कानूनी ढाँचे को सही कर लें। यदि ऐसा नहीं हो, तब ही इसे तोड़ने की कार्रवाई की जा सकती है। ह्यबुलडोजर न्याय ह्य को लेकर आये सर्वोच्च न्यायालय के इन राहत भरे निदेर्शों के बाद अब यह माना जा रहा है कि इस महत्वपूर्ण फैसले से बुलडोजर से की जा रही विध्वं स की गैर-कानूनी कार्रवाइयों पर अब रोक लगेगी। गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्य प्रदेश, राजस्थान, असम, हरियाणा जैसे अनेक भाजपा शासित राज्यों में गत एक दशक के दौरान सैकड़ों घरों व व्यवसायिक प्रतिष्ठानों को बुलडोजर न्याय के नाम पर जमींदोज किया जा चुका है। सरकारें व प्रशासन खुद ही न्यायलय की भूमिका अदा करता रहा है। किसी के मकान को इसलिये ध्वस्त कर दिया गया कि वह किसी आरोपी का मकान है। तो किसी मकान या भवन को इसलिये गिरा दिया गया कि वह अनधिकृत निर्माण है, उसके पास नक़्शा व निर्माण की अनुमति नहीं है, आदि। दरअसल इस तरह की कार्रवाई से पहले मौजूदा सत्ताधीश के तेवर व उनके शब्दों पर यदि गौर करें तो स्वयं ही साफ हो जाता है कि सरकार व प्रशासन द्वारा बुलडोजर कार्रवाई कोई न्याय की मिसाल कायम करने के लिये नहीं की जाती थी। बल्कि इसके पीछे साम्प्रदायिक व जातिवादी कुंठा काम कर रही थी। यही वजह है कि पूरे देश में अब तक जितनी भी बुलडोजर कार्रवाइयां हुई हैं उनमें सबसे अधिक भवनों का ध्वस्तीकरण एक ही समुदाय के लोगों का ही हुआ है। हद तो यह है कि मध्य प्रदेश में एक घटना तो ऐसी भी हुई कि एक आरोपी किसी किराये के मकान में रहता था। परन्तु इस कुंठाग्रस्त सरकार व प्रशासन ने नफरत की आग में जलते हुये उस मकान को भी ध्वस्त कर दिया। जहाँ तक अवैध निर्माण बताकर किसी भवन को गिराने का विषय है तो इस सम्बन्ध में समाजवादी पार्टी नेता अखिलेश यादव द्वारा उत्तर प्रदेश विधान सभा में उठाये गये इस सवाल की भी अनदेखी नहीं की जा सकती जिसमें वे कई बार पूछ चुके हैं कि क्या उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री निवास का नक़्शा पारित है? यदि है तो कहाँ है, किसके पास है, किसने देखा है? अखिलेश के कहने का मतलब साफ है कि जिस भवन में बैठकर लोगों के भवन अवैध बताकर गिरवाये जा रहे हैं वही भवन अवैध रूप से निर्मित है। परन्तु दरअसल बुलडोजर न्याय के पीछे मकसद न्याय का हरगिज नहीं बल्कि यह कार्रवाई सत्ताधीशों के मुंह से समय समय पर निकलने वाले उनके शब्द बाणों को ही अमल में लाने का एक तरीका है। अन्यथा आज तक इतिहास में किसी मुख्यमंत्री ने हम मिट्टी में मिला देंगे, ठोक देंगे, गर्मी उतार देंगे, बक्कल उतार देंगे, बटेंगे तो कटेंगे जैसे निम्नस्तरीय शब्दों का प्रयोग नहीं किया।

क्यों अमरीका में शरण मांग रहे हैं लाखों भारतीय

इसके बावजूद भारतीय ब्रेन इतनी बड़ी तादाद में जोखिम क्यों उठा रहा है? मोटा-मोटी सभी देशों से आर्थिक प्रवासी अवसरों की तलाश करते हैं जिसमें आऊटफ्लो और इनफ्लो की मात्रा देश की वास्तविक परिस्थितियों का बखान कर देती है। जिन 10 वर्षों में 15 लाख भारतीयों ने नागरिकता छोड़ने का आवेदन किया है उसी दौरान विगत पांच सालों में मात्र 5 हजार 220 विदेशियों को भारतीय नागरिकता दी गई है उनमें 4 हजार 552 यानि 87 फीसदी पाकिस्तानी, 8 फीसदी अफगानिस्तानी और 2 फीसदी बंगलादेशी हैं।

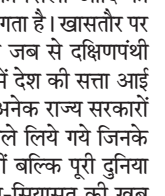

भूपेन्द्र गुप्ता
लेखक

एक समय था जब ब्रिगेडियर उस्मान को बंटवारे के समय पाकिस्तान का सेनाध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव दिया गया था लेकिन उन्होंने यह कहकर इनकार कर दिया था कि भारत मेरा देश है इस धरती में मेरे बुजुर्ग दफन हैं। उन्होंने पाकिस्तान का सेनाध्यक्ष बनने की बजाय भारत का ब्रिगेडियर बने रहना स्वीकार किया और अपना नौसेरा बचाने के लिये शहीद हो गये। वह तो अनिश्चितता का समय था, जान-माल का खतरा था किंतु आज तो निश्चिंतता का समय है। संवैधानिक और नियामक संस्थायें देश को आजादी के प्रति सजग कर रहीं हैं ऐसे दौर में कुछ खबरें हैरान भी करतीं हैं और चिंतित भी। संसद में एक प्रश्न के उत्तर में बताया गया है कि पिछले 10 सालों में लगभग 15 लाख भारतीय नागरिकों ने देश की नागरिकता त्याग दी है। इससे भी जो ज्यादा चिंताजनक आंकड़ा है वह यह कि अमेरिका में शरण मांगने वाले भारतीयों की संख्या में 855 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। उल्लेखनीय है कि अमेरिका में शरण मांगने वाले दो तरह से शरण के लिए आवेदन करते हैं एक तो वह जिन्हें एफर्मेटिव कहा जाता है और दूसरा वे जिन्हें डिफेंसिव कहा जाता है। डिफेंसिव यानि वे जो सुरक्षा की दृष्टि से अमेरिका में शरण की गुहार लगाते हैं। अमेरिका की होमलैंड सिक्योरिटी डिपार्टमेंट की इमीग्रेंट एनुअल फ्लो रिपोर्ट बताती है कि 2023 में अमेरिका में शरण चाहने वाले आवेदकों में 41हजार 330 भारतीय शामिल थे जो कि 2022 की तुलना में 855 फीसदी ज्यादा हैं और भी आश्चर्यजनक बात यह है कि इसमें से आधे आवेदक गुजरात राज्य के हैं। जहां 2014 के बाद समृद्धि का विस्फोट हुआ है। समझना जरूरी है कि उन भारतीयों ने क्यों कर सुरक्षा एसाईलम के लिये आवेदन किया है? वर्ष 2022 में शरणार्थी के रूप में आवेदन करने वाले 14 हजार 570 भारतीयों में से 9200 ने डिफेंसिव एसाईलम यानि सुरक्षा शरण का आवेदन किया है। भारत की अर्थव्यवस्था के उछालें भरने के दावे, आम नागरिक के लिये सुरक्षा की गारंटी और बेहतर अवसरों के प्रचार के बीच भी अगर 41हजार 330 नागरिक अमरीका में शरण मांग रहे हैं और उनमें भी 50% से अधिक सुरक्षा कारणों से तो यह पड़ताल का विषय होना ही चाहिए? इन सुरक्षा शरण चाहने वाले भारतीयों को देश में क्या खतरा लग सकता है? उनमें से आधे उस राज्य से क्यों हैं जिसमें सर्वाधिक विकास के दावे किये जा रहे हैं? एलपीआर रिपोर्ट के अनुसार अमरीका में लगभग 28 लाख भारत में जन्मना नागरिक रहते हैं जो मेक्सिको में पैदा हुए अमरीकी नागरिकों के बाद सर्वाधिक संख्या है। अकेले 2022 में ही 1लाख 28 हजार 878 मेक्सीकन, 65 हजार 960 भारतीय, 53 हजार 413 फिलिपाईन नागरिकों को अमरीकी नागरिकता के लिये न्यूट्रिलाईज किया गया है। ऐसा माना जाता है कि सामान्यतःआर्थिक, शैक्षणिक अवसरों और राजनैतिक स्थिरता को देखते हुए सुरक्षित भविष्य की तलाश में लोग अपनी नागरिकता त्याग करने का कठिन फैसला लेते हैं। अमरीका में रहने वाले 28 लाख 31 हजार 330 भारतीयों में 42 फीसदी भारतीय, अमरीकन नागरिकता के लिये अपात्र हैं। इसके बावजूद भारतीय ब्रेन इतनी बड़ी तादाद में जोखिम क्यों उठा रहा है? मोटा-मोटी सभी देशों से आर्थिक प्रवासी अवसरों की तलाश करते हैं जिसमें आऊटफ्लो और इनफ्लो की मात्रा देश की वास्तविक परिस्थितियों का बखान कर देती है। जिन 10 वर्षों में 15 लाख भारतीयों ने नागरिकता छोड़ने का आवेदन किया है उसी दौरान विगत पांच सालों में मात्र 5 हजार 220 विदेशियों को भारतीय नागरिकता दी गई है उनमें 4 हजार 552 यानि 87 फीसदी पाकिस्तानी, 8 फीसदी अफगानिस्तानी और 2 फीसदी बंगलादेशी हैं। इसका अर्थ है कि भारतीय नागरिकता त्यागने वालों के मुकाबले भारतीय नागरिकता चाहने वालों की संख्या 1 प्रतिशत भी नहीं है। लंदन की हेनली एंड पार्टनर की एक रिपोर्ट के अनुसार लगभग 7 हजार सुपर रिच धनाढ्य भारत की नागरिकता छोड़ सकते हैं। सरकार ने राज्यसभा में बताया है कि वह इन लोगों की व्यावसायिक पृष्ठभूमि के बारे में अनभिज्ञ है। भारतीय टेक्स कानूनों, स्वास्थ्य सुविधाओं और इनवेस्टमेंट माईग्रेशन नागरिकता त्यागने की नयी वजह के रूप में सामने आ रही है। मेहुल चौकसी जैसे लोग इसी इवेस्टमेंट माईग्रेशन के नाम पर भाग खड़े हुए हैं। नागरिकता छोड़ने का एक कारण यह भी है कि कई देश दोहरी नागरिकता स्वीकार नहीं करते, दूसरा बड़ा कारण अन्य देशों में निर्वाध आवाजाही के लिये भारतीय पासपोर्ट पर केवल 60 देशों में वीजा फ्री या आगमन पर वीजा सुविधा उपलब्ध है जबकि अमरीकन पासपोर्ट पर 186 देशों में यह सुविधा प्राप्त है। जन्म से भारतीय विदेशी नागरिकों को भारत में ओसीआई(ओवरसीज सिटीजन आफ इंडिया के रूप में पंजीकृत किया जा सकता है) माना जाता है। गृह मंत्रालय ने सदन को जानकारी दी है कि आज ओसीआई की संख्या 1लाख 90 हजार है जो 2005 में मात्र 300 हुआ करती थी। इसका अर्थ है कि लगभग 8 फीसदी नागरिकता त्यागने वाले भारतीय ही ओसीआई के रूप में देश से जुड़े रहना चाहते हैं। अवसरों की तलाश और बेहतर जीवन की महत्वाकांक्षा मानव स्वभाव है किंतु जब अवसर देश से बड़ा बनने लगे तो मानिये चिंता का समय आ गया है।

उत्तर प्रदेश के उपचुनाव : योगी सरकार की प्रतिष्ठा दांव पर

मनोज कुमार अग्रवाल

देश में जनसंख्या के लिहाज से सबसे बड़े प्रदेश उत्तर प्रदेश की नौ विधानसभा सीटों पर 20 नवंबर को उपचुनाव के लिए वोटिंग होगी, 23 नवंबर को नतीजे आएंगे। लोकसभा चुनाव में जिस तरह से भारतीय जनता पार्टी को प्रदेश में झटका लगा और समाजवादी पार्टी उभरी, सभी की नजरें अब चुनाव पर टिकी हैं। राजनीतिक पंडित इस चुनाव को योगी आदित्यनाथ सरकार के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बता रहे हैं, तो दूसरी तरफ अखिलेश यादव पर लोकसभा चुनाव के प्रदर्शन को दोहराने की चुनौती है। मायावती की बहुजन समाज पार्टी के चुनावी मैदान में आने से मुकाबला दिलचस्प हो गया है। प्रदेश की जिन 9 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव होंगे, उनमें सीसामऊ (कानपुर), कटेहरी (अंबेडकर नगर), कुंदरकी (मुरादाबाद) और करहल (मैनपुरी) इन चार सीटों पर 2022 के विधानसभा चुनावों में एसपी ने जीत दर्ज की थी तो खैर (अलीगढ़), फूलपुर (प्रयागराज) और गाजियाबाद सीटें बीजेपी के पास थीं। मंझवा (मिजार्पुर) में निषाद पार्टी और मुजफ्फरनगर की मीरापुर सीट पर आरएलडी ने जीत दर्ज की थी। सीसामऊ को छोड़कर बाकी सभी सीटें विधायकों के सांसद बनने के बाद खाली हुई हैं। सीसामऊ सीट विधायक इरफान सोलंकी को आपराधिक मामले में दोषी ठहराए जाने के बाद खाली हुई है। वैसे उत्तर प्रदेश में उपचुनाव के नतीजों से बहुत ज्यादा फर्क पड़ने वाला नहीं है। 403 सदस्यीय विधानसभा में बीजेपी के नेतृत्व वाली सरकार के पास 283 सीटों के साथ पूर्ण बहुमत है। एसपी और उसके सहयोगियों के पास सिर्फ 107 सीटें सीटें हैं। जानकारों के मुताबिक, अगर इस चुनाव में एसपी अपनी सीटें बरकरार रखने में सफल होती है, तो यह बीजेपी के लिए टेंशन बढ़ाने वाला संकेत होगा। समाजवादी पार्टी अपने पीडीए फॉमूर्ले यानी पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक के दम पर उपचुनाव में उतर रही है। लोकसभा चुनाव में एसपी ने इसी फॉमूर्ले की बदौलत बीजेपी को पछाड़ा था, पार्टी ने प्रदेश की 80 लोकसभा सीटों में से 37 पर जीत दर्ज की थी। एसपी के जीते हुए उम्मीदवारों में 25 पिछड़ी जातियों से थे। उपचुनाव में एसपी ने चार सीटों पर मुस्लिम उम्मीदवार उतारे हैं, जिनमें दो महिलाएं हैं, तीन सीटों पर ओबीसी और दो पर दलित समुदाय से आने वाले उम्मीदवारों को टिकट दिया गया है, जिनमें गाजियाबाद सीट भी शामिल हैं। एसपी ने कुल पांच महिला उम्मीदवारों को मैदान में उतारा है। लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी के पीडीए फॉमूर्ले की कामयाबी को देखते हुए बीजेपी ने भी इस बार ओबीसी उम्मीदवारों पर दांव लगाया है। पार्टी ने चार ओबीसी, दो ब्राह्मण, एक राजपूत और एक दलित उम्मीदवार को मैदान में उतारा है। सहयोगी पार्टी राष्ट्रीय लोक दल (आरएलडी) ने भी मीरापुर से ओबीसी प्रत्याशी को टिकट दिया है। मीरापुर से दबंग पत्रकार अरशद राणा के चुनावी मैदान में उतरने से यहां मुकाबला काफी दिलचस्प हो गया है। कांग्रेस से टिकट नहीं मिलने पर राणा ने आननफानन में असदुद्दीन औवेसी की पार्टी से टिकट लिया और अब वे पतंग चुनाव चिन्ह के साथ मैदान में हैं। सीसामऊ विधानसभा सीट मुस्लिम बाहुल्य है। इस सीट पर मुकाबला समाजवादी पार्टी की उम्मीदवार नसीम सोलंकी और बीजेपी के सुरेश अवस्थी के बीच है। सोलंकी मुस्लिम समुदाय से आती हैं, जबकि अवस्थी ब्राह्मण हैं। बीएसपी ने भी ब्राह्मण कार्ड खेलते हुए वीरेंद्र शुक्ला को उम्मीदवार बनाया है, जिसके बाद कहा जा रहा है कि बीजेपी की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। इस सीट पर मुस्लिम, ब्राह्मण और दलित वोटर्स मुख्य भूमिका निभाते हैं। इतिहास भी बीजेपी के साथ नहीं है। 28 सालों से इस सीट पर कमल नहीं खिला है। बीजेपी ने 1991 में इस सीट पर पहली बार जीत दर्ज की थी, लेकिन 2012 से इस सीट पर समाजवादी पार्टी का कब्जा है। योगी के नारे बटेंगे तो कटेंगे के जवाब में अखिलेश यादव ने नारा दिया जुड़ेंगे तो जीतेंगे। उन्होंने कहा पीडीए की ताकत से घबराकर बीजेपी ने बटेंगे तो कटेंगे नारा दिया है। इसके लिए सबसे उपयुक्त कौन हो सकता था। इसके लिए हमारे मुख्यमंत्री जी को आगे लाया गया है। इस बार पीडीए लोगों को जोड़ेगा। इन सब के बीच बीएसपी ने नारा दिया बीएसपी से जुड़ेंगे तो आगे बढ़ेंगे, सुरक्षित रहेंगे। पार्टी की ओर से कहा गया है, उपचुनाव में बीएसपी के दमदारी से मैदान में उतरने से बीजेपी और एसपी की नींद उड़ी हुई है और अपनी कमियों पर से जनता का ध्यान बांटने के लिए बीजेपी द्वारा बटेंगे तो कटेंगे और एसपी एंड कंपनी के लोगों द्वारा जुड़ेंगे तो जीतेंगे आदि नारों को प्रचारित किया जा रहा है। बीएसपी पहली बार उपचुनाव में ताल ठोक रही है। पार्टी ने सभी 9 सीटों पर उम्मीदवार उतारे हैं। पिछले कुछ चुनावों में पार्टी का ग्राफ गिरा है। ऐसे में बीएसपी के लिए उपचुनाव अहम माना जा रहा है। मायावती पिछले 20 सालों में चुनाव लड़ने और जीतने के सभी फॉमूर्ले को आजमा चुकी हैं। अब नए प्रयोग के तौर पर उन्होंने उपचुनाव लड़ने का फैसला किया है। उनके लिए ये करो या मरो वाली स्थिति है। इस बार वो ये नहीं देखेंगी कि एसपी का नुकसान हो रहा या फिर बीजेपी का, वो चाहेंगी कि उनका वोट प्रतिशत एक निश्चित लेवल तक बना रहे, जिससे पार्टी की साख बनी रहे। दूसरी तरफ इंडिया गठबंधन की पार्टियों ने 43 सीटों पर जीत हासिल की है।

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातःकिरण
पटना, सोमवार ,18 नवंबर, 2024

संक्षिप्त खबरें

लापरवाह दोनों बीज विक्रेताओं का खेल खत्म, अब किसानों को मिलेगा समय पर बीज

प्रातः किरण, संवाददाता

डोरीगंज। सदर प्रखंड में बीज वितरण की जिम्मेदारी निभाने वाले दो प्रमुख बीज विक्रेताओं को गंभीर लापरवाही के आरोप में तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है।

जिला कृषि कार्यालय द्वारा जारी एक आदेश में यह स्पष्ट किया गया है कि बजरंग मशीनरी स्टोर्स, छपरा और गणपति फर्टिलाईजर, मौना को खरीफ 2024-25 के लिए सदर प्रखण्ड में बीज वितरण की जिम्मेदारी सौंपी गई थी, लेकिन दोनों विक्रेता समय पर बीज वितरण स्थल पर उपस्थित नहीं होते थे, जिसके कारण किसानों को बीज उपलब्ध नहीं हो पा रहा था।

जिससे परेशान किसानों की लगातार शिकायतों के बाद विभाग ने तीन स्तरीय जांच टीम का गठन किया था, जिसने अपनी रिपोर्ट में यह स्पष्ट किया कि गणपति फर्टिलाईजर और बजरंग मशीनरी स्टोर्स, दोनों विक्रेता अपनी जिम्मेदारी से बचते हुए समय पर बीज वितरण नहीं कर रहे थे। दोनों विक्रेताओं की लापरवाही के कारण न केवल किसानों को परेशानियों का सामना करना पड़ा, बल्कि विभाग की छवि भी खराब हुई ।वहीं जिला कृषि विभाग के निर्देश के मुताबिक, अब बीज वितरण की जिम्मेदारी आनन्द फर्टिलाईजर को सौंपी गई है। जिसमें आनन्द फर्टिलाईजर को यह सख्त आदेश दिया गया है कि वे तुरंत कार्य शुरू करें और किसानों को बीज उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।

शादी की नीयत से दो युवतियों को भगाया, प्राथमिकी दर्ज

प्रातः किरण, संवाददाता

दरियापुर। प्रखंड क्षेत्र के दो अलग अलग गांवों से शादी की नीयत से दो युवतियों को भगा ले जाने का मामला प्रकाश में आया है ।इस संबंध में दोनों के परिजनों ने थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई है ।महम्मदपुर गांव की एक युवती की मां ने धनंजय सिंह सहित तीन लोगों को आरोपित करते हुए कहा है कि उसकी पुत्री को शादी की नीयत से सभी आरोपी बहला फुसला कर भगा ले गए हैं ।वहीं मनपुरा की एक युवती के पिता ने आरोप लगाया है कि उसी के गांव का सूरज कुमार उसकी पुत्री को बहला फुसला कर अपने घर ले गया ।फिर चार अन्य लोगों के सहयोग से उसे शादी की नीयत से अन्यत्र लेकर चला गया है ।हालांकि की प्रेम प्रसंग में दोनों के भागने की चर्चा है ।पुलिस दोनों युवतियों की बरामदगी में लग गई है।

दो वारंटी गिरफ्तार

चनपटिया। सिरिसिया थाने की पुलिस ने समकालिन अभियान के दौरान दो वारंटी को गिरफ्तार किया है। सिरिसियां थाना प्रभारी मदन कुमार मांझी ने बताया की गुप्त सूचना के आधार क्षेत्र के विभिन्न जगहों पर छापेमारी की गई। जिसके दौरान फरार दो वारंटी गरभुआ लाला टोला गांव निवासी रामजी राम व असोक राम को उसके गांव से गिरफ्तार कर बेतिया न्यालय के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए भेज दिया गया।

परसा में दूसरे दिन अध्यक्ष पद के लिए छह अभ्यर्थियों ने किया नामांकन

परसाः परसा पुलिस की चाक चौबंद सुरक्षा व्यवस्था के बीच दूसरे दिन परसा में पैक्स चुनाव के लिए नामांकन कार्य संपन्न हुआ। निवार्ची पदाधिकारी सह परसा बीडीओ राकेश कुमार ने बताया कि पैक्स अध्यक्ष पद के लिए छह अभ्यर्थियों ने नामांकन पर्चा दाखिल किया ।जबकि प्रबंध कार्यकारिणी सदस्य के लिए 27 अभ्यर्थियों ने नामांकन किया। दूसरे दिन कई पंचायतों से निवर्तमान पैक्स अध्यक्ष दूसरे या तीसरी बार अध्यक्ष पद पाने के लिए अपने समर्थकों के हुजूम के साथ नामांकन पत्र दाखिल किए। वहीं कई नए चेहरे भी नामांकन चाक चौबंद सुरक्षा व्यवस्था के बीच दूसरे दिन परसा में पैक्स चुनाव के लिए नामांकन कार्य संपन्न हुआ। निवार्ची पदाधिकारी सह परसा बीडीओ राकेश कुमार ने बताया कि पैक्स अध्यक्ष पद के लिए पचलख पैक्स से निवर्तमान पैक्स अध्यक्ष संतोष कुमार सिंह, बहरमारर से संजय कुमार सिंह की पत्नी मदोर देवी,धर्मजीत कुमार सिंह,पचरुखी पैक्स से मनोरंजन कुमार चौधरी,रामजीनिस सिंह, व सगुनी पैक्स से ब्रजेश सिंह की पत्न ी निवर्तमान पैक्स अध्यक्ष अंशु देवी ने दो प्रतियों में नामांकन पर्चा दाखिल किया । जबकि प्रबंध कार्यकारिणी सदस्य के लिए 27 अभ्यर्थियों ने नामांकन किया। दूसरे दिन कई पंचायतों से निवर्तमान पैक्स अध्यक्ष दूसरे या तीसरी बार अध्यक्ष पद पाने के लिए अपने समर्थकों के हुजूम के साथ नामांकन पत्र दाखिल किए।

केंद्र सरकार से पेंशनर्स की माँग एडिशनल पेंशन आठवें वेतन आयोग का गठन एवं चिकित्सा सुविधाओं में सुधार

पेंशनर्स को एसोसिएशन की सदस्यता बढ़ाने पर दिया जोर

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन छपरा शाखा की मासिक बैठक 10 बजे दिन में पराशर कम्प्लेक्स भगवान बाजार में हुई। बैठक की अध्यक्षता कार्यकारी अध्यक्ष ओ पी पराशर ने किया। बैठक को संबोधित करते हुए उप सचिव डॉ.ए एच अंसारी ने छपरा शाखा की निरंतर हो रही उपलब्धियों पर खुशी जताई और पेंशनर्स को एसोसिएशन की सदस्यता बढ़ाने पर जोर दिया। भारत पेंशनर्स समाज का उनहत्तर वाँ एजीएम की मेजबानी पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन ने किया। जो गोरखपुर में आयोजित था। यह पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन के लिए गौरव की बात है। इसमें विभिन्न राज्यों के पेंशनर्स के अतिरिक्त पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन के सभी शाखाओं के पदाधिकारियों तथा सदस्यों ने भाग लिया। सभी पेंशनर्स ने एक स्वर से एडिशनल पेंशन , आठवें वेतन आयोग गठन अठारह महीने का मँहगाई राहत एरियर तथा चिकित्सा सुविधा में सुधार की माँग केंद्र सरकार से की और एजीएम में प्रस्ताव पारित किया। शाखा मंत्री मिथिलेश कुमार सिंह ने अपने संबोधन में पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन छपरा शाखा की उपलब्धियों को क्रमवार चर्चा की। जिन पेंशनर्स का जन्मदिन नवम्बर माह है , उनको बधाई कार्ड देकर लंबी आयु की कामना दी । उन्होंने आठवें वेतन आयोग गठन , अठारह महीने का मँहगाई रिलिफ का एरियर , एडिशनल पेंशन , एक तरह की चिकित्सा सुविधा सभी केंद्रीय कर्मचारियों को , पेंशन को आयकर मुक्त करना , एक्सग्रेसिया पेंशन को मिनिमम नौ हजार डीए सहित , नोशनल इंक्रीमेंट रेलवे पेंशनर्स का हेल्थ केयर अपग्रेडेशन , फिक्स मेडिकल एलाउंस तीन हजार डीए सहित आदि प्रमुख माँग को जोरदार तरीके से उठाया गया। सभी सदस्यों ने जिनका जन्मदिन था , उनको बधाई एवं शुभकामनाएं दिए। पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन का त्रैमासिक बुलेटिन सभी पेंशनर्स सदस्यों को वितरित किया गया। नये पेंशनर्स को एसोसिएशन की सदस्यता ग्रहण कराई गई। बैठक को संबोधित करते कार्यकारी अध्यक्ष ओ पी पराशर ने 65 , 70 , 75 वर्ष आयु पर क्रमशः 5 ,10 ,15 प्रतिशत अतिरिक्त भत्ता की माँग केंद्र सरकार से की। शाखा मंत्री मिथिलेश कुमार सिंह को छपरा शाखा का बेस्ट परफामेंस शील्ड एवं मेडल भारत पेंशनर्स समाज के एजीएम में दिए जाने पर पराशर ने बधाई दी। छपरा शाखा की उपलब्धियों पर खुशी जताई। पेंशनर्स की समस्याएं लिखित में एकत्र किया और रेलवे अस्पताल से रोगग्रस्त पेंशनर्स को उचित इलाज और दवा आपूर्ति की माँग की गई। उन्होंने ने कहा कि अब रेलवे अस्पताल से पेंशनधारियों को तीन माह की दवा इकट्ठे मिल रही है। यह पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन की देन है। बैठक को संबोधित करने वालों में मुख्य रुप से डॉ ए एच अंसारी , मिथिलेश कुमार सिंह , ओ पी पराशर , मुंद्रिका प्रसाद , राजकुमार श्रीवास्तव , सुरेंद्र सिंह , पी के मांझी , सुधीर श्रीवास्तव , रामानंद महतो ,रामनारायण तिवारी आदि उपस्थित थे।

शिलान्यास स्वागत द्वार बुद्ध मुंडन स्थल में असामाजिक तत्वों द्वारा तोड़फोड़

प्रातः किरण, संवाददाता

बगहा। इंडो नेपाल सीमा से सटे नेपाल नवलपरासी जिला स्थित सुस्ता गांव पालिका के वार्ड नम्बर 5 अमोना घाट में शिलान्यास हुए बुद्ध मुंडन स्थल के स्वागत द्वार में असमाजिक तत्वों द्वारा तोड़ फोड़ किया गया ।जिससे थोड़ी देर के लिए आसपास तनाव का माहौल बन गया जिसे नेपाल पुलिस ने फौरन एक्शन लेते हुए स्थिति को संभाल लिया ।समाजसेवी रामप्रसाद बढ़ई ने बताया कि सुस्ता गांव पालिका द्वारा रखे गए बुद्ध विहार स्थल में असामाजिक तत्वों द्वारा तोड़ फोड़ कर आपसी सौहार्द बिगाड़ने की कोशिश की गई है ।तोड़फोड़ के बाद घटनास्थल पर तोड़े गए स्वागत बोर्ड की जगह ठाढ़ी घाट मेला व्यवस्थापन समिति के फ्लेक्स बोर्ड को रख दिया गया है ।हालांकि की गांव वालों ने इस घटना की निंदा करते हुए सम्बंधित थाना रामनगर चौकी में मामला दर्ज करा दिया गया है।

बतादें की अमोना घाट बुद्ध धर्माम्बलियों के आस्था का केंद्र है ।बतादूँ गौतम बुद्ध कपिलवस्तु से भारत स्थित बोध गया जाने के क्रम में इसी स्थान पर अपना मुंडन कराया था ।इस स्थान पर भगवान बुद्ध का मुंडन स्थल है जहां श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है ।हालांकि इस जगह से हटकर शिलान्यास किए गए स्वागत द्वार पर तोड़फोड़ किया गया है ।पुलिस सूत्रों की माने तो असामाजिक तत्वों की खोजबीन की जा रही है।

27 दिसंबर को जिला कार्यकारिणी की बैठक होगी

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। जिला जदयू अध्यक्ष अल्ताफ आलम राजू की अध्यक्षता में सारण प्रमंडल प्रभारी रणविजय कुमार की उपस्थिति में जिला जदयू कोर कमिटी की बैठक जिला जदयू कार्यालय डाक-बंगला रोड छपरा में महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई बैठक में मुख्य रूप से विधान पार्षद वीरेंद्र नारायण यादव,पूर्व मंत्री गौतम सिंह, पूर्व मंत्री मुनेश्वर चौधरी, पूर्व उपसभापति सलीम परवेज,जदयू उपाध्यक्ष सह प्रांतीय विधानसभा प्रभारी बैजनाथ प्रसाद सिंह विकल ने अपने अपने विचार रखे

बैठक में आगामी 8 दिसंबर 2024 (रविवार)को सारण जिला जदयू कार्यकर्ता सम्मेलन को लेकर विस्तार से चर्चा की गई सर्वप्रथम जिले के प्रवेश द्वार सोनपुर से लेकर छपरा तक 40 जगहों पर तोरणद्वार लगाने को लेकर व्यापक चर्चा हुई साथ ही सभी बूथों से बूथ अध्यक्ष बूथ सचिव एवं समर्पित कार्यकर्ता साथियों को इस कार्यक्रम में प्रमुखता के साथ शामिल होने पर बल दिया गया । मुख्य रूप से जिला सम्मेलन में माननीय मुख्यमंत्री के नीति एवं कामों को लेकर व्यापक चर्चा किया गया साथ ही माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा किए गए जनकल्याणकारी कार्यों को जन-जन तक पहुंचने पर भी बल दिया जायेगा 27 दिसंबर को पटेल छात्रावास में जिला कार्यकारिणी की बैठक होगी जिसमें जिला कार्यक्रता सम्मेलन की तैयारी की समीक्षा की जाएगी पूर्व जिला अध्यक्ष दिनेश सिंह, सुधाकर भारद्वाज,जयप्रकाश यादव,महेश सिंह,ओमप्रकाश शर्मा,कार्यलय प्रभारी ब्रजेश सिंह, ईङ्ग प्रभास शंकर,संभू सिंह जिला प्रवक्ता मोहम्मद फिरोज आदि उपस्थित थे।

नगर निगम में करोड़ों के भ्रष्टाचार पर हाईकोर्ट ने कसा शिकंजाःगरिमा

■ पटना हाईकोर्ट में दायर सी डब्ल्यूजेसी याचिका में दर्ज आरोपों पर तीन माह के अंदर जांच कर कार्रवाई करने का आदेश

प्रातः किरण, संवाददाता

बेतिया। नगर निगम में बीस करोड़ से भी अधिक के भ्रष्टाचार के आरोपों की बीते करीब एक साल से अनदेखी पर पटना हाईकोर्ट ने बड़ी कार्रवाई की है। करीब एक साल पहले से महापौर गरिमा देवी सिकारिया के द्वारा अपर मुख्य सचिव के यहां दिया गए आवेदन के गंभीर आरोपों की पूरी जांच और दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई का आदेश दिया है। यहां उल्लेखनीय है कि बीते वर्ष जुलाई 2023 से ही महापौर द्वारा विभाग को आवेदन सौंप कर नगर निगम बोर्ड का चुनाव होने से पूर्व तत्कालीन नगर आयुक्त शंभू कुमार ने विधि मान्य व्यवस्था की धज्जियां उड़ाते हुए अनेक विवादास्पद फैसले और वित्तीय नियमन के विरुद्ध अनुबंध के विरुद्ध जांच की अपील की थी। करोड़ों की खरीदारी और बिना किसी निविदा के ही करोड़ों के विकास कार्य आदि के नाम पर अनेक अनाधिकार तथा विवादास्पद निर्णय लिया था। महापौर ने दिए पत्र में कुल करीब बीस करोड़ का घपला और बंदरबांट से संबंधित पार्षद गण के दर्जनाधिक आरोपों से सहमत होकर आरोपित तत्कालीन नगर आयुक्त शंभू कुमार और उनके दोषी सहयोगियों के खिलाफ विधि सम्मत कार्रवाई का अनुरोध महापौर ने किया था। नगर विकास एवम आवास विभाग के तत्कालीन अपर मुख्य सचिव अरुणेश चावला की सख्त आदेश पर अमान्य तरीके से चयनित आउट सोर्सिंग सफाई एजेंसी ह्लपाथेयह्व का अनुबंध पूर्ववर्ती नगर आयुक्त शंभू कुमार ने ही रद्द कर दिया। वही श्री चावला का तबादला हो जाने के बाद संबंधित आरोपों जांच और दोषियों पर कार्रवाई अब तक पूरी नहीं की जा सकी है। तत्कालीन नगर आयुक्त का बीते माह तबादला भर हुआ है। इसकी जानकारी देते हुए महापौर गरिमा देवी सिकारिया बतातीं हैं कि नगर निगम की सशक्त समिति सदस्य और करोड़ों के भ्रष्टाचार के विरुद्ध उनकी जारी लड़ाई में सशक्त स्थायी समिति के निर्णय के आलोक में उनके सहयोगी नगर पार्षद मनोज कुमार की याचिका सी डब्ल्यू जे सी - 17004/2024 का निष्पादन करते हुए न्यायमूर्ति नवनीत कुमार पांडेय के एकल पीठ द्वारा पारित आदेश की तिथि 12 नवंबर 2024 से तीन माह के अंदर विभागीय अपर मुख्य सचिव को सौंपे गए आवेदन में वर्णित आरोपों की अपने स्तर से जांच कर दोषियों के विरुद्ध विधि सम्मत कार्रवाई करने का आदेश पारित किया है। इस आदेश का स्वागत करते हुए महापौर गरिमा देवी सिकारिया बतातीं हैं कि हाईकोर्ट का यह आदेश भ्रष्टाचार और नगर निगम क्षेत्र की जनता जनार्दन की हकमारी और भ्रष्टाचार के विरुद्ध उनकी जारी लड़ाई में यह पहली जीत है। नगर निगम को भ्रष्टाचार मुक्त और समग्र विकास का संवाहक बनाए बिना वे रुकने या झुकने वाली नहीं हैं।

जातीय जनगणना मे 4 प्रतिशत दिखाकर कोइरी समाज के साथ अत्याचार किया हैःनागमणि

प्रातः किरण, संवाददाता

बनियापुर ।बिहार मे कोइरी समाज की 12 प्रतिशत जनसंख्या है ,सरकार ने पदाधिकारियो की मिलीभगत जातीय जनगणना मे 4 प्रतिशत दिखाकर कोइरी समाज के साथ अत्याचार किया है,अपमानित करने का काम किया है,यह बाते भारत सरकार के पूर्व मंत्री नागमणि ने पैगम्बरपुर सब्जी मंडी मे अपने 23 फरवरी को पटना के गांधी मैदान मे आयोजित कोइरी आक्रोश महारैला की तैयारी कार्यक्रम के प्रखंड स्तरीय बैठक को संबोधित करते कही,उन्होंने कहा कि नितीश कुमार जिसकी जितनी भागीदारी उसकी उतनी हिस्सेदारी के तर्ज पर काम कर रहे है तो हमारे साथ इतनी बड़ी धोखाबाजी हम बतदास्त नही करेंगे,23 फरवरी से पहले हमारी मांगे पुरी नही हुई तब कोइरी समाज नितीश कुमार का बहिष्कार करेगा,हम पूरे बिहार मे घूम कर नित्य तीन चार सभाएं कर रहे है ।समाज मे व्यापक जन आक्रोश है ।कोइरी समाज के साथ अत्याचार पर बिहार मे सरकार के प्रति आक्रोश है ।उन्होंने पटना के महा रैला मे शामिल होने के लिए आग्रह किया ।वही कार्यक्रम का अध्यक्षता करते वरिय नेता नवल किशोर कुशवाहा ने भी सरकार के इस उपेक्षा भरी रवैए पर खेद व्यक्त करते सरकार के नीतियों का विरोध किया ।मौके पर प्रो राजू कुमार ह्ममोहन प्रसाद नंदू प्रसाद प्रकाश कुशवाहा अजय प्रसाद राम कुमार प्रसाद मदन प्रसाद सहित सैकड़ो लोग शामिल थे।

जिला स्तरीय प्रतिभा खोज परीक्षा हुई 9 केन्द्र पर सम्पन्न, हजारों छात्र- छात्राएं हुए शामिल

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। ग्यारहवीं जिला स्तरीय प्रतिभा खोज परीक्षा रविवार को संपन्न हुआ। जिसमें जिले भर से लगभग 4000 से अधिक संख्या में छात्राओं ने विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर कदाचार मुक्त परीक्षा दिया। आयोजन समिति के सचिव शशिकांत सर परीक्षा का निरीक्षण करते दिखे। इन्होंने बताया कि परीक्षा जिला के 9 केंद्रों पर आयोजित की गई है। ए, बी, सी, डी तथा ई, पांच ग्रुप में परीक्षा आयोजित किया गया। ग्रुप ए में जहां दशम के विद्यार्थी शामिल हुए। इस बार बारहवीं के छात्र भी शामिल हुए। वहीं ग्रुप बी में नवम के विद्यार्थी ग्रुप सी से 8 क्लास के विद्यार्थी ग्रुप डी से 7 क्लास के विद्यार्थी तथा ई ग्रुप से 4, 5 तथा 6 के विद्यार्थी शामिल हुए। 7 8 9 तथा 10 वर्ग का प्रश्न सिलेबस पर आधारित था जिसमें विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, हिंदी व्याकरण, अंग्रेजी व्याकरण जीके के प्रश्न पूछे गए थे। कुंदन तिवारी ने कहा कि परीक्षा आयोजित करने में लगभग 3 महीने कड़ी मेहनत करनी पड़ती है।

तब जाकर यह आयोजन संभव हो पाता है। परीक्षा का संचालन बिशेश्वर सेमिनरी के प्रचार्य सह परीक्षा केंद्र पर्वेक्षक राजेश ओझा सर ने प्रतियोगी छात्रों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों मैं प्रतिभाओ की कमी नहीं है बस उन्हे सही मार्गदर्शन व उचित की आवश्यकता है । परीक्षा केंद्राधीक्षक कुंदन तिवारी की देखरेख में हुई। अर्जुन सिंह ने बताया कि कम उम्र में ही प्रतियोगी परीक्षा में प्रतिभाग करने का अनुभव दिलाने के लिए यह परीक्षा आयोजित की गई। परीक्षा में शामिल होकर बच्चों को आगे चलकर बड़ी प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रतिभाग का अनुभव मिल सकेगा। इससे उनमें परीक्षा को लेकर किसी भी प्रकार का डर नहीं होगा। ऐसी परीक्षाएं बच्चों के लिए बेहद जरूरी हैं। मौखिक परीक्षा के लिए दिसंबर में 22 तारीख का समय निर्धारित किया गया है इस बार मौखिक परीक्षा सह पुरस्कार वितरण समारोह श्रीधर बाबा दारोगा प्रसाद राय इंटर कालेज भेल्दी में आयोजित किया जाएगा। इस दौरान मुख्य रूप से अजित सर , विंदिया जयसवाल , ई. विजय राज , सर्वजित कुशवाहा, रामबाबू सिंह , दिपक कुमार भारती, नितिश कुमार , मनोज सर, मौजूद थे।

नवलपरासी जिला में बृहत बिरहा गीत संगीत का दो दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न

प्रातः किरण, संवाददाता

बगहा। इंडो नेपाल सीमा नवलपरासी जिला स्थित ठाढ़ी घाट में सीमा से सटे सुस्ता गांव पालिका वार्ड नम्बर 5 स्थित अनोमा ठाढ़ी घाट में मंगलवार और बुधवार को सदर मुकाम जिला नवलपरासी में बृहत बिरहा गीत संगीत कार्यक्रम संपन्न हो गया। यह प्रोग्राम अनोमा घाट निर्माण उपभोक्ता समिति के सौजन्य से किया गया ।जिसमे आजमगढ़ के बिरहा महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार यादव और गायिका काजल कंचन के द्वारा आयोजित संगीत कार्यक्रम में प्रस्तुति की गई,जिसे सुन श्रोता झूम उठे ।इस कार्यक्रम में नेपाल के माननिय मुख्य अतिथि पूर्व कानून मंत्री धुर्व बहादुर प्रधान,पूर्व मंत्री घनश्याम यादव,रास्ट्रीय संविधान सभा सदस्य रामलखन हरिजन व समाजसेवी छिनक प्रसाद समेत बड़ी संख्या लोग शामिल हुए।

कार्यक्रम के संयोजक सुग्रीव यादव ने बताया कि पहले दिन अमोना घाट और दूसरे दिन नवलपरासी सदर मुकाम में आयोजित हुए।

जिसमे भारत के सुप्रसिद्ध बिरहा गायकों ने अपने प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया।

उत्तरवारी पोखरा बेतिया से सीएस ने की बच्चे को ड्राप पिलाकर की पल्स पोलियो अभियान की शुरूआत

बेतिया(घनश्याम)। उत्तरवारी पोखरा बेतिया से सिविल सर्जन डॉ विजय कुमार ने बच्चे को पोलियो ड्राप पिलाकर पल्स पोलियो अभियान की शुरूआत की। मौके पर सिविल सर्जन ने कहा की पल्स पोलियो अभियान के तहत 0-5 साल तक के आठ लाख बच्चों को दो बूंद दवा पिलाई जायगी। उन्होंने जानकारी देते हुए कहा की विकलांगता से बचाव को पोलियो की दो बूंद आवश्यक है ।जिले में 17 नवम्बर से 21 नवम्बर 2024 तक पांच दिवसीय पोलियो अभियान चलाई जा रहीं है। जिसमें सभी निर्धारित आयु वर्ग को यह दवा पीना आवश्यक है, आज बच्चों को पोलियो के दो बूंद पिलाकर अभियान की शुरूआत अर्बन पीएचसी उत्तरवारी पोखरा के प्रांगण में किया गया है।

हम अपील करते हैं की इस अभियान को सफल बनाने के लिए हमारे टिकाकर्मी निष्ठा पूवर्क कार्य करते हुए इस अभियान को सफल बनायें। साथ ही उन्होंने सभी प्रखंड के चिकित्सा पदाधिकारी को निर्देश दिया की शाम मे इवनिंग ब्रीफिंग के बाद सभी रिपोर्ट समय से जिला को भेजे तथा नहीं कार्य करने वाले कर्मी का रिपोर्ट जिला को प्रेषित करें। अपर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉक्टर रमेश चंद्रा ने कहा कि हमारा लक्ष्य है कि 0 से 5 साल तक के बच्चों को घर घर जाकर पोलियो की खुराक अवश्य पिलाये। उन्होंने कहा कि हमारे जिला में 1441 घर-घर दल, 255 ट्रांजिट दल, 08 मोबाइल दल, 525 सुपरवाइजर के निगरानी में 118 सबडिपो के सहायता से 705779 घरो पर जा कर 803576 लक्षित बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई जायगी। इस अभियान को सफल बनाने हेतु जिलास्तरीय और प्रखंडस्तरीय मॉनिटरिंग के लिए पदाधिकारीगण को लगाया गया है। इस अवसर पर एसीएमओ डॉक्टर रमेश चंद्रा, जिला प्रतिरक्षण पदाधिकारी डॉक्टर अवधेश कुमार सिंह, यूनिसेफ के एसएमसी राजीव कुमार, एसएमओ, डब्लूएचओ प्रतिनिधि व अन्य स्वास्थ्यकर्मी उपस्थित रहे।

अमृतांश कप सारण जिला क्रिकेट लीग प्रतियोगिता : त्रिशूल क्रिकेट अकादमी की शानदार जीत

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय।रविवार को मढ़ौरा क्रिकेट अकादमी के मैदान में सारण जिला क्रिकेट लीग का भव्य उद्घाटन हुआ। इस आयोजन के मुख्य अतिथि अमितेश रंजन (एचडी होटल अमृतांश, छपरा खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किए साथ में संयुक्त सचिव चन्दन शर्मा रंजन प्रसाद यादव, सच्चिदानंद ओझा रिजवी राज, अमित कुमार गिरि, और आशु भारद्वाज रहे। इनके द्वारा पारंपरिक रूप से टूनामेंट का शुभारंभ किया गया। उद्घाटन के विशेष अवसर पर रोहित यादव, आदित्य मुकुल यादव, और आलोक ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

पहला मैचः त्रिशूल क्रिकेट अकादमी बनाम युवराज क्रिकेट अकादमी

उद्घाटन मैच त्रिशूल क्रिकेट अकादमी और युवराज क्रिकेट अकादमी के बीच खेला गया। युवराज क्रिकेट अकादमी ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का निर्णय लिया।

त्रिशूल क्रिकेट अकादमी की पारी

त्रिशूल क्रिकेट अकादमी ने 25 ओवर और 2 गेंद में कुल 160 रन बनाए। उनकी बल्लेबाजी का प्रदर्शन इस प्रकार रहाःकेशव शर्मा ने 23 गेंदों पर शानदार 33 रन बनाए।

अवधेश ने 18 गेंदों पर 28 रन, जिसमें उन्होंने 3 चौके लगाए।

मुकुल यादव ने 5 गेंदों पर तेज 12 रन बनाए।युवराज क्रिकेट अकादमी की गेंदबाजी में रवि ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए 5 विकेट हासिल किए।युवराज क्रिकेट अकादमी की पारी। 160 रनों का पीछा करने उतरी युवराज क्रिकेट अकादमी की टीम ने संघर्ष किया, लेकिन युनाइटेड क्रिकेट क्लब की पूरी टीम केवल 103 रनों पर ही सिमट गई।उनकी बल्लेबाजी में सचिन ने 30 गेंदों पर महत्वपूर्ण 22 रन बनाए।गेंदबाजी के क्षेत्र में भी सचिन का प्रदर्शन शानदार रहा, जहां उन्होंने 5 विकेट चटकाए।त्रिशूल कि-केट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में मुकुल यादव ने भी शानदार प्रदर्शन करते हुए 2 विकेट हासिल किए, जिससे युवराज क्रिकेट अकादमी की बल्लेबाजी लड़खड़ा गई।त्रिशूल क्रिकेट अकादमी की जीत त्रिशूल क्रिकेट अकादमी ने यह मैच शानदार 57 रनों से जीता। उनकी गेंदबाजी और बल्लेबाजी दोनों में बेहतरीन समन्वय दिखा, जिसने उन्हें यह बड़ी जीत दिलाई।

मैन ऑफ द मैच

आज के मैच में शानदार प्रदर्शन करने वाले बंटी को ह्लमैन ऑफ द मैचह्व का खिताब दिया गया। उनकी ऑलराउंड क्षमता और खेल में प्रभावशाली भूमिका ने उनकी टीम को यह जीत दिलाने में अहम योगदान दिया।त्रिशूल क्रिकेट अकादमी ने न केवल 160 रनों का मजबूत स्कोर खड़ा किया, बल्कि अपनी गेंदबाजी से युवराज क्रिकेट अकादमी को दबाव में रखा। रवि और सचिन जैसे खिलाड़ियों के ऑलराउंड प्रदर्शन के बावजूद, युनाइटेड क्रिकेट क्लब का प्रदर्शन लक्ष्य का पीछा करने में असफल रहा। त्रिशूल की गेंदबाजी में मुकुल यादव के 2 विकेट और बल्लेबाजी में केशव शर्मा का योगदान उल्लेखनीय रहा।इस टूनामेंट का आयोजन स्थानीय क्रिकेट प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने और उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के उद्देश्य से किया गया है। मुख्य अतिथियों और खिलाड़ियों की उपस्थिति ने इस आयोजन को और भी भव्य और प्रेरणादायक बना दिया।

सारण जिला मदरसा संस्कृत एसोसिएशन संघ का चिंतन समारोह संपन्न

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। सारण जिला अंतर्गत सारण एवं मदरसा शिक्षक संघ के संयुक्त तत्वाधान में गुरुकुल संस्कृत उच्च विद्यालय छपरा के प्रांगण में अवकाश प्राप्त शिक्षकों एवं शिक्षित कर कर्मियों का सम्मान समारोह शाह चिंतन समारोह का आयोजन किया गया ' चिंतन समारोह की अध्यक्षता स्थानीय माननीय विधान पार्षद वीरेंद्र नारायण यादव एवं शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र के पूर्व प्रत्याशी इंजीनियर आनंद पुष्कर और बिहार प्रदेश संस्कृत माध्यमिक शिक्षक संघ के संयुक्त सचिव अवधेश प्रसाद सिंह और माध्यमिक शिक्षक संघ सारण के जिला सचिव विद्यासागर विद्यार्थी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विद्वत उद्घाटन किया ' उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि वीरेंद्र नारायण यादव ने कहा कि मैं हमेशा संस्कृत मदरसा शिक्षकों की लड़ाई के लिए सरकार से वातार्लाप करता हूं आप लोगों की जैसी भी समस्या होगी उसके समाधान के लिए मैं हमेशा सदन में आपकी आवाज बनकर हमेशा कार्य करूंगा ' शिक्षक नेता आनंद पुष्कर ने कहा कि मैं संस्कृत मदरसा के समस्याओं के लिए कुछ दिन पहले शिक्षा मंत्री से मिलकर विशुद्ध रूप से आपकी समस्या पर वातार्लाप किया और मैं संस्कृत मदरसा शिक्षकों को समान वेतन दिलाने के लिए हमेशा प्रयासरत था और रहूंगा 'बिहार प्रदेश संस्कृत माध्यमिक शिक्षक संघ के संयुक्त सचिव अवधेश प्रसाद सिंह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि ऐसा कार्यक्रम हमेशा होते रहना चाहिए और मैं स्वयं संस्कृत शिक्षक का नेता होने के नाते मैं सरकार स्तर पर हमेशा आवाज उठाते रहा हूं और आप सभी के सहयोग से संघर्ष रूप से इस कार्य को करने के लिए मैं हमेशा तत्पर रहता हूं '।

चिंतन सिविल में संस्कृत मदरसा शिक्षकों के समस्याओं पर विशद विवेचना करते हुए संघ के अध्यक्ष सचिव और राज्य से आए संघ के संयुक्त सचिव ने कहा कि जिला स्तर पर संगठन को और मजबूत करने की जरूरत है और नए को को संघ में स्थान देने की जरूरत है इसके पूर्व संघ के तरफ से रिक्त पदों को भरने के लिए चिंतन शिविर में सभी की सहमति प्राप्त की गई सहमति के उपरांत ध्वनि मत से विभिन्न पदों पर शिक्षकों को संगठन के प्रभारी के रूप में नामित किया गया ' संघ के अध्यक्ष के रूप में गोपाल जी त्रिपाठी सचिव के रूप में रमेश नाथ मिश्रा संघ सचिव के रूप में विकास कुमार सिंह उपाध्यक्ष के रूप में सौरभ कुमार पांडे ,पूनम त्रिपाठी, मुनमुन मिश्रा, राकेश कुमार सिंह, सुभाष चंद्र रॉय, उप सचिव के पद पर अनिल कुमार पांडे और मुन्ना तिवारी परीक्षा प्रभारी में रानी कुमारी और अतुल कुमार चौबे, संगठन सचिव में अशोक कुमार झा , मीडिया प्रभारी निलेश कुमार त्रिपाठी, कार्यालय सचिव संजय कुमार राम और प्रभात कुमार' संघ के संरक्षण के रूप में सुरेंद्र सिंह आनंद पुष्कर सुलेश्वरी नाथ पांडे हरेंद्र सिंह सुरेंद्र ओझा अवधेश प्रसाद सिंह को संघ के तरफ से मनोनीत किया गया ' कार्यक्रम में सारण जिला के चार मदरसा के आए शिक्षक मोहम्मद शरीफ मोहम्मद सैफुल्लाह मोहम्मद अरशद को संघ के तरफ से सम्मानित किया गया ' जिसमें कार्यक्रम के अवसर पर सारण जिले के विभिन्न संस्कृत विद्यालय में मदरसा विद्यालय से आए शिक्षकों को अंग वस्त्र और पुष्प कुछ देकर सम्मानित किया गया जिसमें ललन पांडे बृजेंद्र पाठक भगवान ठाकुर सुरेंद्र ओझा सुरेश्वर नाथ पांडे उपेंद्र मिश्रा सहित दर्जनों अवकाश प्राप्त शिक्षक एवं शिकेतन एकेडमी उपस्थित थे '

गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षान्त समारोह में पूर्व राष्ट्रपति ने कहा: बदलते भारत की तस्वीर में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका काफी सराहनीय

प्रातः किरण संवाददाता

सासाराम (रोहतास) भारत गणराज्य के 14वें राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने कहा है कि बदलते भारत की तस्वीर में महिलाओं एवं दबे कुचले समुदाय का शैक्षणिक विकास एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने कहा कि हमें शिक्षा के साथ-साथ अपनी संस्कृति और माटी से भी कसकर जुड़े रहना चाहिए ताकि कितनी भी विषम स्थितियां क्यों ना हो हम मजबू'' ती से उसका मुकाबला कर सकते हैं ।आज रोहतास जिले के जमुहार स्थित गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षान्त समारोह में मुख्य अतिथि पद से संबोधित करते हुए श्री कोविन्द ने यहां अधिक संख्या में बेटियों के गोल्ड मेडल प्राप्त करने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह बढ़ते बिहार और विकसित होते भारत की निशानी है। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे बिहार के राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर ने छात्रों का अहवान किया कि आप केवल नौकरी पाने वाली शिक्षा ग्रहण न करें बल्कि अपने शिक्षा से दूसरों को नौकरी प्रदान करने की क्षमता रखने का संकल्प लें । उन्होंने कहा कि आज लोग कृषि और व्यवसाय को अच्छी दृष्टि से नहीं देखते हैं जो की उचित नहीं है।

उन्होंने कई उदाहरण देते हुए कहा कि इंजीनियरिंग करने के बाद नौकरी छोड़कर लोग कृषि से अपनी आय को दुगनी कर रहे हैं और इस परिस्थिति में कई अन्य को रोजगार भी प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा कुलाधीपति गोपाल नारायण सिंह की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि ग्रामीण परिवेश में स्थित यह विश्वविद्यालय बिहार ही नहीं बल्कि राष्ट्र के शैक्षणिक मानचित्र पर स्थापित हो चुका है और निश्चित रूप से शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी संस्थान बनकर उभरा है ।कार्यक्रम को कुलाधिपति गोपाल नारायण सिंह ,बिहार के शिक्षा मंत्री सुनील कुमार ,भूमि राजस्व मंत्री दिलीप कुमार जायसवाल आदि ने भी संबोधित किया।

कार्यक्रम का संचालन गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉक्टर प्रोफेसर धर्मेश श्रीवास्तव ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन संस्थान के सचिव गोविंद नारायण सिंह ने किया ।इस अवसर पर मंचाशीन सभी अतिथियों के अलावे कुलाध्यक्ष एवं छपरा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉक्टर हरिकेश सिंह एवं लखनऊ विश्वविद्यालय के डॉक्टर संजय कुमार सिंह को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के आरम्भ में प्रबन्ध निदेशक त्रिविक्रम नारायण सिंह ने शिक्षा मंत्री एवं भू राजस्व मंत्री को पुष्प गुच्छ, प्रतीक चिन्ह एवम अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। अवसर पर सभी संकाय के अध्यक्ष ,वरीय शिक्षक ,शिक्षकेत्तर कर्मचारी, उपाधि एवं पदक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राए तथा उनके अभिभावक उपस्थित रहे।

गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षान्त समारोह पर रंगारंग कार्यक्रम आयोजित

प्रातः किरण संवाददाता

सासाराम (रोहतास) गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षान्त समारोह की संध्या में वाराणसी से आए कलाकारों ने अपने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।देवमंगल सभागार में अपने गायन,वादन और नृत्य की तिकड़ी से कलाकारों ने ऐसा जलवा विखेरा कि दर्शक देर रात तक जमें रहे।कार्यक्रम के संयोजक और कुलाधिपति के निजी सचिव योगेश उपाध्याय ने बताया कि युवा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कृत प्रस्तुति निर्देशक रुद्र शंकर मिश्रा की संस्था के गुरु पंडित माता प्रसाद मिश्र की अगुवाई में कार्यक्रम आयोजित किया गया।इसमे कत्थक कलाकार के रूप में सुश्री सुनिधि पाठक, अनन्या सिंह, यशिका डोलवानी, उदिता विश्वास और नेहा सिंह ने प्रस्तुति दी।कार्यक्रम के दौरान ड्रम पर उदय शंकर मिश्रा, तबला पर श्रीकांत मिश्रा, गायन में राघवेन्द्र शर्मा और वायलिन पर हेमंत ने जोरदार प्रदर्शन करके सबका मन मोह लिया।दर्शक के रूप में कुलाधिपति गोपाल नारायण सिंह, मैडम कुलाधिपति श्रीमती शैल सिंह समेत परिवार के सदस्य गण,शिक्षक गण एवं भारी संख्या में छात्र छात्राएं मौजूद रहे।

एक संपूर्ण और समृद्ध गांव की पहचान है गांव में पुस्तकालय का होना : बंटी पाण्डेय

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। एक संपूर्ण और समृद्ध गांव की पहचान है गांव में पुस्तकालय का होना। पुस्तकालय पढने की आदत विकसित करने के साथ-साथ दैनिक जीवन में सामाजिक कौशल और शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार लाता है। इन्हीं सोच के साथ बभनगवां ग्राम के करीब एक वर्ष पहले 1 सितंबर 2023 को गुरुकुल नामक एक लाइब्रेरी की स्थापना बंटी पाण्डेय के द्वारा किया गया। एक भेंट में लाइब्रेरी संचालक बंटी पाण्डेय बताते हैं कि मैं अध्ययन का एक ऐसा केन्द्र अपने गांव के नजदीक बनाना चाहता था जहां पठन पाठन का माहौल बने और शिक्षार्थियों में पढ़ाई को लेकर उत्सुकता जगने के साथ - साथ शिक्षा के प्रति समर्पण का भाव आए।शुरूआती दौर असमंजस भरा रहा। मन में नकारात्मक भाव आते थे क्या ग्रामीण क्षेत्र में मेरा सपना साकार होगा ? क्या ग्रामीण क्षेत्र के ये आर्थिक रुप से विपन्न परिवार से आने वाले शिक्षार्थी पुस्तकालय के खर्च को वहन कर पायेगें ? आदि आदि। समय का पहिया चल पड़ा, शिक्षार्थियों का प्यार मिला।

श्रम संसाधन विभाग के तत्वावधान में किया गया रोजगार कैंप का आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

आराःजिला नियोजनालय, आरा में श्रम संसाधन विभाग के तत्वावधान में एक दिवसीय रोजगार कैंप का आयोजन किया गया। इस कैंप का आयोजन वर्केश सॉल्यूशन एंड सर्विसेस प्राईवेट लिमिटेड द्वारा किया गया। जिला नियोजन पदाधिकारी अनीश तिवारी ने इस कैंप की जानकारी दी।

कंपनी ने लॉजिस्टिक्स, मैन्युफैक्चरिंग और आईटीआई सेवाओं में वेयरहाउस एग्जीक्यूटिव, ऑपरेटर, और ट्रेनिंग पदों के लिए साक्षात्कार आयोजित किए। इस रोजगार कैंप में कुल 65 आवेदक साक्षात्कार के लिए उपस्थित हुए, जिनमें से 48 आवेदकों का चयन किया गया। चयनित उम्मीदवारों को 15,000 से 18,000 तक का वेतन प्रस्तावित किया गया।

कंपनी ने यह साक्षात्कार बिहार, हरियाणा, नोएडा, और बेंगलुरु जैसे विभिन्न स्थानों के लिए आयोजित किया।इस अवसर पर जिला कौशल प्रबंधक संजय कुमार और राकेश कुमार के साथ अमृता कुमारी, इंदु कुमारी, अजीत कुमार, और अंकित कुमार भी उपस्थित थे।

स्मार्ट प्रीपेड मीटर में मानव हस्तक्षेप नहीं होने से विद्युत विपत्र में त्रुटि की संभावना नहीं : एईई बिक्रमगंज

प्रातः किरण संवाददाता

बिक्रमगंज(रोहतास) : विद्युत आपूर्ति अवर प्रमंडल बिक्रमगंज के सभी पुराने मीटरों को बदलकर स्मार्ट मीटर का अधिष्ठापन किया जा रहा है एवं स्मार्ट मीटर के अधिष्ठापन के समय उपभोक्ताओं से कोई भी शुल्क नहीं ली जाती है। स्मार्ट मीटर मे डाटा स्वतः ही बिलिंग सर्वर पर आ जाता है जिससे ऊर्जा रीडिंग के लिए मीटर रीडर की जरूरत नहीं पड़ती है एवं ऑन लाईन के माध्यम से समय पर विपत्र प्राप्त कर सकतें हैं एवं मानव हस्तक्षेप नहीं होने से विद्युत विपत्र में त्रुटि की संभावना नहीं रहती है। स्मार्ट मीटर के कारण बिलिंग प्रक्रिया अधिक पारदर्शी होने से उपभोक्ताओं में विद्युत विपत्र को समझने में सुविधा होती है। स्मार्ट प्रीपेड मीटर उपभोक्ता को दैनिक ऊर्जा खपत या राशि की कटौती की जानकारी वास्तविक समय में प्रदान करता है, जिससे उपभोक्ता अपने उपयोग की आदतों को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं और ऊर्जा की बचत कर अपने विपत्र की राशि को कम कर सकतें हैं। वास्तविक समय डाटा की उपलब्ध होने से अधिक खपत करने वाले उपकरणों की पहचान कर सकतें हैं, जिससे ऊर्जा बचत करने के उपाय ढूंढ़ सकतें हैं। स्मार्ट मीटर अधिष्ठापन

से पूर्व विद्युत बकाया राशि को किस्तों में भुगतान करने की व्यवस्था की गई है, जिससे उपभोक्ताओं को बकाया राशि एक मुश्त जमा करने की वित्तीय भार से मुक्ति मिलती है। भुगतान ऊर्जा विभाग, केन्द्र सरकार के द्वारा प्रदत दिशा-निर्देश के अन्तर्गत किसी भी उपभोक्ता को पोस्टपेड से प्रीपेड में परिवर्तित करते समय बकाये की राशि की वसूली किसी भी कीमत पर प्रतिमाह पिछले तीन माह की औसत खपत के 25 प्रतिशत से ज्यादा की जा सकती है। स्मार्ट मीटर द्वारा नये विद्युत संबंध स्थापित करने हेतु किसी भी प्रकार का प्रतिभूति राशि नहीं लिया जाता है।पहले से लिए गए प्रतिभूति की राशि को स्मार्ट मीटर लगने के उपरांत वापस भी किया जाता है। स्मार्ट मीटर अधिष्ठापन उपरांत यदि मैक्सिमम डिमांड स्वीकृत भार से बढ़ जाता है तो उपभोक्ता को छः माह तक मैक्सिमम डिमांड शुल्क से राहत दी जाती है। स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं के परिसर में सोलर पैनल अधिष्ठापन के उपरान्त स्मार्ट मीटर को नेट मीटर में बदल दिया जाता है, जिससे उपभोक्ताओं का अलग से नेट मीटर खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।स्मार्ट मीटर से प्राप्त स्टीक और विस्तृत डेटा समस्याओं का समाधान जल्दी करने में मदद करता है। उपभोक्ता को मोबाइल एप के माध्यम से ही विपत्र प्राप्त हो जाता है तथा बिना कार्यालय गए अपने स्मार्ट मीटर का रिचार्ज भी कर सकते है। त्रुटिरहित विपत्रीकरण से उपभोक्ताओं को विद्युत कार्यालय का चक्कर नहीं लगाना पड़ता है।

विद्युत विभाग ने दो लोगों पर किया प्राथमिकी दर्ज

प्रातः किरण संवाददाता

बिक्रमगंज(रोहतास) : विद्युत ऊर्जा चोरी को लेकर चलाये जा रहे विशेष अभियान तहत कनीय विद्युत अभियंता बिक्रमगंज नवदीप गोयल के नेतृत्व में एक जांच दल का गठन किया गया । जांच दल द्वारा अवैध रूप से विद्युत ऊर्जा चोरी को लेकर दो लोगों पर प्राथमिकी दर्ज कराई है । बताते चले कि बकायेदार उपभोक्ताओं का विद्युत विपत्र की राशि बकाया रहने के कारण विभाग द्वारा विशेष अभियान चलाकर विद्युत कनेक्शन काट रही है । परंतु कुछ उपभोक्ताओं द्वारा बिना बकाया राशि एवं रिकनेक्शन शुल्क जमा किए अवैध रूप से तार जोड़कर विद्युत ऊर्जा की चोरी करने लग रहे हैं । इसी बीच नगर पंचायत बिक्रमगंज के मोहल्ला श्याम नगर निवासी बिन्दा देवी पति उदय नारायण सिंह के बकाया पर विद्युत कनेक्शन कटने के पश्चात अवैध रूप से तार जोड़कर जलाने को लेकर 1लाख 23 हजार 424 रुपए दंडित राशि लगायी गयी है । आगे बताते चले कि मीटर बाईपास कर अवैध रूप से विद्युत ऊर्जा चोरी करने को लेकर आस्कामिनी नगर के अनीता राय पति मनोज कुमार राय पर 12 हजार 598 रुपए राजस्व की क्षति लगायी गयी है । सहायक विद्युत अभियंता राज कुमार द्वारा सभी उपभोक्ताओं से आग्रह किया गया कि जिनका बकाया पर लाइन कटा हुआ है वो अपना बकाया राशि एवं रिकनेक्शन शुल्क जमा करने के पश्चात ही विद्युत ऊर्जा का उपभोग करें एवं अनावश्यक होने वाली परेशानियों से बचें । जो उपभोक्ता मीटर बाईपास कर विद्युत ऊर्जा की चोरी कर रहे हैं । वह दुरुस्त कर लें तथा जो व्यक्ति बिजली का कनेक्शन नहीं लिए हैं वह कनेक्शन ले लें अन्यथा पकड़े जाने पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी ।

भिखारी ठाकुर लोकोत्सव 2024 की तैयारी समिति की समीक्षात्मक बैठक संपन्न

प्रातः किरण संवाददाता

आरा/भोजपुर 17 नवंबर। भिखारी ठाकुर लोकोत्सव 2024 को मनाने को लेकर आज स्थानीय पटेल बस पड़ाव परिसर स्थित भिखारी ठाकुर सांस्कृतिक मंच पर तैयारी समिति की समीक्षात्मक बैठक प्रो डॉ आलोक कुमार सिंह (रंगकर्मी) जैन कॉलेज की अध्यक्षता में संपन्न हुई।संचालन पत्रकार नरेंद्र सिंह ने किया।

भिखारी ठाकुर सामाजिक शोध संस्थान आरा के बैनर तले आयोजित बैठक के दौरान लोक गायिका अंकिता पांडे जो स्व शारदा सिन्हा की शैली की गायिकी करती है को बुलाने का निर्णय लिया गया।और अब तक की चल रही तैयारियों की समीक्षा करते हुए दो हजार स्मारिका निकालने पर बल दिया गया।शोध संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष नरेंद्र सिंह ने भोजपुरी पर परिचर्चा के संयोजक शोधार्थी रवि प्रकाश ह्लसूरजह्वऔर शोधार्थी सोहित सिन्हा के सुझावों पर भोजपुरी के शोधार्थियों को ज्यादा से ज्यादा कार्यक्रम में शामिल किया जाए इसपर आम सहमति बनाई गई।साथ अश्लील गायिकी से दर किनार करने का निर्णय लिया गया।

बैठक में डॉ किरण कुमारी , डॉ भीम तिवारी,व्यास कमलेश पासवान,वरिष्ठ रंगकर्मी प्रशांत रंजन,अर्जुन सिंह,रमेश कुमार सिंह उर्फ साधु जी,गांधी जी आदि शामिल रहे।

घायल को मंत्री संतोष सिंह ने पहुंचाया अस्पताल

प्रातः किरण संवाददाता

करगहर (रोहतास) थाना क्षेत्र के सासाराम चौंसा पथ मे सहुआर गांव के समीप रविवार को एक अनियंत्रित बाइक सवार ने एक अधेड़ में टक्कर मार दी। जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गया। घटना को अंजाम देकर बाइक सवार भागने में सफल हो गया।इस बीच मोहनियां गांव में मुखिया अरविंद सिंह के घर आयोजित शादी समारोह से कोचस की ओर जा रहे। श्रम संसाधन मंत्री संतोष कुमार सिंह ने अधेड़ को सड़क पर छटपटाते देखा। उन्होंने अपनी गाड़ी रोकवाई और तत्काल पुलिस वाहन से सीएचसी करगहर में भर्ती करवाया। जहां चिकित्सकों प्राथमिक उपचार के लिए बाद बेहतर इलाज के लिए सासाराम रेफर कर दिया।घटना के संबंध में बताया जाता है कि रुपैठा निवासी 60 वर्षीय रविंद्र राम सड़क किनारे पैदल करगहर जा रहे थे कि विपरीत दिशा से आ रहे एक अनियंत्रित बाइक सवार ने टक्कर मार दी।घटना को अंजाम देकर सवार बाइक लेकर भाग निकला ।इस घटना में अधेड़ गंभीर रूपसे जख्मी हो गया ।जिसका इलाज सदर अस्पताल में चल रहा है।

मंत्री ने जख्मी के परिजनों को आश्वासन दिया कि इलाज में परेशानी होने पर उन्हें सूचना दे।

सिविल सर्जन डॉ. शिवेंद्र कुमार सिन्हा ने पल्स पोलियो अभियान का भोजपुर के चंदवा सामुदायिक भवन में किया उद्घाटन

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। पुरे भोजपुर में पल्स पोलियो अभियान का आज शुभारंभ किया गया इस कार्यक्रम का उद्घाटन भोजपुर के सिविल सर्जन डॉ. शिवेंद्र कुमार सिन्हा ने आज, 17 नवंबर 2024 को चंदवा सामुदायिक भवन में किया।यह अभियान 17 नवंबर से 21 नवंबर तक चलेगा, जिसके दौरान जिले के शून्य से पाँच वर्ष तक के सभी बच्चों को पोलियो की दो खुराक पिलाई जाएगी। इस अभियान का लक्ष्य भोजपुर जिले में कुल 3.93 लाख बच्चों को पोलियो की दवा पिलाना है।

इस अभियान के तहत भोजपुर जिले में कुल 1,351 पल्स पोलियो टीम और 413 पर्यवेक्षक कार्य करेंगे। इनमें 1,151 घर-घर टीम, 115 ट्रांजिट टीम, 26 मोबाइल टीम और 17 एक-सदस्यीय टीम शामिल हैं।

भोजपुर जिले में यह पल्स पोलियो अभियान लगभग 11 महीने बाद आयोजित किया जा रहा है, इसलिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। सभी माता-पिता से अपील है कि वे पाँच वर्ष तक के अपने बच्चों को पोलियो की दो खुराक अवश्य पिलाएं।

पोलियो की दवा पिलाकर बीडीओ ने की अभियान की शुरूआत

संझौली(रोहतास)। संझौली प्रखंड स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में रविवार की सुबह पल्स पोलियो अभियान की शुरूआत बीडीओ प्रभा कुमारी द्वारा बच्चे को पोलियो की खुराक पिलाकर की गई। इस दौरान बीडीओ ने कहा कि अभियान में लगे पदाधिकारी व कर्मी अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए दो बूँद जिंदगी की बच्चों को पिलाएं। ताकि पोलियो का मरीज फिर से देखने को नहीं मिले। वहीं आम जनता से अपील की गई कि यह खुराक बच्चों के लिए बेहद लाजिमी है इससे बहुत सी बीमारियों के लिए कवच के रुप में सुरक्षा होती है। यह अभियान 17 नवंबर से 21 नवंबर तक चलना है। जिसमें बच्चों को पोलियो की खुराक दी जाएगी। मौके पर बीसीएम,आवास सहायक आदि पीएचसी के कई कर्मी मौजद थे।

अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन में अंतरराष्ट्रीय कलाकारों की प्रस्तुति

स्व. सन्मत कुमार जैन की 125वीं जयंती पर किया गया अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन का आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

आराःडॉ. जया जैन शैक्षणिक एवं सामाजिक कल्याण ट्रस्ट द्वारा स्व. सन्मत कुमार जैन की 125वीं जयंती पर अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन आयोजित हुआ । स्थानीय जेल रोड स्थित ललिता पैलेस में इस सम्मेलन का उद्घाटन श्री अभय कुमार जैन, डॉ. दिवाकर पांडेय डॉ. ओम प्रकाश राय, श्री आदित्य विजय जैन, डॉ. जया जैन व डॉ. नीरज सिंह ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया । इस अवसर पर डॉ. जया जैन ने कहा कि स्व. संमत कुमार जैन जी संगीत के परम अनुरागी थे, संगीत अनुरागियों को एकत्र कर वातावरण को गायन वादन से अनुप्राणित करना उनका अनुष्ठान था। कार्यक्रम में कलकत्ता से पधारी शास्त्रीय गायिका सोमा चक्रवर्ती ने राग विहाग में विलंबित कैसे सुख सोए तीनताल में निबद्ध चिंता न करे, द्रुत तीनताल की बंदिश लट उलझी सुलझा जा बालमह्व व दादरा मिस्र पीलू सवारियां प्यार रे प्रस्तुत कर समां बाँधा । वही लखनऊ से पधारे सितार वादक श्री नीरज मिश्रा ने सितार वादन में नीरज मिश्रा ने राग मारवा में आलाप जोड़ झाला, विलंबित तीनताल व मध्यलय झपताल द्रुत लय तीनताल तथा धुन

प्रस्तुत कर दर्शको को मंत्रमुग्ध कर दिया । पटना से पधारे कथक नर्तक राजीव रंजन ने तीनताल में उपज, उठान, आमद, परण, लरी प्रस्तुत कर दर्शकों की तालियां बटोरी । तबले पर बनारस से पधारे तबला वादक श्री उदय शंकर मिश्रा ने सितार व कथक के साथ युगलबंदी कर रंग भरा । शास्त्रीय गायन पर सिवान से पधारे तबला वादक श्री अनूप कुमार दुबे उर्फ पप्पू महाराज ने व नृत्य पर तबला वादक श्री राजेश सिंह एवं हारमोनियम पर संतोष अनिशाबादी ने बखूबी संगत किया । मंच संचालन श्री आशीष कुमार जैन व धन्यवाद ज्ञापन संस्था की सचिव डॉ. जया जैन ने किया ।

महिला के साथ मारपीट करने वाले दारोगा सिपाही को जेल भेज बर्खास्त की मांग : प्रदेश अध्यक्ष आशुतोष सिंह

प्रातः किरण संवाददाता

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के बैठक जिला कार्यालय सासाराम में किया गया,जिसका अध्यक्षता राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी किसान के प्रदेश अध्यक्ष आशुतोष सिंह ने किया,इस बैठक के संचालन महिला प्रदेश अध्यक्ष संगीता देवी ने किया,इस बैठक को संबोधन करते हुए राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रदेश मुख्य प्रवक्ता सह किसान के प्रदेश अध्यक्ष आशुतोष सिंह ने कहा कि गौरक्षणी सासाराम घर में घुसकर दरोगा सिपाही ने गंदी-गंदी गाली देते हुए एक निर्दोष महिला के साथ मारपीट किया है जिसका वीडियो सबने देखा है,आम जनता अगर दरोगा सिपाही को गंदी-गंदी गाली देकर मारपीट करती तो पुलिस बिना केस दर्ज कर बिना जेल भेजे क्या छोड़ती पुलिस,मैं यह मांग करता हूं बिहार के मुख्यमंत्री,मुख्य सचिव,डीजीपी बिहार से और डेहरी डीआईजी,पुलिस अधीक्षक रोहतास से कि सभी घिनौना कार्य करने वाले दरोगा सिपाही पर केस दर्ज कर जेल भेजने के बाद पुलिस विभाग के नौकरी से बर्खास्त करने की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी मांग करती है ताकि भविष्य में कोई भी पुलिस विभाग के लोग किसी भी निर्दोष गरीब आम जनता महिला को गंदी-गंदी गाली देकर मारपीट करने का घिनौना कार्य नहीं कर सके,इस बैठक में महिला प्रदेश अध्यक्ष संगीता देवी ने भि सरकार पुलिस विभाग से मांग किये कि महिला को पितने वाले सभी सिपाही दरोगा पर कठोर कानूनी कार्रवाई करने की मांग किया है नहीं तो महिला विरोध प्रदर्शन करने के लिए बाध्य होगी,इस बैठक में मुख्य रूप से शामिल राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के किसान के प्रदेश अध्यक्ष बिहार सह प्रदेश मुख्य प्रवक्ता आशुतोष सिंह,महिला प्रदेश अध्यक्ष संगीता देवी,महिला नेत्री लता सिन्हा,सुषमा देवी,गंगा कुमारी सहित प्रदेश महासचिव अनिल सिंह,जिला अध्यक्ष रामबाबु,भूतपूर्व सैनिक जिला अध्यक्ष परशुराम सिंह,संजय दुबे,विमलेश सिंह,एनुल खान,मृत्युंजय पांडे,रविंद्र शर्मा,संतोष राय,सिकंदर शर्मा,सतीश पासवान,अर्जुन यादव,अमरजित गुप्ता,दीपक यादव,विशेश्वर प्रसाद गुप्ता,बिन्देकेशवरी आदि थे।

चंद्रवंशी समाज ने धूमधाम से जरासंध महाराज की मनाई 5227वीं जयंती जरासंध महाराज की वीरगाथा का लोहा ईश्वर ने भी मना था : प्रेम कुमार

प्रातः किरण संवाददाता

सासाराम (रोहतास) अखिल भारतवर्षीय चंद्रवंशी क्षत्रिय महासभा के द्वारा मगध सम्राट जरासंध महाराजजी की 5227वीं जयंती होटल मंगलम सासाराम मे धूमधाम से मनाई गई। जयंती समारोह के मुख्य अतिथि महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं बिहार सरकार के मंत्री डॉक्टर प्रेम कुमार ने अपने उद्बोधन में बताया कि मगध सम्राट जरासंध जी वीर, प्रतापी, दानी व भगवान शंकर के एकनिष्ठ भक्त थे। वे कुश्ती, मल्लयुद्ध में प्रवीण थे। उन्होंने भगवान श्री कृष्ण को 17 बार युद्ध में हराया था। समूचे भारत का एकीकरण करने के लिए सैकड़ो राजाओं को पराजित कर बंदी बनाया था। मगध सम्राट जरासंध महाराज जी शौर्य, वीरता के साथ-साथ अदम्य साहस के धनी थे। जब तक मानव का इतिहास रहेगा,भारत की धरती रहेगी,तब तक सूरज की भांति उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व याद किया जाता रहेगा। आने वाली युवा पीढ़ी को अपने आराध्य के कृतित्व और व्यक्तित्व को याद कर समाज में शांति एवं खुशहाली लाने के लिए आगे आना होगा। साथ ही साथ देश के लोकप्रिय माननीय प्रधानमंत्री जी के द्वारा 10 वर्षों में समाज के अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्तियों के लिए विभिन्न तरह के योजनाओं के संबंध में जानकारी देते हुए बताया की आयुष्मान भारत जिसमें 5 लाख तक का इलाज का व्यवस्था है। जो आवास के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना, फुटपाथ दुकानदारों के लिए पीएम सौ निधि योजना महिलाओं के लिए प्रधानमंत्री उज्जवला गैस योजना, प्रधानमंत्री जनधन योजना मुद्रा योजना सहित विभिन्न योजनाओं के चर्चा करते हुए लोगों से अपील की कि विकसित भारत संकल्प यात्रा सभी पंचायत में और सभी शहर के वार्डों में रथ के माध्यम से माननीय मोदी जी के 10 वर्षों के किए गए विकास की जानकारी दी जा रही है एवं छुटे हुए गरीबों को फिर से निबंध करने का विभिन्न योजनाओं में अवसर मिल रहा है, डॉ कुमार ने कहा माननीय मोदी जी ने पिछडा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा प्रदान किये और पिछड़े वर्गों के लिए लायी गई योजनाओं से लाभान्वित हो रहा है' संगठन को गांव गांव तक विस्तार के संबंध में कहा कि गांव की ओर जाएं और महासभा की संगठन के विस्तार करें एक जुटता का परिचय दें मगध सम्राट जरासंध के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके बताए रास्ते पर चलकर आत्मनिर्भर भारत विकसित भारत बनाने का सपना माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी का है। संगठन के बल पर राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने के लिए लोगों को आह्वान किया सामाजिक बुराई नशा एवं जुआ से नई पीढ़ी को दूर रखने की सलाह दि वर्ष 2024-25 को संगठन पर्व के महासभा चल गांव की ओर का उन्होंने नारा दिया युवाओं को बाप दादाओ के संगठन को और जीवन एवं मजबूत करने के लिए आगे आने का उन्होंने आह्वान किया। दक्षिण बिहार प्रदेश अध्यक्ष कृष्णा कुमार चंद्रवंशी जी अपने संबोधन में कहा कि समाज में महिलाओं को हर क्षेत्र में आगे आना हो ताकि समाज का संपूर्ण विकास होगा उन्होंने कहा कि महिलाओं में जागृति लाने के लिए उनकी शिक्षा पर विशेष ध्यान देना होगा अब महिला अबला नही सबला बनकर हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। इसे समाज के अंतिम पायदान पर रह रहे हैं लोगों तक पहुंचाना होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाअध्यक्ष प्रकाश चंद्रवंशी ने की। मौके पर प्रदेश अध्यक्ष कृष्ण कुमार चंद्रवंशी राष्ट्रीय महामंत्री नीलम चंद्रवंशी प्रदेश महामंत्री पप्पू चंद्रवंशी उपाध्यक्ष विजय चंद्रवंशी नागेंद्र चंद्रवंशी जिला महासचिव महासभा प्रेम प्रकाश सिंह चंद्रवंशी, मंटू चंद्रवंशी, दीपक चंद्रवंशी, मनोज चंद्रवंशी, पन्नू चंद्रवंशी, चंदन चंद्रवंशी, गुप्तेश्वर मुखिया, विजय आदि थे।

पैक्स चुनाव को लेकर कुर्था प्रखंड में बढ़ी गहमागहमी

प्रखंड मुख्यालय के बाहर दिख रहा है मेले जैसा नजारा

■ नामांकन के दूसरे दिन 8 पैक्स अध्यक्ष प्रत्याशी व 51 सदस्यों ने किया नामांकन

प्रातः किरण संवाददाता

कुर्था (अरवल) प्राथमिक सहयोग साख समिति पैक्स चुनाव को लेकर इन दोनों प्रखंड क्षेत्र में काफी गम गामी बढ़ गई है नामांकन के दूसरे दिन ही प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न पंचायत से अध्यक्ष पद के लिए नामांकन करने आए प्रत्याशी गाजे बाजे के साथ डीजे के धुन पर थिरकते हुए प्रखंड मुख्यालय पहुंच रहे हैं वही डीजे के साथ लौंडे के नाच भी खूब नाचे जा रही है हालांकि रविबार को नामांकन के दूसरे दिन कुर्था प्रखंड मुख्यालय के बाहर विभिन्न पदों के प्रत्याशी के समर्थक हाथों में फूल माला लेकर प्रखंड मुख्यालय के बाहर अपने-अपने प्रत्याशियों के समर्थन में नारे लगाते दिख रहे थे वहीं विभिन्न पदों के प्रत्याशी नामांकन के बाद ही अपने-अपने पंचायत क्षेत्र से जीत के दावे करते दिखे हालांकि नामांकन के पहले दिन कुर्था प्रखंड के निघवा पंचायत से पैक्स अध्यक्ष पद के लिए राकेश कुमार ने अपनी नामजदगी का पर्चा दाखिल किया वहीं पिजरावा पंचायत से अध्यक्ष पद के लिए निहोरा राय ने अपना नामांकन करवाया तो नदौरा पंचायत से बीरेंद्र शर्मा ने अपना नामांकन दाखिल किया जबकि कोडमरई पंचायत से बच्च यादव समेत आठ अध्यक्ष पद के लिए नामजदगी का पर्चा दाखिल किया गया जबकि सदस्य पद के लिए अति पिछड़ा वर्ग से पुरुष एक महिला 1 अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग से पुरुष तीन महिला एक सामान्य सदस्य पुरुष छः महिला चार पिछड़ा वर्ग से पुरुष पांच महिला एक ने अपनी नामजदगी का पर्चा दाखिल किया।और इस प्रकार दूसरे दिन अध्यक्ष पद के लिए आठ लोगों ने नामांकन किया इस बाबत प्रखंड निर्वाचित पदाधिकारी निशा कुमारी ने बताया कि नामांकन का कार्य 16 नवंबर से शुरू कर दी गई है जो 18 नवंबर तक चलेगा।

जो प्रखंड के 8 पंचायत में पैक्स चुनाव किया जाएगा उन्होंने बताया कि नामांकन में होने वाले भीड़ को देखते हुए चार काउंटर बनाए गए हैं दो -दो पंचायत कर चार काउंटर बनाया गया है अत्यधिक भीड़ को देखते हुए कार्यालय के आगे बैरिकेडिंग किया गया है। हालांकि नामांकन के पहले दिन लोगों का भारी भीड़ देखने को मिला वह अपने हाथों में फूल माला लिए प्रत्याशियों का इंतजार कर रहे थे जैसे ही प्रत्याशी नामांकन कर बाहर निकल रहे थे वह फूल माला पहनते हुए जयकारे भी लगा रहे थे पुलिस प्रशासन की व्यवस्था बेहतर दिखे और व अनावश्यक किसी को भी प्रखंड परिसर में आने नहीं दे रहे थे।

शेरघाटी में प्रथम दिन पैक्स अध्यक्ष पद के लिए 5 तो सदस्यो के लिए 9 अभ्यर्थियों ने कराया नामांकन

शेरघाटी। पैक्स चुनाव को लेकर रविवार को शेरघाटी प्रखंड क्षेत्र के अलग-अलग पंचायत से 5 अध्यक्ष पद समेत 9 सदस्यों ने अपना नामांकन पर्चा दाखिल किया है। इधर जानकारी देते हुए प्रखंड विकास पदाधिकारी स्नेहिल आनंद ने बताया कि नामांकन पर्चा के प्रथम दिन बेला से 1 अभ्यर्थी ने नामांकन पर्चा भरा है, जबकि कचौड़ी पंचायत से दो अभ्यर्थी चाँपी पंचायत से दो अभ्यर्थी अध्यक्ष पद के लिए नामांकन पर्चा भरा है। जबकि बेला पंचायत से 6 सदस्य एवं कचौड़ी पंचायत से 3 सदस्यों ने नामांकन दाखिल किया है, इस प्रकार कुल 9 सदस्य पद के लिए नामांकन पर्चा भर गया है। जबकि पांच अध्यक्ष पद के लिए नामांकन दाखिल किए गए हैं पूरे नामांकन प्रक्रिया को देख रहे उन्होंने बताया कि पांच पंचायत पैक्स के लिए आर ओ टेबल लगाया गया है। जहां शांति पूर्ण तरीके से नामांकन प्रक्रिया की किया जा सके वही नामांकन प्रक्रिया को बेहतर व शांतिपूर्ण कराए जाने को लेकर सुरक्षा व्यवस्था बेहतर किए गए हैं।

आपसी झगड़े में कलयुगी मां ने मासूम बेटे को पटक-पटककर मार डाला

इलाज के दौरान बच्चे ने सदर अस्पताल के सीएनसीयू लाने के दौरान तोड़ा दम

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। आरा में पति-पत्नी की आपसी झगड़े में कलयुगी मां ने अपने ही मासूम बेटे को जमीन पर पटक-पटककर मार डाला। इलाज के लिए सदर अस्पताल के एसएनसीयू में लाने के दौरान उसने दम तोड़ दिया। जानकारी के अनुसार मृत बच्चा दिल्ली के पंजाबी बाग जिला के नागलोई थाना क्षेत्र के निहाल विहार निवासी रविनेश कुमार का ढाई माह का पुत्र है। इधर मृत बच्चों के पिता रविनेश कुमार ने बताया कि करीब पन्द्रह दिनों से उसकी पत्नी जूही देवी की दिमागी हालत ठीक नहीं चल रही है। जिसके कारण वह बराबर झगड़ा करती है। शनिवार को वह अपनी पत्नी जूही देवी एवं दोनों बच्चों के साथ ट्रेन पर सवार होकर अपने ससुराल कोईलवर थाना क्षेत्र के दौलतपुर गांव आ रहा था। तभी ट्रेन में ही बीच रास्ते मे उसकी पत्नी से घरेलू विवाद को लेकर झगड़ा हो गया। झगड़े के दौरान उसकी पत्नी द्वारा उसके साथ हाथापाई व झोटा-झोटी गई। उसकी पत्नी द्वारा उसके हाथ में दांत भी काट लिया गया। रविवार की दोपहर जब वे लोग आरा स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर एक पर ट्रेन से उतरे तो फिर उन्होंने झगड़ा शुरू कर दिया। उसे दौरान उसकी पत्नी द्वारा उसके ढाई माह के बेटे को उठाकर प्लेटफार्म पर पटक दिया गया। जिससे उसकी हालत गंभीर हो गई। इसके बाद उन दोनों के द्वारा उसे इलाज के लिए आरा अस्पताल के एसएनसीयू में लाया गया। लेकिन इलाज के लिए ले जाने से पहले दोबारा दोनों पति-पत्नी झगड़ा करने लगे। तभी उसकी पत्नी द्वारा अपने बेटे को गोद में उठाकर दोबारा जमीन पर पटक दिया गया। जब वहां मौजूद लोग दोनों को झगड़ते और झगड़े के दौरान बच्चों को पटकते देखा तो उन्होंने बच्चे को उससे छुड़ाया और जख्मी बच्चे इलाज के लिए सीएनसीयू में ले गए। जहां चिकित्सक ने देख बच्चे को मृत घोषित कर दिया। इसके पश्चात परिजन अपनी स्वेच्छा से उंसके शव का बिना पोस्टमार्टम कराए ही वापस घर ले गए। जबकि दूसरी दूसरी तरफ मृत बच्चे की मां जूही देवी ने बताया कि जब वह गर्भवती थी तो उसके ससुराल वालों ने उसे घर से निकाल दिया और कहा कि तुम किराए पर रहो।

उसका इलाज भी नहीं कराया गया। जिसको लेकर वह उस समय अपने मायके दौलतपुर गांव चली आई थी। प्रसव हो जाने के बाद वह वापस दिल्ली चली गई थी। शनिवार को वह अपने पति रविनेश कुमार एवं दोनों बच्चों के साथ ट्रेन पर सवार होकर अपने मायके दौलतपुर आ रही थी। उसी दरमियान उनके बीच झगड़ा हो गया। तभी उसके बच्चे की तबीयत खराब हो गई तो वह आरा स्टेशन उतरी और बच्चे को इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल ले आई।

टूनार्मेंट मे जीत हासिल करने पर काउप मुखिया ने किया बालबाँध वारियर्स टीम के खिलाडियों को सम्मानित

प्रातः किरण संवाददाता

गडहनी। प्रखण्ड क्षेत्र के काउप पंचायत अन्तर्गत बालबाँध गांव स्थित काली मंदिर मे देवेन्द्र कुमार उर्फ फोंटी के एवं ग्राम पंचायत मुखिया के नीजि आवास पर समाजिक कार्यकर्ता अरूण राय की अध्यक्षता मे सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।समारोह का संचालन करते हुए समाजिक कार्यकर्ता सह टीम कोच असीम कुमार राय उर्फ टुनटुन बाबा के कहा कि कोसियर मे आयोजित ब्रह्मभट्ट युवा जागरण खेल महाकुंभ 2024 मे कैप्टन अर्जुन भट्ट के नेतृत्व मे बालबाँध वारियर्स टीम के खिलाडियों ने शानदार प्रदर्शन कर जीत का परचम लहराया और टूनार्मेंट का कप जीत गांव प्रखण्ड को गौरवान्वित किया।इस उपलब्धि के लिए हम सभी टीम को बधाई शुभकामनायें देते हैं।

इस पल को यादगार बनाते हुए आज टीम वारियर्स को आईआरबी झारखंड के क्षेत्रीय मंत्री देवेन्द्र कुमार उर्फ फंटी एवं ग्राम पंचायत के मुखिया मनीषा देवी, अरूण राय के द्वारा अंगवस्त्र शॉल व फूलमाला के साथ सम्मानित किया गया साथ ही इस अपार सफलता की बधाई शुभकामनायें दी।

सम्मानित होने वालों मे अर्जुन कुमार भट्ट, आशिष भट्ट, सुमन्त भट्ट, रितेश भट्ट, उर्फ बबलु, कुन्दन कुमार भट्ट, आकाश कुमार भट्ट, राजा भट्ट, लुई कुमार, संदीप भट्ट, उपदेश भट्ट, दया शंकर भट्ट, अभिनाष भट्ट, वैभव भट्ट, कमेंट्रेटर प्रमोद कुमार राय उर्फ तनु बाबा, उपदेश भट्ट शामिल रहे।इस अवसर पर ग्रामीण रंजीत कुमार शर्मा, असीम कुमार राय उर्फ टुनटुन बाबा, अमित कुमार सिंघम, रमेश कुमार भोला, मंटु तिवारी, लक्की प्रधान, हरेराम राय, भागीरथी राय, परशुराम राय, लालबाबु भट्ट, दिनेश राय, अरुण राय, रविरंजन बड़क, राम प्यारे राम, रविन्द्र राय, शानू, सिन्टू, भीम, राजेश राय सहित सैंकडो ग्रामीण जनता ने टीम वारियर्स को जीत की बधाई दी।

स्वस्थ्य प्रतिस्पर्द्धा के प्रति लगाव विकास का द्योतक है:दीपक कुमार सिंह

नई आशा द्वारा आयोजित तीन दिवसीय टूनार्मेंट सम्पन्न

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। वीर कुंवर सिंह स्टेडियम में नई आशा द्वारा आयोजित तीन दिवसीय माता शबरी क्रिकेट टूनार्मेंट-2024 के फाइनल मैच में आज रॉयल रेंजर्स उदवंतनगर ने पहरपुर हिरोज को को 17 रनों से हराकर टूनार्मेंट पर कब्जा जमा लिया। टूनार्मेंट का उद्घाटन राज्य के अपर मुख्य सचिव राजस्व व ग्रामीण विकास विभाग दीपक कुमार सिंह ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर एसीएस श्री सिंह ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि नई आशा द्वारा आयोजित टूनार्मेंट से समाज के हाशिए पर खड़े लोगों में एक ऊर्जा का संचार होता दिख रहा है। पिछले वर्ष भी मैं आया था। इस बार खिलाड़ियों के बीच ज्यादा उत्साह दिखाई दे रहा हैं। यह संकेत है कि उनके बीच विकास एवं अपने प्रतिभा विस्तार की ललक बढ़ रही है और नई आशा अपने उदेश्यों में सफलता की ओर बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि महादलित समाज को मुख्य धारा में शामिल करने एवं उनके बीच प्रतिस्पर्धा कायम कराने का यह एक बेहतर माध्यम है। जिलाधिकारी तनय सुल्तानिया तथा पुलिस अधीक्षक मिस्टर राज ने ह्यनई आशाह्व की पूरी टीम को बधाई देते हुए समाज के अंतिम पायदान पर खड़े महादलित खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य की कामनाएँ की।

होटल मौर्य के कार्यपालक निदेशक बी.डी सिंह ने महादलित युवकों के विकास के लिए किए जा रहे कार्यों के लिए डॉ भीम सिंह भवेश को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने विजेता और उप विजेता टीम को मौर्या होटल में आमंत्रित किया। ज्ञान ज्योति विद्यालय के निदेशक आदित्य विजय जैन द्वारा नई आशा द्वारा सामुदायिक सेवाओं की चर्चा करते हुए हर संभव मदद का आश्वासन दिया गया। डॉ विजय गुप्ता ने विजेता-उपविजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत करने के साथ साथ महादलित युवाओं के बीच फुटबाल मैच कराने का प्रस्ताव भी दिया। आज सेमिफाईलन में हसन बाजार हंटर को पहरपुर हिरोज तथा रॉयल रेंजर्स उदवंतनगर ने बहादुरपुर वैरियर्स को हराया।

डीडीसी के नहीं रहने से विकास ठप: आनंद चंद्रवंशी

प्रातः किरण संवाददाता

अरवल। उप विकास अयुक्त यानि डीडीसी जिले के विकास के मुख्य धुरी होते हैं, लेकिन विगत तीन महीने से अरवल जिले में उपविकास आयुक्त के नहीं रहने से सभी विकासात्मक कार्य ठप है उक्त बातें भाजपा नेता सह पूर्व जिला पार्षद आनंद कुमार चंद्रवंशी ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी एवं विजय सिन्हा को पत्र लिख कर कहा है, कि अरवल जिला मे विगत तीन महीने से उपविकास आयुक्त का पद रिक्त हैं जिससे सरकार के सभी वैसे काम नहीं हो रहे है जो उपविकास आयुक्त से होकर जाता है, मनरेगा का काम हो या पंचायती राज विभाग काम सभी ठप है। ग्राम पंचायत के मुखिया और ब्लॉक प्रमुख तथा जिला परिषद, सभी का योजनाएं अधर में पड़ा हुआ है, मनरेगा मजदूर का मजदूरी भी अटका पड़ा है। बिहार में सुशासन की सरकार है फिर भी किस वजहों से उपविकास आयुक्त का पोस्टिंग नहीं हो रहा है यह चर्चा का विषय जिला मे बना हुआ है अतः मुख्यमंत्री और दोनों उपमुख्यमंत्री से मांग है कि एक सप्ताह के अंदर अरवल मे उपविकास आयुक्त की नियुक्ति करे। बताते चलें कि 29 जुलाई को उपविकास आयुक्त अरवल रवीन्द्र कुमार को स्थानांतरित दूसरे जगह हो गया था जब से अबतक कोई जिले में डीडीसी का नियुक्ति नहीं हुआ। डीडीसी से संबंधित सभी विभाग के कर्मचारी अपने अपने टेबल पर आराम फरमाते नजर आते हैं और जनता भटकते रहते हैं इस अव्यवस्था को शीघ्र दूर की जानी चाहिए।

माहेर ममता निवास में जरूरतमंदों को कराया गया भोजन

प्रातः किरण संवाददाता

रक्सौल। कलवार महिला मंच के सदस्यों के संस्था के सामाजिक सरोकार तहत असहायक महिलाओं के उत्थान के लिए काम करने वाली संस्था माहेर ममता निवास में जरूरतमंदों के बीच फूड पैकेट का वितरण किया गया। कलवार महिला मंच की अध्यक्ष अनिता देवी की अध्यक्षता में पहुंची मंच के महिलाओं की टीम के द्वारा माहेर ममता निवास में आवासित महिलाओं की सेवा करते हुए, उनके बीच फूड पैकेट वितरण किया गया। माहेर ममता निवास पहुंचने पर कलवार महिला मंच के पदाधिकारियों का माहेर ममता निवास के स्थानीय प्रबंधक विरेन्द्र कुमार के नेतृत्व की टीम के द्वारा सम्मानित किया गया. इस दौरान मंच की अध्यक्ष अनिता देवी ने कहा कि जरूरतमंदों की मदद करना मानवता की सबसे बड़ी सेवा है. इससे बड़ा कोई धर्म नहीं है, इसी सोच के तहत हमलोगों ने यहां फूड पैकेट का वितरण किया है और इस सेवा को हमलोग आगे भी जारी रखेंगें। मौके पर सिंकू जायसवाल, मुस्कान कुमारी, सुप्रिया बोदरा, विरेन्द्र कुमार सहित अन्य कलवार महिला मंच की सदस्य मौजूद थी। इसकी जानकारी कलवार कल्याण समिति के मीडिया प्रभारी मनोज कुमार गुप्ता ने दी है।

श्री सीताराम विवाह महोत्सव में अयोध्या निमंत्रण हेतु जनकपुर नेपाल से निकला जत्था

रक्सौल में किया गया भव्य स्वागत

प्रातः किरण संवाददाता

रक्सौल। प्रत्येक साल की भांति इस साल भी श्री सीताराम विवाह महोत्सव यात्रा जो जनकपुर धाम से वैवाहिक पत्रिका (निमंत्रण) तथा तिलकोत्सव लेकर अयोध्या जा रही है, जो जनकपुर धाम का सदियों पुराना परंपरा है, ताकि विवाह पंचमी महोत्सव हेतु अयोध्या वासियों को जनकपुर धाम आने के लिए निमंत्रित किया जा सके, इस यात्रा मे जनकपुर धाम मंदिर के मुख्य पुजारी राम रोशन दास, मधेश प्रदेश के मुख्यमंत्री सतीश सिंह, जनकपुर के मेयर मनोज कुमार साह एवं साधु संतों का जत्था पूरे गाजे -बाजे और सैकड़ो गाड़ियों के काफिला के साथ राम भक्तों के द्वारा जय श्री राम के नारा लगाते हुए रक्सौल के पावन धरती पर पहुंचा, जहां अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद सह राष्ट्रीय बजरंग दल, रक्सौल इकाई के कार्यकताओं के द्वारा भगवा गमछा एवं फूल माला पहनाकर जोरदार स्वागत किया गया। इस संबंध में विभाग प्रमुख दिग्विजय पार्थ ने बताया कि यह यात्रा नेपाल और भारत के हिंदुओं के अंदर ऊर्जा भरने के लिए पर्याप्त है। इस यात्रा के माध्यम से भारत और नेपाल के हिंदुओं के बीच आपसी भाईचारा और रोटी बेटी के संबंध को मजबूत करेगा, हम भले हैं दो अलग देश में रहते हैं, लेकिन दोनों देश के लोगों का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एक है और हम सभी इसे निरंतर मजबूत करते रहेंगे। इस आयोजन को सफल बनाने में जिला अध्यक्ष अरुण कुमार, जिला कोषाध्यक्ष राधेश्याम कुमार, बजरंग दल जिला कार्याध्यक्ष, नरेश कुमार, नगर अध्यक्ष सनी कुमार, सतीश कुमार, आशुतोष कुमार, राजेश कुमार, शशि कुमार, चंदन कुमार, टिंकू कुशवाहा, संदीप कुमार, विवेक पांडे, संतोष गुप्ता, मुकेश कुमार, इत्यादि सैकड़ो कार्यकताओं ने यात्रा को सफल बनाने हेतु अपना योगदान दिया।

ट्रक-कार की टक्कर में दंपति सहित पांच लोग जख्मी

करगहर (रोहतास) थानाध्यक्ष क्षेत्र के सोनवर्षा गांव के समीप सासाराम चौसा पथ में रविवार की सुबह ट्रक और कार के आमने-सामने की टक्कर में चिकित्सक दंपति सहित पांच जख्मी हो गए। स्थानीय ग्रामीणों के मदद से चिकित्सक दंपति को इलाज के लिए एक वाहन से सासाराम भेज दिया गया। जबकि कार में फंसे चालक को स्थानीय सीएचसी करगहर में भर्ती किया गया। जहां चिकित्सकों ने गंभीर स्थिति देखते हुए सदर अस्पताल सासाराम रेफर कर दिया।इस घटना के संबंध में बताया जाता है कि बक्सर जिला के राजपुर बाजार के चिकित्सक डॉक्टर दिनेश कुमार और उनकी पत्नी संगीता देवी सासाराम से बक्सर जा रहे थे कि सोनवर्षा गांव के समीप विपरीत दिशा से आ रहे हैं एक अनियंत्रित ट्रक ने कार में टक्कर मार दी। यह टक्कर इतनी जोरदार थी कि दोनों वाहन गहरी खाई में पलट गए और कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। ग्रामीणों ने चिकित्सक दंपति को इलाज के लिए सासाराम भेज दिया। जबकि गश्ती पुलिस ने कार में फंसे कुदरा थाना क्षेत्र के पंचगावा. निवासी चालक मनोज कुमार को सीएचसी में भर्ती कराया। वहीं दूसरी ओर ट्रक चालक और खलासी मारपीट के भय से घायल अवस्था में भागने में सफल हो गए।थानाध्यक्ष विजय कुमार ने बताया कि दोनों वाहनों को जब्त कर लिया गया। घटना में कार चालक का इलाज सदर अस्पताल में चल रहा है।

बच्चों के विवाद को लेकर युवक की पिटाई,जख्मी युवक का रसदार अस्पताल में कराया जा रहा है इलाज

आरा। शहर के टाउन थाना क्षेत्र के धनुपरा गांव में रविवार की सुबह बच्चों के विवाद को लेकर एक युवक की जमकर पिटाई कर दी गई। जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गया। इसके बाद परिजन द्वारा उसे इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया। जानकारी के अनुसार जख्मी युवक टाउन थाना क्षेत्र के धनुपरा गांव निवासी उमा शंकर चौधरी का 22 वर्षीय पुत्र रंजन कुमार है। इधर रंजन कुमार ने बताया कि उसका पड़ोसी द्वारा बराबर किसी ना किसी बात को लेकर उनसे झगड़ा करता है और मारपीट भी करता है। रविवार की सुबह उसका बेटा पड़ोसी के दरवाजे पर चला गया था तभी पड़ोसी उसे थप्पड़ मार कर भागने लगा। जब ये सब वह वहां पहुंचा और उससे पूछा कि तुमने मेरे बेटे को क्यों मारा। इसी बात को लेकर उनके बीच का कहासुनी हुई। इसके बाद उक्त पड़ोसी ने उसकी जमकर पिटाई कर दी। उसके बाद उसने ईट से मारकर उसका सिर फाड़ दिया। जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गया। इसके बाद उसे इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया। वहीं दूसरी ओर जख्मी रंजन कुमार ने अपने उक्त पड़ोसी पर अपने बेटे को उसके दरवाजे पर जाने को लेकर थप्पड़ मारने व पूछने पर खुद के साथ मारपीट करने व ईट से मारकर सिर फाड़ने का आरोप लगाया है। हालांकि पुलिस अपने स्तर से मामले की छानबीन कर रही है।

आमस पुलिस की बड़ी कार्रवाई ,अलग अलग इलाको में छापेमारी कर 10 किया गिरफ्तार ,भेजा गया जेल

शेरघाटी/आमस । पुलिस ने अलग-अलग इलाकों में छापेमारी करते हुए अलग-अलग कांड में फरार चल रहे 10 आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है थाना अध्यक्ष शैलेश कुमार ने बतलाया कि थाना क्षेत्र के अलग-अलग इलाके से फरार चल रहे वारंटी एवं अन्य प्रकार के आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है उन्होंने बताया कि थाना अंतर्गत बलखोरा टोला बिचकीला श्याम नगर नीमा , कुशा गांव से ठइह वारंटी , मनोज मांझी ,सुरेंद्र मांझी, सनोज मांझी तीनो पिता अन्तु मांझी 4. कौशल्या देवी पत्नी सनोज मांझी, रामरती देवी पत्नी अंतू मांझी 6. बिछिया देवी पत्नी मनोज मांझी सभी सा० विचकीला, सौरभ कुमार सिंह 8. गौरव कुमार सिंह , राजेश दास ,आमस थाना काण्ड संख्या अनिल मांझी गिरफ्तार करजेल भेज दिया।

भोजपुर में पंखे के कुंडी से लटका युवक का शव बरामद

परिजनों द्वारा खुदकुशी करने की कहीं जा रही है बात

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर जिले के संदेश थाना क्षेत्र के प्रतापपुर गांव में शनिवार की रात पंखे के कुंडी से लटका एक युवक का शव बरामद हुआ है। शव के मिलने से गांव में आसपास के इलाके में अफरा-तफरी का माहौल कायम हो गया। वहीं परिजन उसके ही द्वारा खुदकुशी करने की बात कह रहे है। जानकारी के अनुसार मृतक संदेश थाना क्षेत्र के प्रतापपुर गांव वार्ड नंबर तीन निवासी स्व.तपेश्वर सिंह का 35 वर्षीय पुत्र अमित कुमार उर्फ पप्पू है एवं वह पेशे से मजदूर था। घटना के संबंध में बताया जाता है कि शनिवार की रात जब घर के लोग अपने काम में व्यस्त थे। उसी बीच वह अपने कमरे में जाकर कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर लिया और पंखे के कुंडी से लटक कर खुदकुशी कर ली। कुछ देर बीत जाने के बाद जब कमरे से बाहर नही निकल और नही कोई आवाज नहीं आई तो उसकी पत्नी उसे बुलाने गई। उसने कमरे का दरवाजा काफी देर तक खटखटाया। लेकिन उसने नहीं खोला और नाही कोई आवाज दी। जिसके उसने घर के सभी सदस्यों को बुलाया। जिसके बाद परिजनों ने जब घर का दरवाजा तोड़ तो उन्होंने देखा कि वह पंखे के कुंडी से लटक रहा। इसके बाद परिजन के द्वारा उसके शव को नीचे उतर गया। इसके पश्चात परिजनों ने इसकी सूचना स्थानीय थाना को दी। सूचना पाकर स्थानीय थाना मौके पर पहुंची और शव को अपने कब्जे में लेकर उसका पोस्टमार्टम सदर अस्पताल में करवाया। वही मृतक ने खुदकुशी क्यों की। इसका कारण अभी स्पष्ट नहीं हो सका है। उधर पुलिस द्वारा बनाए गए मृत्यु समीक्षा रिपोर्ट के अनुसार मृतक की मौत गले में फांसी लगाने एवं दम घुटने के कारण होना प्रतीत होता है। हालांकि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत का कारण पूरी तरह स्पष्ट हो पाएगा। बताया जाता है कि मृतक की दो शादी हुई थी। पहकी शादी के कुछ साल बाद ही उसकी पत्नी की मौत हो गई थी। जिसके बाद उसने ढाई वर्ष पूर्व चरपोखरी थाना क्षेत्र के पसौर गांव निवासी प्रभावती देवी से शादी की थी। मृतक अपने तीन भाइयों में छोटा था। उसके परिवार में पत्नी प्रभावती देवी एवं एक दो वर्ष का पुत्र है। मृतक की मां सरस्वती देवी की मौत कुछ वर्ष पूर्व हो गई थी। घटना घटना के बाद मृतक के घर में कोहराम मच गया है। इस घटना के बाद मृतक की पत्नी प्रभावती देवी एवं परिवार के सभी सदस्यों का रो-रोकर बुरा हाल है।

सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापिका स्वर्गीय मोतिझरी कुमारी की प्रथम पुण्यतिथि मनी

प्रातः किरण संवाददाता

अरवल। भारतीय जनता पार्टी के जिला उपाध्यक्ष सह पूर्व उप प्रमुख भास्कर कुमार ने अपनी मां स्वर्गीय मोतिझरी कुमारी सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापिका के प्रथम पुण्यतिथि के पावन अवसर पर उनके चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित किया। इस अवसर पर भास्कर कुमार ने बताया कि मेरी मां शिक्षाविद थी एवं गरीब ,लाचार परिवार के मदद के लिए हमेशा तत्पर रहती थी।आज उनके अधूरे कार्यों को उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर उसे शत प्रतिशत पूरा करने के लिए उत्साहित रहता हु । गरीब और लाचार व्यक्ति की सेवा कर उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करता हु मानवता की पूजा ही सर्वोच्च पूजा है मेरी मां मुझे सिखाती थी।आज पूज्य माता जी के पुण्यतिथि पर माता जी के चरणों में पूजा अर्चना कर पुष्प श्रद्धांजलि अर्पित किया। आज मां की बदौलत ही मेरे पास सब कुछ है। मेरे लिए मेरी मां ही मेरी गुरु थी उसकी बताई हुई सारे बातों को स्मरण करने पर प्रतीत होता है कि मेरी मां मेरा आगे का मार्ग दर्शक अपने वचनों से सदैव बनी रहेगी। मां के चरणों में चरण स्पर्श।

पुलिस ने शराब कारोबारी को गिरफ्तार कर भेजा जेल

प्रातः किरण संवाददाता

शेरघाटी। पुलिस ने थाना क्षेत्र के नेशनल हाईवे 2 के किनारे पत्थरकट्टी गांव के निकट से पैशन प्रो बाइक पर शराब लाद कर ले जा रहे अंग्रेजी शराब के साथ एक शराब कारोबारी को पुलिस ने पकड़ा है, थानाध्यक्ष अजीत कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए परैया थाना क्षेत्र के दखनेर गांव के रहने वाला विक्रम कुमार को 19 बोतल अंग्रेजी शराब के साथ गिरफ्तार कर जेल भेज दिया

पूर्वोत्तर रेलवे के चौरा चौरी-गौरी बाजार-बैतालपुर स्टेशनों के मध्य परिचालन में हुआ बदलाव

प्रातः किरण संवाददाता

हाजीपुर। रेलवे द्वारा उन्नयन एवं परिचालनिक सुगमता हेतु पूर्वोत्तर रेलवे के चौरा चौरी-गौरी बाजार-बैतालपुर स्टेशनों के मध्य ऑटोमैटिक सिगनलिंग चालू करने हेतु एन आई कार्य के कारण ट्रेनों के परिचालन में बदलाव किया गया है तथा कुछ ट्रेनों का चौरा चौरी तथा गौरी बाजार स्टेशनों पर दिया गया ठहराव समाप्त किया गया है जिनका विवरण निम्नानुसार है -

दिनाक 18 एवं 19 नवंबर, 2024 को परिचालन रद्द की गयी ट्रेनें -

1.गाड़ी सं. 15080/15079 गोरखपुर-पाटलिपुत्र-गोरखपुर एक्सप्रेस

2.गाड़ी सं. 05095/05096 नरकटियागंज-गोरखपुर कैंट-नरकटियागंज स्पेशल

3.गाड़ी सं. 05039/05040 नरकटियागंज-बढ़नी-नरकटियागंज स्पेशल

4.गाड़ी सं. 05449/05450 नरकटियागंज-गोरखपुर कैंट-नरकटियागंज स्पेशल

5.गाड़ी सं. 05498 गोरखपुर कैंट-नरकटियागंज स्पेशल

इसके साथ ही दिनांक 19 एवं 20 नवंबर, 2024 को गाड़ी सं. 05497 नरकटियागंज-गोरखपुर कैंट का परिचालन रद्द रहेगी।

परिवर्तित मार्ग से चलायी जाने वाली ट्रेनें

गोरखपुर कैंट-कप्तानगंज-सिवान के रास्ते चलायी जाने वाली ट्रेनें -

1. 18.11.2024 को नई दिल्ली से खुलने वाली गाड़ी सं. 02570 नई दिल्ली-दरभंगा क्लोन स्पेशल। 2. 18.11.2024 को नई दिल्ली से खुलने वाली गाड़ी सं. 02564 नई दिल्ली-बरौनी क्लोन। 3. 19.11.2024 को लखनऊ से खुलने वाली गाड़ी सं. 15204 लखनऊ-बरौनी एक्सप्रेस।4. 18.11.2024 को लालगढ़ से खुलने वाली गाड़ी सं. 15910 लालगढ़-डिब्रूगढ़ अवध आसाम एक्सप्रेस।

5. 18.11.2024 को गोमतीनगर से खुलने वाली गाड़ी सं. 05741 गोमतीनगर-न्यू जलपाईगुड़ी स्पेशल

6. 19.11.2024 को गोमतीनगर से खुलने वाली गाड़ी सं. 05737 गोमतीनगर-कटिहार स्पेशल।7. दिनांक 18.11.2024 को उदयपुर से खुलने वाली गाड़ी सं. 19615 उदयपुर-कामाख्या एक्सप्रेस

8. 18.11.2024 को सरहिंद से खुलने वाली गाड़ी सं. 04526 सरहिंद-सहरसा स्पेशल

सिवान-कप्तानगंज-गोरखपुर कैंट के रास्ते चलायी जाने वाली ट्रेनें

19.11.2024 को दरभंगा से खुलने वाली गाड़ी सं. 02569 दरंभगा-नई दिल्ली क्लोन स्पेशल।2. 19.11.2024 को बरौनी से खुलने वाली गाड़ी सं. 02563 बरौनी-नई दिल्ली क्लोन स्पेशल। 3. 18.11.2024 को जयनगर से खुलने वाली गाड़ी सं. 14673 जयनगर-अमृतसर शहीद एक्सप्रेस।

सीयूएसबी में भारतीय भाषा माध्यम से वाणिज्य शिक्षा विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन

प्रातः किरण संवाददाता

गया।दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय सीयूएसबीके वाणिज्य एवं व्यवसाय अध्ययन विभाग एवं भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वाधान में ह्यभारतीय भाषा माध्यम से वाणिज्य शिक्षाह्ण विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन हो गया है। जन सम्पर्क पदाधिकारी मोहम्मद मुदस्सीर आलम ने बताया कि कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह के मार्गदर्शन में प्रो. सुब्रमण्यम शणमुगम अधिष्ठाता, प्रबंधन संकाय की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के आलोक में भारतीय भाषा माध्यम से वाणिज्य शिक्षा के विभिन्न पहलुओं जैसे- सतत विकास के लिए जरुरी संधारणीय वित्त, लघु व्यवसाय एवं उद्यमिता आदि पर व्यापक चर्चा हुई, इस कार्यक्रम समन्वयक डॉ. रचना विश्वकर्मा सहायक प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग ने बताया कि सात राज्यों से आये विशेषज्ञों ने बताया भारतीय भाषा से स्थानीय समुदाय तक पहुंचना आसान है और यह छोटे व्यवसाय और स्थानीय व्यापार को बढ़ाने में मदद भी करता है। भारत की भाषाएँ बहुत समृद्ध हैं जो स्थानीय से वैश्विक स्तर तक भारत के विकास के लिए बहुत आवश्यक हैं।विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए वाणिज्य शिक्षा का भारतीय भाषाओं में अध्यन एवं शोध होना जरूरी है ताकि अधिक से अधिक युवा अपनी भाषा में शिक्षा ले सकें। इसी के साथ नई किताबो को भारतीय भाषाओं में लाने की तैयारी की जा रही है जिससे उन छात्रों को मदद मिलेगी जो औपनिवशिक भाषा के कारण अपनी पठन-पाठन नही कर पाते हैं। जो देश में सकल नामांकन अनुपात को बढ़ावा देने में मददगार होगा।कार्यक्रम के प्रो. पवनेश कुमार इग्नू, नई दिल्ली, डॉ. आशीष कांत चौधरी काशी हिंदू विश्वविद्यालय, डॉ. प्रज्ञा प्रशांत गुप्ता बीबीडी विश्वविद्यालय, लखनऊ, डॉ. राशि केश पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, डॉ. जी.एन. पुरोहित जोधपुर, राजस्थान, गार्गी पंत शुक्ला स्वामी राम हिमालयन विश्वविद्यालय, उत्तराखंड, डॉ. नीरजा दीक्षित और डॉ. अशोक सेनगुप्ता स्कूल मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ, प्रो. नसीब अहमद जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली, निशांत शर्मा दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. विनय कांडपाल ग्राफिक एरा विश्वविद्यालय, उत्तराखंड, एवं डॉ. नरेंद्र कुमार कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल ने विषय-वस्तु, पुस्तक लेआउट और पुस्तक लेखन के महत्वपूर्ण दिशा निर्देश पर चर्चा कर किताब का ढांचा तैयार किया है।डॉ. चंदन श्रीवास्तव पूर्व शैक्षिक समन्वयक, भारतीय भाषा समिति एवं सहायक प्राध्यापक, काशी हिंदू विश्वविद्यालय ने भारत सरकार कि नीति एवं भारतीय भाषा को बढ़ावा देने के लिए गए प्रयासों पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी है इस सत्र में सभी लेखकों ने अपनी प्रतिक्रिया एवं प्रस्तावित पुस्तकों की संरचना का डिजिटल प्रस्तुति किया गया है` इस सत्र में भारतीय भाषाओं में पुस्तक लेखन के विशेष संदर्भ में सहयोग, नवाचार और क्रियाशील योगदान के महत्व पर भी जोर दिया गया है। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। साथ ही, पोस्टर प्रेजेंटेशन के विजेता छात्रों यथा - प्रथम स्थान राजेश और दीपक, दूसरे स्थान पर श्रुति, तीसरे स्थान पर खुशी, सुशांत शेखर कुमार और रोहन राज को पुरस्कृत किया गया है।

जनहित में राष्ट्रीय उच्च पथ 120 पर रोहतास पुलिस ने लगाई भारी वाहनों पर नो इंट्री

एसडीएम अनिल बसाक बोलें सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक रहेगी नो इंट्री

- नियम उल्लंघन करने वालों वाहनों पर कार्रवाई के साथ लगेगी जुमार्ना

प्रातः किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास) राष्ट्रीय उच्च पथ 120 के चौड़ीकरण के कार्य प्रगति पर होने के कारण बड़ी वाहन ट्रक, डम्फर, ट्रैक्टर का परिचालन राष्ट्रीय उच्च पथ-120 (एन0एच0-120) पथ पर सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक बंद रखने का आदेश एसडीएम बिक्रमगंज अनिल बसाक ने जारी किया है। जारी अपने आदेश में कहा है कि कार्यपालक अभियंता, राष्ट्रीय उच्च पथ प्रमण्डल, गया द्वारा प्रतिवेदित किया गया है कि राष्ट्रीय उच्च पथ सं0-120 में चौड़ीकरण एवं मजबूतीकरण कार्य प्रगति में है, जिसमें नासरीगंज-बिक्रमगंज पथ खण्ड का कार्य अंतिम चरण में है। जबकि बिक्रमगंज डुमरांव पथ खण्ड में तेन्दुनी चौक, बिक्रमगंज से डुमरांव तक पूरे पथ में वृक्षों का पातन, पुर्नस्थापन, दर्जनों पुल-पुलिया का निर्माण तथा पथ का चौड़ीकरण, मजबूतीकरण का कार्य तीव्र गति से कराया जा रहा है।

दिन में बड़ी संख्या में भारी वाहनों के परिचालन के कारण आये दिन ट्रैफिक जाम होने से कार्य कराने में बाधा उत्पन्न हो रही है। साथ हीं हर क्षण दुर्घटना की संभावना भी बनी रहती है। ऐसी परिस्थिति में भारी वाहनों के सुबह 8 बजे से रात 8 तक भारी वाहनों के परिचालन पर रोक लगाया गया है। उन्होंने कहा है कि इस दरम्यान वैकल्पिक मार्ग का उपयोग किया जा सकता है।

नासरीगंज से आरा-बक्सर-मलियाबाग जगदीशपुर-पीरो के तरफ जाने वाले भारी वाहनों को बडीहा मोड़ से बिहटा पीरो होकर तथा नासरीगंज से सासाराम जाने वाले वाहनों को नासरीगंज से आयरकोठा-अकोढ़ीगोला होकर सासाराम जाना होगा।

आगे कहा है कि सभी प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, अंचल अधिकारी, थानाध्यक्ष को नो इंट्री के अनुपालन कराने की जिम्मेवारी सौपी है। कहा है कि निर्धारित समयावधि के दौरान सभी प्रकार के भारी वाहनों का परिचालन बंद कराने हेतु आवश्यक कार्रवाई करना सुनिश्चित करेंगे।

ऑल इंडिया बैंक ऑफिसर्स कोन्फेडरेसन इकाई की बैठक हुआ सम्पन्न

प्रातः किरण संवाददाता

पटना। ऑल इंडिया बैंक ऑफिसर्स कोन्फेड़रेसन (अक्ळडउ), बिहार इकाई की एक अत्यावश्यक बैठक पटना के पाटलिपुत्र निवार्णा स्थिति सभागार में की गई। इस बैठक में लगभग सभी बैंकों के प्रतिनिधि शामिल हुए। बिहार इकाई के सचिव एवं अक्ळडउ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अमरेश विक्रमादित्य ने बताया कि यह अहम बैठक 12 नवम्बर को मुंबई में हुए अक्ळडउ के कार्यकारी समिति के हुए बैठक के मद्धेनजर की गई है। उन्होने बताया कि बैठक में आनेवाले दिनों में अक्ळडउ के कार्यों कि रूपरेखा तय की गई। विदित हो कि राष्ट्रीयकृत बैंको मानव संसाधन की अत्यधिक कमी के कारण वर्तमान में कार्यरत कर्मचारियों एवं अधिकारियों पर काम का अत्यधिक दवाब है। अधिकतर अधिकारी अवसाद में रह रहें है तथा अपने परिवार एवं समाज से कट चुके हैं। बैंको में ६ङ्कर१‘-’ाी ु”ल्लू एक महत्वपूर्ण चुनौती है जिससे कई अधिकारी कार्य छोड़कर भी जा रहें हैं। मानव संसाधन की कमी के कारण ग्राहक सेवा भी बाधित होती है। इस बैठक मे बिहार इकाई के सचिव एवं अक्ळडउ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अमरेश विक्रमादित्य ने यह भी बताया कि बैंकिंग क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियों के समाधान के लिए, अक्ळडउ का आंदोलनात्मक रुख अखिल भारतीय बैंक अधिकारी परिसंघ (अक्ळडउ) ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (ढरइ२) में व्याप्त गंभीर मुद्दों को संबोधित करने के लिए एक समन्वित और निर्णायक आंदोलन शुरू करने का संकल्प लिया है। 12 नवंबर 2024 को मुंबई में आयोजित कार्यसमिति की बैठक में निम्नलिखित मुद्दों पर चर्चा की गई और महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए:

मुख्य मुद्दे और मांगें

1. जनशक्ति की भारी कमी
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में कर्मचारियों की तीव्र कमी ने काम के बढ़ते बोझ और सेवा की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। अक्ळडउ ने नियमित भर्ती की मांग की है, विशेषकर ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में।

2. 5-दिवसीय कार्य सप्ताह का कार्यान्वयन
कर्मचारियों के कार्य-जीवन संतुलन को सुनिश्चित करने और बढ़ते तनाव को कम करने के लिए सभी बैंकों में 5-दिवसीय कार्य सप्ताह की मांग की गई है। इस पर मार्च 2024 में सहमति बन चुकी है लेकिन अभी तक इसे लागू नहीं किया गया है।

3. बैंक कर्मचारियों की सुरक्षा
बैंककर्मियों पर बढ़ते हमले एक गंभीर चिंता का विषय हैं। अक्ळडउ ने इन हमलों के खिलाफ सख्त सुरक्षात्मक उपायों और कानूनी संरक्षण की मांग की है।

4. पुरानी पेंशन योजना की बहाली
अक्ळडउ ने 2010 के बाद नियुक्त कर्मचारियों के लिए पुरानी पेंशन योजना की बहाली पर जोर दिया है, जिससे सेवानिवृत्ति के बाद स्थिरता सुनिश्चित हो सके।

5. अनुचित श्रम प्रथाओं का विरोध
बैंकिंग क्षेत्र में वित्तीय सेवा विभाग (ऊऋर) के हस्तक्षेप और समयपूर्व सेवानिवृत्ति जैसी नीतियों के खिलाफ अक्ळडउ ने विरोध जताया है। ये नीतियां कर्मचारियों के मनोबल और कार्यस्थल की स्थिरता को नुकसान पहुंचा रही हैं।

6. बैंकों के बोर्ड में कर्मचारी निदेशकों की नियुक्ति
अक्ळडउ ने वैधानिक आवश्यकताओं के बावजूद कर्मचारियों और अधिकारियों के निदेशकों की नियुक्ति में हो रही देरी को समाप्त करने की मांग की है।

प्रभात चौधरी की एंटरटेनमेंट रणनीति से सजी पुष्पा 2: द रूल के ग्रैंड ट्रेलर लॉन्च की सफलता

- द रूल के ग्रैंड ट्रेलर लॉन्च के पीछे हैं मास्टरमाइंड प्रभात चौधरी, उनकी एंटरटेनमेंट स्ट्रैटेजी है बेजोड़

प्रातः किरण संवाददाता

पुष्पा 2: द रूल के ट्रेलर का मच अवेटेड लॉन्च पटना में हुआ, जो भारतीय सिनेमा के सबसे बड़े इवेंट्स में से एक बन गया है। यह इवेंट इतिहास में एक यादगार पल के रूप में दर्ज होगा, जहां फैंस ने सेंटर स्टेज पर आकर यह साबित कर दिया कि यह फिल्म उनके लिए उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी इसके मेकर्स के लिए। पटना में हुआ यह ट्रेलर लॉन्च सिर्फ एक साधारण इवेंट नहीं था, बल्कि एक ऐतिहासिक जश्न था जो शहर को उत्साह और जोश से भर गया।

पटना, जो अपनी ऐतिहासिक धरोहर के लिए जाना जाता है, में इस लॉन्च का आयोजन और भी खास बना दिया। यह इवेंट शहर में सबसे बड़ा और पहली बार आयोजित किया गया था, जिसने पटना को पूरी तरह से एक सेलिब्रेशन हब में बदल दिया। सड़कों पर लगे होर्डिंग्स और हवा में मौजूद जोश ने इस इवेंट को और भी धमाकेदार बना दिया। बिहार और आसपास के राज्यों से फैंस अपने आइडल अल्लू अर्जुन और ट्रेलर को देखने के लिए उमड़ पड़े थे। इस इवेंट में आइकन स्टार अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना की मौजूदगी ने इसे और भी खास बना दिया।

इस इवेंट का पूरा श्रेय एक नाम को जाता है - प्रभात चौधरी। बॉलीवुड के जाने-माने एंटरटेनमेंट मार्केटिंग मास्टरमाइंड प्रभात चौधरी ने इस इवेंट को अपनी खास रणनीतियों के साथ ग्रैंड बनाया। उनकी पीआर कंपनी स्पाइस और डिजिटल मार्केटिंग कंपनी एन्ट्रापी ने इस लॉन्च को प्रभावी तरीके से प्रचारित किया, जिससे यह इवेंट एक पैन-इंडिया फेनोमिनन बन गया। प्रभात चौधरी की मार्केटिंग रणनीतियों ने ही बाहुबली जैसी फिल्म को भी यादगार बना दिया था और अब ह्यपुष्पा 2 के इस ट्रेलर लॉन्च को भी उन्होंने अपने अनोखे स्टाइल में आयोजित किया।

प्रभात चौधरी की कड़ी मेहनत और मार्केटिंग के शानदार नजरिये ने इस इवेंट को सफल बनाया। उनका यह इवेंट न केवल बिहार में, बल्कि देशभर में चर्चा का विषय बन गया। प्रभात चौधरी का बिहार से गहरा रिश्ता है, वह दरभंगा जिले से ताल्लुक रखते हैं, ऐसे में उनके द्वारा बिहार में इवेंट को आयोजित करना, इसे और भी खास बनाता है।

इसके अलावा, इवेंट के दौरान अल्लू अर्जुन ने इस ट्रेलर को पूरी दुनिया के फैंस और दर्शकों को समर्पित किया, ताकि इस फिल्म को मिले प्यार और सराहना के लिए आभार व्यक्त किया जा सके।

5 दिसंबर, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली पुष्पा 2 द रूल का डायरेक्शन मशहूर डायरेक्टर सुकुमार ने किया है और इसका निर्माण मइथ्री मूवी मेकर्स ने सुकुमार राइटिंग्स के साथ मिलकर किया है। फिल्म का म्यूजिक टी-सीरीज ने दिया है।

राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन के प्रदेश कार्यालय में लाला लाजपत राय की जंयती मनाई गई

प्रातः किरण संवाददाता

गया।महान स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय, जिन्हें पंजाब केसरी और लायन ऑफ पंजाब के नाम से चर्चित , भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक आज उनके पुण्यतिथि पर राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन के प्रदेश कार्यालय में डॉ मनीष पंकज मिश्रा का अध्यक्षता में उनके चित्र पर माला पुष्प चढ़ा कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया इस अफसर पर अपने श्रद्धांजलि देते हुए डॉ मनीष पंकज मिश्रा ने कहा कि उनका जन्म 28 जनवरी 1865 को पंजाब के मोगा जिले में हुआ था। वे आर्य समाज के प्रबल समर्थक और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख नेता थे। उनकी ओजस्वी वाणी और संघर्षशील व्यक्तित्व ने उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन का प्रमुख चेहरा बनाया।लाला लाजपत राय ने स्वदेशी आंदोलन को बढ़ावा दिया और भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे लाहौर में डीएवी कॉलेज की स्थापना से जुड़े थे। उनका मानना था कि भारत को स्वतंत्रता केवल आत्मनिर्भरता और स्वदेशी उत्पादों के उपयोग से ही मिल सकती है।1928 में, जब साइमन कमीशन भारत आया, तब उन्होंने इसके विरोध में नेतृत्व किया गया है। विरोध के दौरान ब्रिटिश पुलिस ने लाठीचार्ज किया, जिसमें लाला लाजपत राय गंभीर रूप से घायल हो गए थे। उन्होंने कहा था, मेरे शरीर पर पड़ी हर लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत में एक कील होगी। उनकी चोटों के कारण 17 नवंबर 1928 को उनका निधन हो गया था। इस अवसर पर भाजपा जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता ने कहा उनकी कुबार्नी ने भारत के युवाओं को स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरित किया। उनकी पुण्यतिथि पर, हम उनके अदम्य साहस और बलिदान को नमन करते हैं।

पारस एचएमआरआई की ओर से आयोजित कैंसर कॉन्क्लेव समाप्त, 250 से ज्यादा कैंसर चिकित्सक हिस्सा लिए

- 75 दूसरे राज्य से आए थ डॉक्टर्स
- अंतिम दिन मुंह और गले के कैंसर पर शोध पत्र प्रस्तुत हुए और परिचर्चा हुई

प्रातः किरण संवाददाता

पटना। राज्य के प्रतिष्ठित पारस एचएमआरआई हॉस्पिटल की ओर से होटल ताज सिटी सेंटर में आयोजित बिहार कैंसर कॉन्क्लेव -2024 का रविवार को समापन हो गया। दो दिवसीय कॉन्क्लेव के अंतिम दिन मुंह और गले के कैंसर पर खास चर्चा हुई और शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। अंतिम दिन इस कैंसर के इलाज में विभिन्न माध्यमों व विधि से हुए इलाज पर मंथन हुआ।

अंतिम दिन बेस्ट शोध पत्र प्रस्तुत करनेवाले डॉक्टरों को सम्मानित किया गया। डॉ अभिषेक अरोड़ा और डॉ सुरभि को प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया। इन लोगों ने मुंह और गले तथा पेट के कैंसर के इलाज के बारे में बेहद महत्वपूर्ण बातें साझा कीं। दोनों बिहार के बाहर के हैं। इस कॉन्क्लेव में 250 से ज्यादा डॉक्टर हिस्से लिए जिसमें 75 डॉक्टर दूसरे राज्य से आए थे। मुंह और गले के कैंसर के चर्चित डॉक्टर डॉ अनिल डी क्रूज भी शामिल रहे।समापन सत्र में पारस एचएमआरआई हॉस्पिटल में कैंसर विभाग के अध्यक्ष डॉ अभिषेक आनंद ने अतिथियों का धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम से तय हो गया कि बिहार में भी कैंसर के लिए बड़ा कांफ्रेंस कर सकते और शोध को साझा कर सकते हैं। इस कार्यक्रम से यह भी तय हो गया कि बिहार में कैंसर के इलाज के लिए अच्छी सुविधा मौजूद है। कार्यक्रम के संयोजन और संपन्न कराने में पारस एचएमआरआई हॉस्पिटल के फैसिलिटी डायरेक्टर अनिल कुमार प्रमुख भूमिका रही। उन्होंने कहा कि पारस एचएमआरआई कैंसर सहित हर तरह के मर्ज के बेहतर और उन्नत इलाज मुहैया कराने के लिए दिन रात लगा हुआ है। हमलोग बिहार सरकार के साथ मिलकर भी इस दिशा में काम कर रहे हैं। हमलोग हर साल इस तरह के कांफ्रेंस का आयोजन करते रहेंगे।

ट्रक ने मारी ऑटो में टक्कर ऑटो चालक की मौत

बिक्रमगंज(रोहतास)। आरा - सासाराम मुख्य पथ पर बिक्रमगंज थाना के मानी पेट्रोल पंप के करीब शनिवार की रात एक अज्ञात ट्रक की चपेट में आने से ऑटो चालक की मौत हो गई। चालक सासाराम की ओर से बिक्रमगंज की तरफ लौट रहा था और अकेले था। थानाध्यक्ष ललन कुमार ने बताया कि मृतक सूर्यपुरा थाना क्षेत्र के कल्याणी गांव निवासी ऑटो चालक बिजेंद्र सिंह, पिता सुकेश्वर सिंह की रात्रि एक बजे एक सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। जानकारी के अनुसार, बिजेंद्र सिंह सासाराम से अपने घर लौट रहे थे। इसी दौरान मानी पेट्रोल पंप के पास एक अज्ञात ट्रक चालक ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। दुर्घटना के बाद स्थानीय लोगों ने उन्हें अस्पताल ले जाने की कोशिश की, लेकिन इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। इस घटना के संबंध में मामला दर्ज कर लिया गया है, और पुलिस अज्ञात ट्रक चालक की तलाश में जुट गई है। परिवार और स्थानीय लोगों में इस हादसे को लेकर शोक और आक्रोश है।

जरासंध जयंती में वक्तताओं ने राजा जरासंघ की महानता को याद कर कहा: उनकी ताकत के आगे कृष्ण को भी छोड़ना पड़ा था मैदान

प्रातः किरण संवाददाता

शेरघाटी। चंद्रवंशी क्षत्रिय एकता मंच शेरघाटी के बैनर तले रविवार को जरासंध 5227 वीं जयंती समारोह मनाया गया। मुख्य अतिथि बिहार सरकार के सहकारिता व वन पर्यावरण मंत्री डॉ प्रेम कुमार ने कहा कि पूरे देश में जरासंध याद किए जा रहे हैं। देश स्तर पर जयंती मनाकर याद किया जा रहा है। वे हमारे वंश के ताकतवर शासक थे। उनकी ताकत के आगे कृष्ण को भी मैदान छोड़ना पड़ा था। राजगीर में जरासंध का अखाड़ा इसका स्पष्ट प्रमाण है। अब हम लोगों की मांग पर बिहार के लोकप्रिय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के द्वारा आदमकद प्रतिमा लगने जा रहा है। 18 फिट ऊंचा आदम कद प्रतिमा एक माह में लग जाएगा। जरासंध परिवार को केंद्र के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी भी सम्मान दे रहे हैं। लोकप्रिय प्रधानमंत्री वाजपेई जी के कार्यकाल में जरासंध के नाम पर डाक टिकट जारी कर दिया गया है। उन्होंने कहा डबल इंजन की सरकार चल रही है। 22 घंटे बिहार में बिजली मिल रही है। महिलाओं के लिए पंचायत स्तर पर 50 प्रतिशत आरक्षण दिया गया। 2006 में जब गठबंधन की सरकार थी। हम सब मिलकर अच्छा काम किए। एक बार फिर काम दिख रहा है। उन्होंने प्रधानमंत्री की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे चंद्रवंशी समाज को सम्मान दे रहे हैं। देश के दो राज्यों में समाज के राज्यपाल बनाए गए हैं। गया अमृतसर कॉरिडोर बन रहा है। इससे हजारों को रोजगार मिलेगा। इसी प्रकार गया बोधगया कॉरिडोर बन रहा है। जो मोक्ष धरती गया विष्णुपद को जोड़ेगा।

उन्होंने योगी के जुमले को दोहराया कहा बंटोगे तो कटोगे। स्थानीय लोगों का उत्साह बढ़ाते हुए कहा पहली बार आप अच्छा प्रयास कर रहे हैं। तत्पश्चात स्थानीय अध्यक्ष पिंटू कुमार आदि को माला देकर सम्मानित किया। इसके पूर्व स्थानीय कमेटी के लोगों ने बुके और माला पहना कर अतिथियों का स्वागत किया। अखिल भारत वर्षीय चंद्रवंशी चेतना परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रमोद चंद्रवंशी ने चंद्रवंशी स्वाभिमान रैली को सफल बनाने का आह्वान करते हुए आगामी 7 दिसंबर को मिलर हाई स्कूल के मैदान में पहुंचने का न्योता दिया। कार्यक्रम का संचालन अजीत सिंह ने किया जबकि मुकुल कुमार, अरुण चंद्रवंशी , सुरेश कुमार चंद्रवंशी, विकास चंद्रवंशी आदि ने अपना योगदान दिया।

मिथिला चित्र कलाकार और इसके अंतर्राष्ट्रीय बाजार के बीच के गैप को भरने की जरूरत है : रीना सोपम

प्रातः किरण संवाददाता

पटना। कोहबर वैसे तो मिथिला के जीवन शैली का एक हिस्सा है लेकिन अब यह एक पारंपरिक चित्रकला के रूप में देश- विदेश में प्रतिष्ठित है। लेकिन इन दिनो इसके सामने कई चुनौतियाँ भी हैं जिसपर चर्चा करने के लिए पटना के मल्टीपर्पस कल्चरल कॉम्प्लेक्स में तीन दिवसीय परिचर्चा और प्रदर्शनी आयोजित की गई थी जिसका समापन आज 17 नवंबर को हुआ।

कोहबर, रूट टू रूट नाम से आयोजित इस समारोह का आयोजन मिथिला चित्रकला की महिला कलाकारों ने ही किया था। उन्होंने अपने बनाए कोहबर को कला दीर्घा में प्रदर्शित भी किया था और इसके अनेक पहलुओं पर हो रही परिचर्चा में शामिल भी हुईं। वैसे इस आयोजन में कुछ पुरुष कलाकार भी शामिल हुए।

कोहबर चित्रकला के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजार का मूल्यांकन विषय पर आयोजित एक सत्र में शामिल वरिष्ठ पत्रकार पुष्यमित्र ने कहा कि मिथिला चित्रकला के बढावा के लिए कम काम किया गया है। कलाकारों को स्वयं ही इसकी औनलाइन मार्केटिंग की तरफ बढना चाहिए। वरिष्ठ पत्रकार तथा कला लेखिका, रीना सोपम ने आयोजन पर चर्चा करते हुए कहा कि यह आयोजन ऐतिहासिक है। महिला कलाकारों ने ही इसे आयोजित किया है। कल तक ये महिलाएं बस कलाकार थीं, आज आयोजक भी बन गईं। यानि महिला सशक्तिकरण के अगले पडाव पर आ गई। मै इसे मिथिला की एक बड़ी उपलब्धि मानते हैं।

विषय पर चर्चा करते हुए रीना सोपम ने कहा कि मिथिला चित्रकला का एक व्यापक बाजार है। बल्कि राष्ट्रीय बाजार से पहले ही ये अंतर्राष्ट्रीय बाजार में दशकों पहले पहुंच गया था और इसकी यह यात्रा कैसे हुई, इसे आज हम सभी जानते हैं। लेकिन इस कला के अंतर्राष्ट्रीय अपील का सबसे पहला अह्सास तब हुआ मुझे जब हमारे घर की ड्रॉइंग रूम में टंगा हैंडमेड पेपर पर बना कोहबर का एक चित्र हमारे अतिथियों का ध्यान खींचने लगा। हमारी बड़ी बहन, डॉ रमा दास जो बिहार की वरिष्ठ कत्थक कलाकार हैं, उन्होने माँ और नानी से पूछकर बनाई थी ये पेंटिंग। सबसे पहले तो संगीत लेखक पद्मश्री गजेंद्र नारायण सिंह जो मेरे पिता, प्रो सी एल दास के अभिन्न मित्र थे, वे रमा जी का बनाया कोहबर चित्र मांग कर ले गए। रमा जी ने एक बार फिर कोहबर चित्र बनाया और उसी ड्रॉइंग रूम में लगा दी। लेकिन एक बार फिर ये मांग ली गई। जर्मनी से ध्रुपद का अध्ययन करने बिहार आए थे पीटर और पं रामचतुर मल्लिक ने उन्हे सरोद वादक तथा संगीत इतिहासकार प्रो सी एल दास के पास बिहार की ध्रुपद परंपरा और इसका इतिहास जानने के लिए भेजा था। वे घर आए तो रमा जी का बनाया कोहबर उन्हे भा गया और इस तरह ये कोहबर उनके देश पहुंच गया। बल्कि पीटर ने कुछ और मिथिला चित्र लेने की इच्छा जाहिर की तो रीता जी उसे लेकर स्व यशोदा देवी के पास उपेंद्र महारथी शिल्प संस्थान ले गई थी।

रीना सोपम ने कहा कि इससे पहले उन्होंने घर में मौसी-मामियों को कोहबर बनाते देखा था। मिथिला के जीवन शैली का एक हिस्सा था यह। लेकिन इस घटना ने अह्सास कराया कि कोहबर एक कलात्मक चित्रकला है जिसकी राष्ट्रीय क्या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मांग है।

उन्होने कहा कि आज इस कला की मांग विश्व भर मे है।और मिथिला की लगभग हर महिला इसे आंकती हैं और कलाकार हैं। लेकिन राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजार और दूर दराज इलाके के कलाकारों के बीच अभी भी एक बड़ा गैप है जिसे भरने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि अब लोग इसलिए भी चिंतित हैं कि कोहबर में कई बदलाव आने लगे है। तो इसके मूल स्वरूप से अगली पीढी को रूबरू कराने के लिए वर्कशॉप होने चाहिए। सरिता दास ने कहा कि वो अपनी संस्था मिथिलांगन के माध्यम से मिथिला के कलाकारों को प्रदर्शनी का मौका देती है।

बापू टावर के निदेशक, विनय कुमार ने कहा कि पारंपरिक चित्रकला बनाते समय रीतियों का भी ध्यान रखना होगा। आर्ट कॉलेज के पूर्व प्रिसिंपल, अजय पांडेय ने कहा गुणवत्ता पर भी ध्यान हो तथा आर्ट कॉलेज की प्रिसिंपल, राखी कुमारी ने कहा कि मिथिला के रीतिगत संस्कारों को भी बचाना होगा।

आयोजन के उद्घाटन सत्र में बिहार विद्यापीठ के अध्यक्ष, विजय प्रकाश ने कहा कि कोहबर तो मिथिला की शिक्षा प्रणाली का हिस्सा रही है। इंटैक के राज्य कॉर्डिनेटर, प्रेम शरण ने कहा कि पटना में कला दीर्घा की जरूरत है। सुल्तान पैलेस को इस रूप मे विकसित करने की चर्चा एक बार हुई थी, लेकिन वह हो नही पाया। इस अवसर पर वरिष्ठ कलाकार विमला दत्त की किताब, ह्यमिथिलाक पावनि तिहार आ सोलह संस्कार ह्य का विमोचन किया गया। विमला जी ने कहा कि कलाकार जीवन के आरंभिक दौर मे अपने लिए चित्र बनाता है लेकिन बाद मे वह समाज के लिए रचता है। मनीषा झा ने 1934से लेकर मिथिला चित्र कला की अब तक की यात्रा पर पावर पौइंट प्रेजेंटेशन दिया। अमृता दास की किताब का लोकार्पण भी हुआ।

कार्यक्रम का संचालन इंटैक पटना चैप्टर के संयोजक भैरव लाल दास ने सफलतापूर्वक किया। कलाकार अलका दास और निभा लाभ ने पूरे आयोजन मे विशेष भूमिका निभाई।

उक्त अवसर पर वहां भारत ज्योति, वरिष्ठ वन पदाधिकारी, प्रियंका, कल्पना मधुकर, चंदना दत्त, श्यामल दास, संजीता, विनीता मल्लिक, हेमंत दास, नीरजा उपस्थित थे।

चैस:

मैग्नस कार्लसन और लैग्नो ने इंडिया ब्लिट्ज में बढ़त बनाई

भारतीय ग्रैंडमास्टर प्रज्ञानंद दूसरे स्थान पर

कोलकाता, एजेंसी। दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन और तीन बार की विश्व महिला ब्लिट्ज चैंपियन कैटरीना लैग्नो शनिवार को कोलकाता में चल रहे टाटा स्टील शतरंज इंडिया ब्लिट्ज 2024 के मध्य में शीर्ष स्थान, जबकि भारत के आर प्रज्ञानंद दूसरे स्थान पर रहे। कार्लसन ने संभावित नौ में से 6.5 अंक से पहले नौ दौर का समापन किया। नॉर्वे के इस दिग्गज खिलाड़ी ने शानदार शुरुआत की लेकिन आठवें दौर में अर्जुन एरिगेसी ने उन्हें शानदार अंदाज में महज 20 चाल में हरा दिया। दिन के अंतिम दौर में कार्लसन ने विदित गुजराती के खिलाफ ड्रॉ खेला। भारत के युवा खिलाड़ी प्रज्ञानंद छह अंक से दूसरे स्थान पर रहे। उन्होंने अपनी पहली तीन बाजियां गंवाने के बाद शानदार वापसी कर लगातार छह जीत दर्ज कीं। एरिगेसी और रूस के दानिल डुबोव 5.5 अंक लेकर संयुक्त रूप से तीसरे स्थान पर हैं। महिला वर्ग में लैग्नो ने सात अंक से शीर्ष स्थान हासिल किया। उन्होंने पांच जीत और चार ड्रॉ खेले। उन्हें एक भी बाजी में हार नहीं मिली। वैलेंटिना गुनिना उनसे एक अंक पीछे दूसरे स्थान पर हैं, जबकि रैपिड चैंपियन एलेक्जेंड्रा गोर्याचकिना पांच अंक से तीसरे स्थान पर हैं। गोर्याचकिना ने लगातार तीन जीत के साथ शानदार शुरुआत की, लेकिन बाकी छह मैच में केवल चार ड्रॉ ही हासिल कर पाईं।

गौतम गंभीर के सपोर्ट में उतरे सौरव गांगुली

ऑस्ट्रेलियाई टीम को सुनाई दो टूक

नईदिल्ली, एजेंसी। गौतम गंभीर के हेड कोच बनने के बाद भारतीय क्रिकेट टीम को दो बड़ी सीरीज में हार मिली है. पहले श्रीलंका के खिलाफ वनडे सीरीज में 0-2 और फिर न्यूजीलैंड के हाथों टेस्ट सीरीज में 0-3 से हार ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं. अब कोच गौतम गंभीर के सामने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2025 (2024) की चुनौती है. इसमें भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच टेस्ट मैच खेले जाने हैं. अब एक तरफ गंभीर की आलोचना हो रही है, दूसरी ओर भारत के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली उनके सपोर्ट में उतर आए हैं.

एक मीडिया इंटरव्यू में सौरव गांगुली ने कहा है कि गौतम गंभीर जैसे हैं, वैसे ही रहेंगे. एक वनडे और टेस्ट सीरीज हार जाने से इतनी जल्दी उनका आंकलन करना सही नहीं है. गांगुली ने कहा, मैं इतना कहूंगा कि गंभीर को उनके हाल पर छोड़ दिया जाए. मैंने देखा कि प्रेस कॉन्फ्रेंस में जो उन्होंने कहा, उसकी खूब आलोचना हुई. वो ऐसे ही हैं क्योंकि केकेआर आईपीएल

का खिताब जीता, गंभीर तब भी ऐसे ही थे. तब आप उनकी तारीफ करने में लगे थे. वो तीन टेस्ट मैच और श्रीलंका से एक वनडे सीरीज क्या हार गए, उन्हें आड़े हाथों लिया जाने लगा है.

गौतम गंभीर ने कुछ गलत नहीं कियाऑस्ट्रेलियाई दिग्गज रिकी पोंटिंग ने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पूर्व चिंता जताई थी कि विराट कोहली की फॉर्म चिंता का विषय है. प्रेस कॉन्फ्रेंस में जब गौतम गंभीर से इस संबंध में सवाल पूछा गया तो उन्होंने कहा कि रिकी पोंटिंग को भारतीय क्रिकेट के बजाय ऑस्ट्रेलियाई टीम पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है.

इस विवाद पर सौरव गांगुली ने अपने विचार रखते हुए बताया,गंभीर ऐसा क्यों ना करें? मैं जबसे क्रिकेट देख रहा हूं तभी से ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी अपने हिसाब से क्रिकेट पर विचार रखते आए हैं, फिर चाहे वो स्टीव वॉ हों, रिकी पोंटिंग या फिर मैथ्यू हेडन. गंभीर ने जो कहा, उसमें कुछ गलत नहीं है. वो लड़ते हैं और प्रतिस्पर्धा करते हैं, इसलिए हमें उन्हें मौका देना चाहिए. उन्हें आए 2-3 महीने हुए हैं और आप अभी से उनका आंकलन कर रहे हैं ।

रणजी ट्रॉफी:

पहली पारी में 89 रन पर सिमटने के बाद भी ड्रॉ कराने में सफल रहा यूपी

कर्नाटक को मिले तीन अंक

लखनऊ, एजेंसी। मेजबान उत्तर प्रदेश का रणजी ट्रॉफी के एलीट ग्रुप सी में शर्मनाक प्रदर्शन जारी रहा। टीम के बल्लेबाज दूसरी पारी में दमदार प्रदर्शन ने कर्नाटक के खिलाफ मुकाबला ड्रॉ करवाने में सफल रहे, लेकिन मेहमान टीम को पहली पारी में बढ़त के आधार पर तीन अंक हासिल करने से नहीं रोक सके। वहीं यूपी को एक अंक मिला। अटल बिहारी वाजपेयी इकाना स्टेडियम में मेजबान टीम ने दूसरी पारी में सभी विकेट खोकर 446 रन बनाए। जवाब में 261 रन की जीत के लक्ष्य का पीछा करने उतरी कर्नाटक की टीम पांच विकेट खोकर 178 रन ही बना सकी और मुकाबला ड्रॉ हो गया। इस मुकाबले के साथ उत्तर प्रदेश की टीम छह अंक के साथ ग्रुप सी में शामिल आठ टीमों में सातवें स्थान पर फिसल गई, जबकि कर्नाटक की टीम 12 अंक के साथ चौथे स्थान पर बनी हुई है।

इससे पहले उत्तर प्रदेश ने कल के पांच विकेट खोकर 325 रन से आगे खेलना शुरू किया। 402 रन पर टीम को छठा झटका लगा, जब सौरभ कुमार 54 रन की अर्धशतकीय पारी खेलकर श्रेयस गोपाल की गेंद पर पहली स्लिप पर स्मरण की द्वारा लपके गए। अपनी अर्धशतकीय पारी के दौरान उन्होंने 55 गेंदों का सामना करते हुए सात चौके जमाए। कुछ ही देर के बाद टिककर खेल रहे आदित्य शर्मा 41 रन के निजी योग पर गोपाल का चौथा शिकार बने। यूपी की पूरी टीम 134वें ओवर में 446 रन बनाकर आउट हो गई।

कर्नाटक की ओर से 122 रन देकर पांच बल्लेबाजों को पवेलियन की राह दिखाई, जबकि विद्याधर पाटिल और मोहसिन खान ने दो-दो विकेट झटके। जवाब में 261 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरे कर्नाटक के लिए निकिन जोस और कप्तान मयंक अग्रवाल ने ठोस शुरुआत करते हुए 77 रन जोड़े। मयंक अग्रवाल 37 रन बनाकर आकिब खान की गेंद पर सौरभ कुमार द्वारा लपके गए। 100 रन के योग पर निकिन जोस 48 रन बनाकर दुर्भाग्यपूर्ण ढंग से रन आउट हो गए।

125 के योग तक पहुंचते हुए कर्नाटक ने पांच बल्लेबाज खो दिए। इस दौरान स्मरण (15), कृष्णन श्रीजिथ (7) और श्रेयस गोपाल (1) सस्ते में चलते बने। इसके बाद मनीष पांडेय ने अभिनव के साथ संभलकर बल्लेबाजी की और कोई विकेट नहीं गिरने दिया। पांडेय 78 गेंदों पर चार चौकों की मदद से 36 और अभिनव मनोहर 73 गेंदों पर तीन चौके और दो छक्कों की मदद से 31 रन पर नाबाद रहे। यूपी की ओर से विप्रज निगम ने 65 रन देकर दो विकेट हासिल किए।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले भारत के लिए अच्छी खबर, रोहित शर्मा का रिप्लेसमेंट हुआ फिट

नईदिल्ली, एजेंसी। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2024 की शुरुआत 22 नवंबर से होनी है, लेकिन उससे पूर्व तैयारियों दुरुस्त करने के लिए भारतीय टीम ने अभ्यास मैच खेला है. इंडिया बनाम इंडिया ए मैच में केएल राहुल को चोट आई थी, जिसके कारण उन्हें रिटायर्ड हर्ट होकर पवेलियन लौटना पड़ा था. अब भारतीय फैंस के लिए खुशखबरी यह है कि पर्थ टेस्ट शुरू होने से पांच दिन पहले राहुल ने दोबारा से नेट्स में अभ्यास शुरू कर दिया है. इस सिम्यूलेशन मैच के दूसरे दिन राहुल चोटिल होने की वजह से मैदान पर आए ही नहीं थे, लेकिन रेव स्पोर्ट्ज की एक रिपोर्ट अनुसार तीसरे दिन की शुरुआत में उन्हें नेट्स में पसीना बहाते देखा गया. चूंकि रोहित शर्मा हाल ही में दूसरी बार पिता बने हैं, इसलिए वो पहला टेस्ट मैच मिस कर सकते हैं. ऐसे में राहुल को रोहित के रिप्लेसमेंट के तौर पर देखा जा रहा है और वो पर्थ टेस्ट में यशस्वी जायसवाल के साथ पारी की शुरुआत करते दिख सकते हैं. एक तरफ राहुल के वापस आने की अच्छी खबर है, तो दूसरी ओर शुभमन गिल के बाएं अंगूठे में फ्रैक्चर ने टीम इंडिया की मुश्किलें बढ़ा दी हैं. इस चोट के कारण उन्हें पहला टेस्ट मिस करना पड़ सकता है.

श्रेयस अय्यर से केकेआर ने कप्तानी छीनी, लेकिन अब इस टीम की अगुआई करते आएंगे नजर 23 नवंबर से शुरू होगा टूर्नामेंट

नईदिल्ली, एजेंसी। श्रेयस अय्यर की कप्तानी में केकेआर ने साल 2024 में आईपीएल खिताब जीतने में सफलता हासिल की थी और ये इस टीम का इस लीग में तीसरा टाइटल था, लेकिन कोलकाता फ्रेंचाइजी ने श्रेयस अय्यर को आईपीएल 2025 के लिए रिटेन नहीं किया। श्रेयस अय्यर के लिए ये किसी बड़े झटके से कम नहीं था, लेकिन अब उन्हें मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन (एमसीए) की सीनियर चयन समिति ने सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के लिए मुंबई टी20 टीम का कप्तान नियुक्त किया है।

श्रेयस अय्यर करेंगे मुंबई की कप्तानी – एमसीए की सीनियर चयन समिति ने रविवार को सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 2024-25 के लिए टीम का चयन करने के लिए बैठक की। 23 तारीख से शुरू होने वाले इस टूर्नामेंट के लिए इस चयन समिति ने श्रेयस अय्यर को मुंबई का कप्तान नियुक्त किया।

चयन समिति के मुताबिक इस टूर्नामेंट में कप्तानी करने के लिए श्रेयस अय्यर सबसे बेस्ट विकल्प हैं। श्रेयस को कप्तान बनाए जाने के बाद मौजूदा रणजी सीजन में मुंबई की कप्तानी कर रहे अजिंक्य रहाणे अब उनके अंडर में खेलते हुए नजर आएंगे। इंडियन एक्सप्रेस के मुताबिक एमसीए की चयन समिति ने रहाणे को सूचित कर दिया था कि वो शॉर्ट फॉर्मेट में मुंबई टीम के कप्तान के रूप में श्रेयस अय्यर को देख रहे हैं।

पृथ्वी शॉ को टीम में किया गया शामिल

इस टूर्नामेंट के लिए मुंबई की टीम में पृथ्वी शॉ को भी शामिल किया गया है जिन्हें रणजी ट्रॉफी के मैच से बाहर कर दिया गया था और अपनी फिटनेस में सुधार करने के लिए कहा गया था। एमसीए का मानना है कि पृथ्वी ने अपनी फिटनेस में सुधार किया है और वो सफेद गेंद के क्रिकेट में टीम के लिए बेहद उपयोगी साबित हो सकते हैं। एक सूत्र ने बताया कि श्रेयर अय्यर सैयद मुश्ताक अली के लिए मुंबई टी20 टीम की अगुआई करेंगे और टीम में पृथ्वी शॉ को भी शामिल किया गया है। रहाणे अब अय्यर की कप्तानी में खेलेंगे क्योंकि एमसीए को लगता है कि अय्यर इस प्रारूप के लिए कप्तान के रूप में सही विकल्प हैं। ऑलराउंडर शिवम दुबे, मुशीर खान और तुषार देशपांडे अभी तक अपनी इंजरी से पूरी तरह उबर नहीं पाए हैं और यही वजह है कि उन्हें इस टूर्नामेंट के लिए मुंबई की टीम में जगह नहीं दी गई।

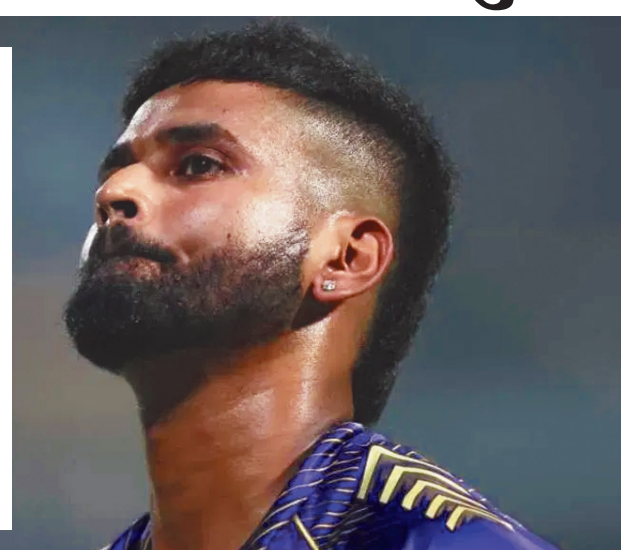

ऑस्ट्रेलिया में भारतीय बल्लेबाज का धमाका

31 गेंदों में धुआंधार पारी खेलकर टीम की झोली में डाला मैच

नईदिल्ली, एजेंसी। टीम इंडिया इस वक्त टेस्ट सीरीज खेलने के इरादे से ऑस्ट्रेलिया दौरे पर है. इसी दौरान वहां महिलाओं के बिग बैश के मुकाबले भी खेले जा रहे हैं, जिसमें भारत की भी कई खिलाड़ी खेल रही हैं. उन्हीं भारतीय खिलाड़ियों में एक जेमिमा रोड्रिग्ज भी हैं, जिन्होंने बल्ले से हल्ला बोलते हुए अपनी टीम की शानदार जीत की स्क्रिप्ट लिखी है. वो अपनी टीम के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाली खिलाड़ी रही. जेमिमा रोड्रिग्ज ब्रिसबेन हीट्स से खेल रही हैं, जिसका मुकाबला मेलबर्न स्टार्स से था.

जेमिमा ने उम्मीदों को जीत के रंग में रंगा – मुकाबले में मेलबर्न स्टार्स ने पहले बैटिंग की और 20 ओवर में 8 विकेट पर 138 रन बनाए. 139 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी ब्रिसबेन हीट्स की टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही. सिर्फ 12 रन पर ही उसकी ओपनिंग जोड़ी टूट गई. लेकिन उसके बाद क्रीज पर उतरीं भारतीय बल्लेबाज जेमिमा रोड्रिग्ज ने टीम की उम्मीदों में जीत का रंग भरने वाली पारी खेली.

- **50 मिनट बैटिंग, 31 गेंदों में 45 रन** – जेमिमा रोड्रिग्ज ने अपनी टीम के लिए इस मैच में सबसे ज्यादा रन बनाए. उन्होंने 50 मिनट तक बैटिंग की, जिसमें 31 गेंदों का सामना कर 45 रन बनाए. उनकी पारी में 5 चौके और 2 छक्के शामिल रहे. भले ही जेमिमा अर्धशतक से 5 रन दूर रह गईं. लेकिन, उनकी ये पारी टीम की जीत के काम आ गई.
- **15 गेंद पहले 6 विकेट से मिली जीत** – इनिंग के दौरान जेमिमा ने एक अर्धशतकीय पार्टनरशिप भी की. उनका विकेट तब गिरा जब टीम का स्कोर 100 की दहलीज लांघ चुका था. मतलब वो जीत के करीब पहुंच चुकी थी. और, हुआ भी वैसा ही. जिस मंशा के साथ जेमिमा ने बैटिंग की थी वो सफल रही. जेमिमा की शानदार पारी की बदौलत ब्रिसबेन हीट्स ने मेलबर्न स्टार्स को 15 गेंद पहले ही 6 विकेट से हरा दिया. जेमिमा से पहले ब्रिसबेन हीट्स के लिए 18 साल की गेंदबाज ल्यूसी हैमिल्टन ने 5 विकेट लिए. उन्होंने ये कामयाबी 4 ओवर में सिर्फ 8 रन देकर हासिल की.

क्रिकेट से कुछ दिनों के लिए ब्रेक लेंगे सूर्यकुमार यादव

इस टूर्नामेंट के जरिए फिर मैदान पर करेंगे वापसी

नईदिल्ली, एजेंसी। भारतीय टी20 टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव ने साउथ अफ्रीका में जबरदस्त कामयाबी हासिल की और 4 मैचों की टी20 सीरीज को 3-1 से जीत लिया। भारत को इतनी बड़ी कामयाबी दिलाने के बाद सूर्यकुमार यादव अब सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 2024-25 में मुंबई टीम के लिए खेलते हुए नजर आएँगे। हालांकि टीओआई के मुताबिक वो इस टूर्नामेंट के शुरुआती मैचों के लिए उपलब्ध नहीं रहेंगे।

23 नवंबर से शुरू होगा सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी

सूर्यकुमार यादव के मुंबई टीम में

मुंबई के लिए खेलेंगे सूर्यकुमार यादव

रिपोर्ट में दावा किया गया है कि सूर्या व्यक्तिगत कारणों से सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 2024-25 के पहले चरण के लिए उपलब्ध नहीं होंगे। भारतीय टी20 कप्तान आखिरी कुछ मैचों में खेलने के लिए वापसी करेंगे और अगर मुंबई आगे के चरण के लिए क्वालिफाई करती है तो वह नॉकआउट में भी खेलेंगे। सूत्र के मुताबिक सूर्यकुमार यादव इस टूर्नामेंट के लिए दिसंबर की शुरुआत से उपलब्ध होंगे। वो मुंबई के लिए कुछ आखिरी लीग मैच में हिस्सा लेंगे और फिर टीम आगे बढ़ती है को नॉकआउट चरण के लिए भी उपलब्ध रहेंगे।

शामिल होने से इस टीम की बल्लेबाजी मजबूत होगी साथ ही साथ सूर्या अच्छे प्रदर्शन के जरिए आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए भी अपना दावा ठोक सकते हैं जो अगले साल फरवरी-मार्च में खेला जाएगा। सूर्यकुमार यादव विश्व क्रिकेट में सर्वश्रेष्ठ टी20 बल्लेबाजों में से एक हैं और उनके टीम में होने से युवा खिलाड़ियों को भी काफी कुछ सीखने को मिलेगा। सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के इस सीजन की शुरुआत 23 नवंबर से होगी।

चैंपियंस ट्रॉफी को लेकर पाकिस्तान को मिला इंग्लैंड का साथ !

मोहसिन नकवी और ईसीबी चीफ की लंदन में हुई मुलाकात

पाकिस्तान को मिला इंग्लैंड का साथ

- पीसीबी चीफ मोहसिन नकवी ने चैंपियंस ट्रॉफी को पाकिस्तान में कराने के लिए एड़ी-चोटी की जोर लगा दी है. क्रिकेट की दुनिया में ईसीबी का बड़ा कद है. इसलिए बीसीसीआई से विवाद के बाद उसका साथ पाने के लिए मोहसिन नकवी लंदन पहुंच गए और उसके चेयरमैन रिचर्ड थॉम्पसन से मुलाकात कर उनका साथ मांगा. मीटिंग के बाद ईसीबी ने दबे शब्दों में ही सही लेकिन चैंपियंस ट्रॉफी के मुद्दे पर पाकिस्तान का साथ दिया है.
- थॉम्पसन ने इशारों-इशारों में बीसीसीआई के 'सुरक्षा की चिंता' वाली बात को काटने की कोशिश की. उन्होंने कहा कि हाल ही में इंग्लैंड की टीम ने पाकिस्तान का दौरा किया था, जो बेहद ही शानदार रहा था. थॉम्पसन ने चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पाकिस्तान को अपनी शुभकामनाएं भी दे दी. जवाब में, नकवी ने थॉम्पसन को आश्वासन दिया कि पाकिस्तान ने सारी तैयारी कर ली है और टूर्नामेंट की सफल मेजबानी के लिए पूरी तरह तैयार है ।

नईदिल्ली, एजेंसी। चैंपियंस ट्रॉफी का अगला एडिशन पाकिस्तान की मेजबानी में खेला जाना है. लेकिन बीसीसीआई के मना करने के बाद से ही इस टूर्नामेंट को लेकर बवाल मचा हुआ है. इस बीच ये खबरें भी आईं कि विवाद के बाद आईसीसी इसे दूसरे देश में शिफ्ट करने के बारे में सोच रही है. इसके बाद से ही पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड डरा हुआ है. पीसीबी पहले ही इसकी तैयारी में काफी पैसे लगा चुका है और अब उसे एक बड़ा नुकसान होता दिख रहा है. इस परिस्थिति में उसने इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड का रुख किया है. पीसीबी चीफ मोहसिन नकवी ने इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड के चेयरमैन रिचर्ड थॉम्पसन से लंदन में मुलाकात की है ।

तमिल अभिनेत्री कस्तुरी शंकर हैदराबाद से गिरफ्तार, तेलुगू समुदाय पर की थी आपत्तिजनक टिप्पणी

चेन्नई, एजेंसी।
ग्रेटर चेन्नई पुलिस द्वारा तैनात एक विशेष टीम ने तमिल अभिनेत्री कस्तूरी शंकर को शनिवार रात हैदराबाद के नरसिंगी स्थित एक फ्लैट से गिरफ्तार कर लिया। चेन्नई के एग्मोर पुलिस की एक विशेष टीम ने अभिनेता को गिरफ्तार किया। साइबराबाद पुलिस आयुक्तालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने आईएएनएस को बताया कि एग्मोर पुलिस स्टेशन की एक टीम 16 नवंबर को हैदराबाद पहुंची और नरसिंगी स्थित उनके फ्लैट से गिरफ्तार किया। अधिकारी ने कहा कि कस्तूरी पर भारतीय न्याय संहिता अधिनियम 2023 की धारा 191 और 192 के तहत मामला दर्ज किया गया है। पुलिस टीम ने अभिनेत्री को गिरफ्तार कर लिया और ट्रांजिट पर चेन्नई ले जाएगी।

तमिल स्टार पर 3 नवंबर को चेन्नई में एक सभा के दौरान तेलुगू समुदाय के बारे में की गई विवादास्पद टिप्पणी के लिए जांच चल रही थी। कस्तूरी के खिलाफ अभद्र भाषा और तेलुगू समुदाय को निशाना बनाने के आरोप हैं। हालांकि उन्होंने इसका खंडन किया और दावा किया कि उनके बयानों को गलत ढंग से पेश किया गया। कस्तूरी द्वारा दायर अग्रिम जमानत को (14 नवंबर) मद्रास उच्च न्यायालय ने

खारिज कर दिया था। अभिनेत्री की जमानत याचिका खारिज करने वाले न्यायमूर्ति आनंद वेंकटेश ने कहा था कि उनकी टिप्पणियां अनुचित थीं। यह मामला कस्तूरी द्वारा 3 नवंबर को चेन्नई में एक ब्राह्मण सभा में की गई टिप्पणियों से उपजा है।

उन्होंने कथित तौर तमिलनाडु में रह रहे तेलुगू भाषी लोगों को वेश्याओं का वंशज बताया था। कस्तूरी के मुताबिक ये 300 साल पहले राजाओं की सेवा करने आए थे और अब खुद को तमिल मूल का बताते हैं। कस्तूरी की टिप्पणियों की व्यापक आलोचना हुई, जिसके कारण नायडू महाजन संगम राज्य कार्यकारी समिति के एक सदस्य ने उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई। प्रतिक्रिया के जवाब में, कस्तूरी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक माफी जारी की, जिसमें दावा किया गया कि तमिलनाडु के गोएबल्स और हिंदू विरोधी डीएमके नेटवर्क द्वारा झूठी खबर फैलाई जा रही है। उन्होंने तेलुगू समुदाय के प्रति अपने प्यार और वफादारी का भी इजहार किया, उन्होंने कहा, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के लोग कभी भी उनके झूठ में नहीं फंसेंगे।

न्यायमूर्ति वेंकटेश ने कस्तूरी की जमानत याचिका खारिज करते हुए कहा था कि उन्हें तेलुगू समुदाय की महिलाओं के खिलाफ बोलने से बचना चाहिए था। अदालत ने अभिनेत्री की टिप्पणियों की आलोचना की और उनकी माफी को अपर्याप्त पाया, क्योंकि इसमें महिलाओं के बारे में टिप्पणियों को सीधे संबोधित नहीं किया गया था। कस्तूरी ने अदालत में तर्क दिया कि एफआईआर राजनीति से प्रेरित थी, उन्होंने दावा किया कि डीएमके सरकार का उनके प्रति असहिष्णु और प्रतिशोधी रवैया था। उन्होंने कहा कि उनकी टिप्पणियों ने तेलुगू समुदाय को भड़काने का काम नहीं किया है। 2024 के लोकसभा चुनावों में कस्तूरी ने भाजपा के लिए प्रचार किया था। लेकिन उनके इस बयान से तमिलनाडु इकाई ने किनारा कर लिया है।

हालांकि उन्होंने एक स्पष्टीकरण जारी किया, जिसमें दावा किया गया कि उनकी टिप्पणियों की गलत व्याख्या की गई। कस्तूरी के अनुसार, उनकी टिप्पणी का उद्देश्य डीएमके के पाखंड और दोहरे मानदंडों को उजागर करना था, न कि तेलुगू समुदाय का अपमान करना। कस्तूरी ने कहा कि उनकी टिप्पणी में उन श्रमिकों के एक विशिष्ट समूह का उल्लेख था जो सदियों पहले तेलुगू शासकों के साथ तमिलनाडु आए थे और बाद में तमिल पहचान ग्रहण कर ली थी। उन्होंने दावा किया कि उनके बयानों को तोड़-मरोड़ कर तेलुगू समुदाय पर व्यापक हमले का सुझाव दिया गया, जिसका उन्होंने खंडन किया। कस्तूरी ने स्पष्ट किया कि उन्होंने पत्नी के वंशजों का नहीं, बल्कि पत्नी के कर्मचारियों का संदर्भ दिया था, और दिवंगत डीएमके नेता एम. करुणानिधि की इस स्वीकारोक्ति का हवाला दिया कि समूह में कारीगर और संगीतकार शामिल थे।

संक्षिप्त समाचार

कपिल शर्मा - कॉमेडियन या मेनिफेस्टेशन के किंग: गीता बसरा

मुंबई, एजेंसी। पिछले एपिसोड में हमारे इंडस्ट्रियल आइकन्स के साथ धमाकेदार मस्ती करने के बाद, नेटफ्लिक्स का द ग्रेट इंडियन कपिल शो इस बार शो के फैंस के लिए कुछ बेहद जाने-पहचाने चेहरों के साथ लौट रहा है। कपिल के कप्स कैफे में इस बार नवजोत सिंह सिद्धू और उनकी पत्नी नवजोत कौर, साथ ही हरभजन सिंह और उनकी पत्नी गीता बसरा मेहमान बनकर आएंगे। यह एपिसोड पुराने दिनों की यादों से भरा होगा, जिसमें हमारे खास मेहमान अपनी दिलचस्प कहानियां शेयर करेंगे। ऐसी ही एक कहानी गीता बसरा ने शेयर की, जिसमें उन्होंने बताया कि कैसे कपिल ने अनजाने में, सिर्फ अपनी शुभकामनाओं के जरिए, हरभजन और उनके चार सदस्यीय परिवार को 'मेनिफेस्ट' कर दिया। गीता बसरा ने कपिल से कहा, जब पहली बार हम आपके शो पर आए थे, हमारी नई-नई शादी हुई थी।

भव्यतम 9 दिवसीय भैरव अष्टमी महोत्सव आयोजन: आध्यात्मिक एकता और समृद्धि का अनूठा पर्व

नीमच। मध्य प्रदेश के नीमच में 9 दिवसीय भैरव अष्टमी महोत्सव का भव्यतम आयोजन किया गया। अखिल भारतीय बटुक भैरव भक्त मंडल एवं पार्श्व पद्मावती शक्ति पीठ धाम, तमिलनाडु के पीठाधीश्वर, डॉ. वसंत विजय जी महाराज के सानिध्य में 23 नवंबर तक चलने वाला यह आयोजन भारत की आध्यात्मिक धरोहर, एकता और समृद्धि का भव्य उत्सव है। इस महोत्सव में देश पर महामारी के संकट, आतंकवाद की चुनौतियों से मुक्ति व आर्थिक वृद्धि की कामना हेतु भैरव देव को 2024 प्रकार की मिठाइयां अर्पण की जा रही है। 8 कुंडीय महायज्ञ में 46 विद्वान पंडितों द्वारा भैरव देव की आराधना करते हैं, जिसमें एक कुंड में 11 पंडित और 7 कुंडों में 5-5 पंडित 9 दिन तक निरंतर यज्ञ करते हैं। इस महाअनुष्ठान का एक प्रमुख आकर्षण 84,000 वर्ग फीट में विशाल रंगोली का निर्माण, जिसमें भारत की सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक गुरुओं और राष्ट्र नायकों के चित्र उकेरे जा रहे हैं। इस कार्यक्रम में परम पूज्य डॉ वसंत विजय जी महाराज के मुखरबिंद से कथा, साधना, महायज्ञ एवं महोत्सव के दौरान सभी भक्तों के लिए निशुल्क भोजन और सेवाएँ उपलब्ध कराई गई।

विद्युत जामवाल ने डिज्नी+ हॉटस्टार पर स्ट्रीम हो रही डेडपूल एंड वूल्वरिन को बहुत रोमांचक बताया

मुंबई, एजेंसी। एक्शन आइकन विद्युत जामवाल डिज्नी+ हॉटस्टार पर डेडपूल एंड वूल्वरिन की रिलीज को लेकर बहुत उत्साहित हैं। अपने योद्धा जैसे अनुशासन के लिए मशहूर विद्युत को रयान रेनॉल्ड्स और ह्यूग जैकमैन द्वारा स्क्रीन पर दिखाया गया जबरदस्त एक्शन बहुत पसंद है। हाल ही में डिज्नी+ हॉटस्टार पर विद्युत की फिल्म क्रैक रिलीज हुई थी, लेकिन इस बार वो एक फैन के रूप में लौटे हैं। वो मार्वल स्टूडियोज की लेटेस्ट ब्लॉकबस्टर के रोमांच के लिए उत्साहित हैं, जिसमें बेहतरीन ह्यूमर और प्यारा ब्रोमांस देखने को मिलेगा। उनका दिलचस्प वीडियो उनके जामवालियंस को पुकार रहा है। डिज्नी+ हॉटस्टार के सहयोग से निर्मित इस वीडियो में विद्युत अपने अंदर के एक्शन फैन के साथ फिल्म के हाई-ऑक्टेन सीक्वेंस के बारे में बता रहे हैं।

विश्व सीओपीडी दिवस 2024: बीमारी का पता शुरू में ही लगाने और उसके प्रबंधन के लिए फेफड़ों के स्वास्थ्य को समझना

भोपाल। विश्व सीओपीडी (क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिज़ीज़) दिवस 2024 के भाग के रूप में, स्वास्थ्य विशेषज्ञ इस बात पर जोर दे रहे हैं कि फेफड़े के स्वास्थ्य और कार्य को जानना महत्वपूर्ण है। यह इस साल की थीम, अपने लंग फंक्शन को जानें के क्रम में है। यह महत्वपूर्ण है फेफड़े के कार्य के परीक्षण के महत्व के बारे में बताते हुए डॉ. निशांत श्रीवास्तव, एम.डी. पल्मोनरी मेडिसिन, भोपाल ने कहा, सीओपीडी जैसी क्रोनिक श्वसन बीमारी के प्रभावी प्रबंधन और आगे की जटिलताओं को रोकने के लिए बीमारी का शुरू में ही पता चल जाना और उपचार शुरू होना महत्वपूर्ण हैं। सीओपीडी के प्रबंधन में जागरूकता की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए।

नवनीत राणा की चुनावी जनसभा में बवाल, फेंकीं गईं कुर्सियां और जमकर नारेबाजी

दरियापुर, एजेंसी।
भाजपा की पूर्व सांसद रणनीत राणा की चुनावी सभा में शनिवार को भारी हंगामा हो गया। इस दौरान भीड़ काफी उग्र नजर आई और राणा की ओर कुर्सियां फेंकने लगी। गनीमत रही कि इस हमले में वह बाल-बाल बच गईं। नवनीत राणा महाराष्ट्र के अमरावती से पूर्व सांसद हैं। जिले के दरियापुर विधानसभा क्षेत्र में वह प्रचार के लिए पहुंची थीं। युवा स्वाभिमान पार्टी के उम्मीदवार रमेश बुंदीले के समर्थन में सभा आयोजित की गई थी। इस दौरान कुछ लोग उग्र हो गए और महिला सांसद की ओर कुर्सियां फेंकने लगे। साथ ही, जमकर नारेबाजी की गई।

रिपोर्ट के मुताबिक, शनिवार देर शाम आयोजित चुनावी बैठक चल रही थी। इस दौरान किसी बात पर बहस छिड़ गई और फिर हंगामा होने लगा। मामला इस हद तक बिगड़ गया कि कार्यकर्ता एक-दूसरे पर कुर्सियां फेंकने लगे। इस घटनाक्रम का वीडियो सामने आया जो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। नवनीत राणा ने पूरी घटना को लेकर पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। वह अपने समर्थकों के साथ खल्लार पुलिस स्टेशन पहुंची थीं। पुलिस का कहना है

कि शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर लिया गया है और आगे की कार्रवाई की जा रही है। वायरल वीडियो के आधार पर आरोपियों की पहचान की जाएगी।

गौरतलब है कि पूर्व सांसद नवनीत राणा को बीते दिनों धमकी भरी चिट्ठी मिली थी। इसमें 10 करोड़ रुपये की रंगदारी मांगी गई। अधिकारी ने बताया कि मामले में पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। उन्होंने बताया कि अमरावती की पूर्व सांसद को आमिर नामक व्यक्ति ने स्पीड पोस्ट के जरिए पत्र भेजा। राणा के निजी सचिव विनोद गुहे ने अमरावती के राजापेठ पुलिस थाने में औपचारिक शिकायत दर्ज कराई है। इसमें आरोप लगाया गया है कि यह पत्र 11 अक्टूबर को राणा के आवास पर एक कर्मचारी को मिला था। शिकायतकर्ता के मुताबिक पत्र भेजने वाले ने कहा कि उसने राणा की 'सुपारी' ली है और उनका यौन उत्पीड़न करने की धमकी दी। पुलिस अधिकारी ने बताया कि पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर ली है और मामले की जांच कर रही है।

छात्रों ने टीचर की कुर्सी के नीचे रख दिया बम, रिमोट से किया धमाका; यूट्यूब से सीखा था तरीका

हिसार, एजेंसी।
हरियाणा के एक स्कूल में 12वीं कक्षा के छात्रों के एक समूह ने यूट्यूब पर बम बनाने के तरीका सीखकर बम बना दिया। इसके बाद उन्होंने शरारत करने के लिए उस बम को स्कूल की विज्ञान विषय की टीचर की कुर्सी के नीचे फिट कर दिया। उन्होंने रिमोट की मदद से बम को ब्लास्ट किया। सौभाग्य से, टीचर बाल-बाल बच गईं और उन्हें कोई चोट नहीं आई। हालांकि, इस घटना के बाद उन छात्रों को एक सप्ताह के लिए स्कूल से निलंबित कर दिया गया है।

कुछ छात्रों ने महिला टीचर से डांट खाने के बाद बदला लेने का सोचा। एक छात्र ने उनकी कुर्सी के नीचे बम जैसा पटाखा रखा, जबकि दूसरे छात्र ने रिमोट कंट्रोल के माध्यम से उसे सक्रिय कर दिया। इसके बाद यह फटा। छात्रों ने बम बनाने का तरीका यूट्यूब से सीखा था और इसे रिमोट कंट्रोल से ऑपरेट किया था।

शिक्षा विभाग की कार्रवाई: हिसार जिले के शिक्षा विभाग ने इस खतरनाक शरारत के लिए कड़ी कार्रवाई की है। सभी 13 छात्रों को एक सप्ताह के लिए निलंबित कर दिया गया है। इसके बाद शिक्षा विभाग के अधिकारी स्कूल पहुंचे और घटना की गंभीरता से जांच शुरू की। शिक्षा विभाग के अधिकारियों के अनुसार, इस घटना के बाद यह भी चर्चा हुई थी कि इन छात्रों को स्कूल से निकाल दिया जाए, लेकिन उनके माता-पिता ने माफी मांगते हुए यह लिखित बयान दिया कि वे भविष्य में इस तरह काम नहीं करेंगे।

गांव में पंचायती बैठक: इस घटना के बाद संबंधित गांव में पंचायत की बैठक भी बुलाई गई। बच्चों की इस शरारत के बारे में चर्चा की गई। पंचायत के दौरान यह जानकारी सामने आई कि कक्षा के 15 छात्रों में से 13 छात्र इसमें शामिल थे। वे इसके बारे में जानते थे। सभी छात्रों को एक सप्ताह के लिए निलंबित कर दिया गया है। यह विचार किया जा रहा है कि इस पर कोई और कार्रवाई की जाए या नहीं।जिला शिक्षा अधिकारी नरेश मेहता ने बताया कि शिक्षिका ने उन छात्रों को माफ कर दिया है। उन्होंने कहा, अगर ये बच्चे एक मॉडल बनाकर उसे प्रस्तुत करते तो हम उनका सम्मान करते, लेकिन अब यह मामला चेतावनी देने के साथ सुलझा लिया गया है। इन बच्चों ने यह सब यूट्यूब से सीखा था। इस घटना ने स्कूल प्रशासन और शिक्षा विभाग के लिए एक बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है। ऑनलाइन सामग्री का बच्चों पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ सकता है और किसे किस सीमा तक नियंत्रित किया जाना चाहिए।

ट्रंप के आते ही बदले चीन के सुर ! जिनपिंग ने बाइडेन से की आखिरी मुलाकात, चेहरे पर साफ दिखी टेंशन

बीजिंग, एजेंसी। अमेरिका में सत्ता परिवर्तन के साथ ही चीन के सुर भी बदलने लगे हैं। बाइडेन प्रशासन में हेकड़ी दिखा रहे चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति बनते ही नरमी पर उतर आए हैं। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन से शनिवार को आखिरी मुलाकात की और कहा कि ''वह अमेरिका के नए प्रशासन के साथ काम करने के लिए तैयार हैं। इस दौरान उनके चेहरे पर टेंशन साफ दिखाई दी। एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग वार्षिक शिखर सम्मेलन से इतर दोनों देशों के राष्ट्रपतियों ने मुलाकात की। चिनफिंग ने बैठक के दौरान कहा, ''चीन और अमेरिका के संबंध न केवल दोनों देशों के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि यह मानवता और भविष्य के लिए भी अहम हैं। उन्होंने कहा, ''सोच-समझ कर चयन करें। दो प्रमुख देशों के बीच बेहतर संबंध बनाने के लिए सही रास्ता तलाशें। जिनपिंग ने अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति ट्रंप का नाम लिए बिना चुनाव प्रचार के दौरान आयात के संबंध में दिए गए उनके बयान पर चिंता जाहिर की और कहा कि इससे दोनों देशों के संबंधों पर असर पड़ सकता है। चीनी राष्ट्रपति ने कहा, '' चीन, अमेरिका के नए प्रशासन के साथ सहयोग बढ़ाने और मतभेदों को दूर कर काम करने के लिए तैयार है जिससे दोनों देशों के लोगों को इसका लाभ मिल सके। जो बाइडेन ने भी अमेरिका-चीन संबंधों पर विस्तार से बातचीत की। बाइडन ने कहा, ''हम हमेशा एक-दूसरे से सहमत नहीं होते, लेकिन हमारी बातचीत हमेशा स्पष्ट रही है। बाइडेन ने कहा, ''हम दोनों के बीच हुई यह बैठक उन सभी गलत अनुमानों पर रोक लगाती है और यह सुनिश्चित करती है कि दोनों देशों के बीच प्रतिस्पर्धा संघर्ष में नहीं बदलेगी।

कनाडा: 55, 000 डाक कर्मचारी हड़ताल पर, पोस्टल सेवाएं प्रभावित

ओटावा , एजेंसी। कनाडा पोस्ट ने कहा कि राष्ट्रीय हड़ताल के दौरान उसका कामकाज बंद रहेगा। इससे लाखों कनाडाई नागरिक और देशभर के बिजनेस प्रभावित होंगे। कैनेडियन यूनियन ऑफ पोस्टल वर्कर्स (सीयूपीडब्ल्यू) के प्रतिनिधित्व वाले लगभग 55,000 डाक कर्मचारी शुक्रवार को मध्य रात्रि के बाद देशव्यापी हड़ताल पर चले गए। कनाडा पोस्ट ने शुक्रवार को एक बयान में कहा कि राष्ट्रीय हड़ताल के दौरान मेल और पार्सल वितरित नहीं किए जाएंगे और कुछ डाकघर बंद रहेंगे। बयान में कहा गया कि डाक नेटवर्क में पहले से मौजूद वस्तुओं के लिए सर्विस गारंटी प्रभावित होगी और राष्ट्रीय व्यवधान समाप्त होने तक कोई भी नई वस्तु स्वीकार नहीं की जाएगी।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, कनाडा पोस्ट ने अपने एक बयान में कहा कि परिचालन फिर से शुरू होने पर

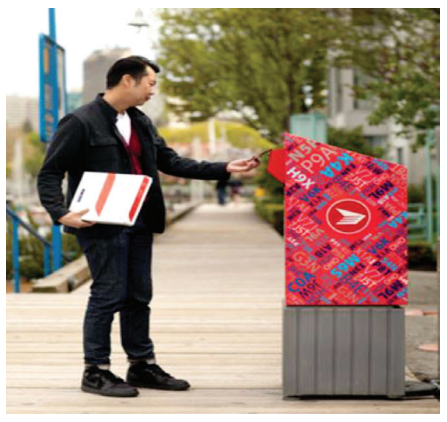

वस्तुओं को जल्दी से जल्दी लोगों तक पहुंचाया जाएगा। डाक नेटवर्क में सभी मेल और पार्सल को सुरक्षित किया जाएगा और परिचालन फिर से शुरू होने पर जल्दी ही लोगों तक पहुंचा दिया जाएगा।

बता दें कि देश भर में अपनी सुविधाएं बंद करने से कनाडा पोस्ट का पूरा राष्ट्रीय नेटवर्क प्रभावित होगा। कंपनी ने कहा कि प्रोसेसिंग और डिलीवरी को पूरी तरह से सामान्य होने में कुछ समय लग सकता है। इसे कैनेडियन यूनियन ऑफ पोस्टल वर्कर्स (सीयूपीडब्ल्यू) ने कहा कि एक वर्ष तक बातचीत के बाद भी कोई प्रगति नहीं होने पर डाक कर्मचारियों ने हड़ताल करने का कठिन निर्णय लिया। सीयूपीडब्ल्यू ने कहा कि कनाडा पोस्ट के पास इस हड़ताल को रोकने का अवसर था, लेकिन उसने डाक कर्मचारियों द्वारा रोज सामना किए जाने वाले मुद्दों के वास्तविक समाधान पर बातचीत करने से इनकार कर दिया।

सीयूपीडब्ल्यू ने कहा, हड़ताल अंतिम उपाय है। सीयूपीडब्ल्यू की उचित वेतन, सुरक्षित कार्य स्थितियां, सम्मान के साथ सेवानिवृत्त होने का अधिकार, तथा सार्वजनिक डाकघर में सेवाओं का विस्तार जैसी मांगो को लेकर हड़ताल कर रही है। सीयूपीडब्ल्यू ने कहा कि बातचीत के जरिए सामूहिक समझौते किए जा सकते हैं।

ट्रंप की नई टीम में क्रिस राइट को चुना गया ऊर्जा मंत्री

वाशिंगटन एजेंसी। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 'लिबर्टी एनर्जी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी क्रिस राइट को ऊर्जा मंत्री नामित किया है। डेनवर स्थित 'लिबर्टी एनर्जी ऊर्जा क्षेत्र की एक बड़ी कंपनी है।

राइट जलवायु परिवर्तन से निपटने के प्रयासों पर अपनी बातों को हमेशा से मुखरता से रखते आए हैं और वह जीवाश्म ईंधन को बढ़ावा दे सकता है, जिसमें बाइडन प्रशासन की ओर से प्राकृतिक गैस निर्यात की मंजूरी पर एक साल की रोक को समाप्त करने के लिए त्वरित कार्रवाई भी शामिल है। राइट को ऊर्जा मंत्रालय का प्रमुख बनाने के निर्णय का तेल एवं गैस टाइकून हेरोल्ड हैम ने भी समर्थन किया है। रिपब्लिकन पार्टी के सांसद जॉन बैरासो ने क्रिस के अनुमोदन को उचित करार दिया है। बैरासो को ऊर्जा और प्राकृतिक संसाधन समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया जा सकता है।

मैं तुमसे नहीं डरती... ब्राजील की फर्स्ट लेडी ने मस्क को कहे अपशब्द; टेस्ला के मालिक ने भी दिया जवाब

टोरंटो एजेंसी।
ब्राजील के राष्ट्रपति लूला डी सिल्वा की पत्नी जान्जा लूला डी सिल्वा ने टेस्ला के मालिक एलॉन मस्क पर विवादित टिप्पणी की है। ब्राजील की फर्स्ट लेडी ने शनिवार को जी20 के एक कार्यक्रम में एलॉन मस्क के खिलाफ अपशब्द कह दिए।

जान्जा सोशल मीडिया को नियंत्रित करने की जरूरत पर बात कर रही थी, ताकि फेक न्यूज ने फैले। इसी दौरान उन्होने एलन मस्क का जिक्र करते हुए उन्हें अपशब्द कहा।

जान्जा लूला डी सिल्वा ने मस्क को लेकर कहे अपशब्द

जब वो कार्यक्रम को संबोधित कर रहीं

थीं तब एक जहाज की आवाज सुनाई दी। उन्होंने मजाक करते हुए कहा मुझे लगता है कि यह एलॉन मस्क है। इसके बाद उन्होंने हंसते हुए कहा, मैं तुमसे नहीं डरती। फ.... यू, एलॉन मस्क। इस वीडियो पर मस्क ने प्रतिक्रिया भी दी। उन्होंने वीडियो पर एक हंसी वाली इमोजी पोस्ट की। ब्राजील में बैन हुआ था एक्स प्लेटफॉर्म बता दें कि ब्राजील ने एक्स प्लेटफॉर्म को एक महीने के लिए बैन कर दिया था। ब्राजील सरकार का कहना है कि एक्स प्लेटफॉर्म के जरिए फेक न्यूज फैलाया जा रहा है। यह देश के लोकतंत्र के लिए खतरा है।

ब्राजील की प्रथम महिला जानजा का सोशल मीडिया अकाउंट बीते साल हैक हो गया था, जिसके लिए उन्होंने सोशल मीडिया कंपनी एक्स के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की धमकी भी दी थी।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129